ॐ

कामड़ जाति का इतिहास

: शोधक व परिवर्द्धक :

डॉ. पूर्णानन्द पूर्ण पंथी

卐

: प्रेरक :

बाबा मूलदास कल्याणी

: लेखक :

ओमप्रकाश कामड़

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

ुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जोधपुर से "कामड़ जाति का इतिहास" शीर्षक ुस्तक का शीघ्र प्रकाशन किया जा रहा है।

ारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को समृद्ध बनाने में विभिन्न सामाजिक, आध्यात्मिक एवं ामुदायिक संगठनों का योगदान सुविदित है और हमारे संत सम्प्रदाय का योगदान ो महत्त्वपूर्ण है।

स सम्प्रदाय के साधकों और कलाकारों ने वाद्य विशेष का वादन कर हमारी अध्यात्म ोक परम्परा का जिस प्रकार निर्वहन किया, उसका अपना इतिहास है। यह शुभ है के अजमेर के केकड़ी निवासी श्री ओमप्रकाश कामड़ इस सम्प्रदाय के अभ्युदय से ेकर अद्यतन विकास का ज्ञान अपनी कृति के माध्यम से कराने जा रहे हैं।

ुझे विश्वास है कि यह कृति हमारी अध्यात्म दर्शन परम्परा से सरोकार रखने वाली ामड़ जाति का सर्वांगीण ज्ञान कराने वाली होगी।

ं लेखक को इस शोध पर अनुशीलन के लिए बधाई देते हुए प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

ॐ

कामड़ जाति का इतिहास

: शोधक व परिवर्द्धक :

डॉ. पूर्णानन्द पूर्ण पंथी

: प्रेरक :

बाबा मूलदास कल्याणी

: लेखक :

ओमप्रकाश कामड़

प्रकाशक–अखिल भारतीय कामड़ समाज

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन संवत् 2056 फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी सोमवार सन् 13 मार्च 2000

मूल्य 150 एक[सौ पचास रुपये मात्र

यदि करणापाटव दोष से कहीं त्रुटि रह गई हो तो बिद्वान् पाठक सुधार कर पढें तथा सूचित करें।

: प्रूफवहन कर्त्ता :

श्री मुकेश परिहार व ओमप्रकाश परिहार

कचरास, नागौर (राज.)

मुद्रक : उम्मेद प्रिन्टिग प्रेस किला रोड़, जोधपुर

आश्रम का प्रकाशन

1- उत्तम शिक्षादर्पण लेखक श्री बीजलदासजी
2- विचार प्रबोधनाटक ,, ,,
3- शब्दाकार शिरोमणि ,, ,,
4- माधव भजन सार संग्रह लेखक श्री माधोरामजी
5- पूर्णानन्द भजन प्रकाश लेखक डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपंथी
6- वेदान्त दर्शन ,, ,,
7- अनिर्वचनीय ख्यातिका आलोचनात्मक विवेचन ,,

महात्मा बीजलदासजी का जीवन परिचय

विभूतियों का अवतरण नित्य अवतार के रूप में होता है अपने वचनामृत व हितोपदेश के द्वारा अज्ञ प्राणियों का प्रयोजन सिद्ध करते हैं । डा. पूर्णानन्द पूर्णपन्थी के अनुसार महात्मा श्री श्री 108 बीजलदासजी श्री बलराम जी का जन्म संवत् 1958 वैशाख शुक्ल पक्ष बीज गुरुवार पिता श्री हीरदासजी तथा माता श्रीमती कस्तूरी के गर्भ से गांव माडपुरा जिला नागौर राजस्थान में हुआ आप जाति से कामड़ साद थे । बाल्यकाल से ही भक्तिभाव व सन्तों के पदों को सुमधुर आवाज में गाया करते थे अतः आप भी पिताजी के साथ मीरपुरखास (पाकिस्तान) आया जाया करते थें ।

आपने वि. संवत् 1978 में वैराग्य के रूप में महात्मा श्री श्री 108 स्वामी उतमरामजी से गुरुदीक्षा प्राप्त की । आपने वेदान्त दर्शन का श्री श्री 108 महात्मा आलारामजो के सान्निध्य में रहकर सांगोपांग अध्ययन किया ।

सर्व प्रथम वि. सं. 1988 में उतम शिक्षा दर्पण पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन करवा कर सर्व साधारण को सप्त व्यवसनों के बारे में अवगत कराया । वि. सं. 2007 मे विचार प्रबोध नाटक नामक पुस्तक लिखकर छपवाई । इसी वर्ष शब्दाकार शिरोमणि नामक पुस्तक

लिखी जिसे पीपाड़शहर निवासी श्री कस्तूरचन्द 'घनसार' ने शुद्ध रूप मे लिपि बद्ध किया जिसके विष्णुरामजी ने जन सहयोग से छपवाया।

महात्माजी ने हिन्दी साहित्य जगत् की श्री अभिवृद्धि करने के साथ साथ आपने निज मोक्षद्वार (बीजल आश्रम) की संस्थापना वि. सं. 1990 भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी नागौरी गेट के बाहर कागा रोड़ जोधपुर में अपने निजी निवास के रूप में की। बीजलदासजी के शिष्य प्रधान शिष्य श्री माधोरामजी हुए दूसरे शिष्य विष्णुरामजी हुए माधोरामजी के प्रधान शिष्य डा. पूर्णानन्द पूर्णपन्थीजी वर्तमान आश्रम के उतराधिकारी हैं। श्री बीजलदासजी ने अपना पार्थिव शरीर वि. सं. 2011 आषाढ शुक्लापक्ष अष्ठमी गुरुवार को त्याग कर अंमुत्र (परलोक) सिधार गये।

भूमिका

सम्पूर्ण विश्व में भारत वर्ष की प्रतिष्ठा एक आध्यात्मिक थाति या ज्योति के रूप में मानी गई है । यहाँ भगवान् शिव द्वारा रचित कपिलानी पंथ का ही कामड़ साद जाति एक वर्तमान रूप है ।

राजस्थान में कामड़ जाति के इतिहास एवं साहित्य का तो विपुल भण्डार है परन्तु इसके संग्रहण एवं प्रकाशन का समग्र कार्य आज तक सम्भव नहीं हो सकने के कारण सभी 'कामड़ साद' इसकी कमी महशूश कर रहे थे । अतः बाबा श्री मूलदास कल्याणी ने 10 वर्षों के अनवरत परिश्रम से समाज के सभी महापुरुषों की विचार धारा एकीकरण रूपी यह पुष्पाहार "कामड़ जाति का इतिहास" समाज की सेवा में अर्पित किया है ।

यद्यपि 'कामड़ साद' को गुरु या आचार्य का दर्जा परम्परा से प्राप्त है । जो राजा महाराजाओं वमठाधीशों के द्वारा कामड़ साधों के सम्मान में दिये गये प्राचीन कालीन ताम्रपत्र, पट्टे, लेख व प्रचलित कथाओं से प्रमाणित है । परन्तु इनकी समग्र जानकारी उपलब्ध नहीं होने से आज तक हमारे साद भाई अपने सम्प्रदाय की उत्पति विकास व इसके प्रसार के सम्बन्ध में अपने शिष्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के प्रति निरुत्तर थे । अतः इस

विषय में विस्तार से जानकारी देने के लिए पुस्तक को आठ अध्यायो में बांटा गया है ।

प्रथम अध्याय सृष्टि की रचना :-इसमें दैविक सृष्टि जड़ व चेतन सृष्टि, मानवीय सृष्टि के साथ ही साथ ब्रह्माण्ड के नक्षत्र व पृथ्वी की आयु व उत्पति व समय की गणना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है ।

द्वितीय अध्याय :-जाति रचना इस अध्याय में हिन्दु धर्म की विभिन्न जातियों की कल्पना व रचना उनके संस्थापक ऋषि मुनि व सिद्धो की जानकारी कामड़ शब्द व कामड़ों की उत्पति, परम्परागत कार्य व ऐतिहासिक महापुरुषों का वर्णन कामढ़ों की धूणियाँ, 84 सिद्धों की सूची जोगपट्ट वर्णन डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा. डोमिनीक्यू शीला खानका शौधफा, शिवपुराण श्रीमद् भागवत् स्कन्द पुराण हिंगुलाखण्ड डा. महेन्द्र भानावत उपासनिबारी गणेशदास भवानीदास का निवेदन पत्र अंग्रेज लेखक आर. बी. रसेल व डॉ. एस एस गहलोत विभिन्न ताम्र पत्र डा. सोनाराम विश्नोई व डा. डी बी क्षीर सागर के लेख सहित विस्तृत जानकारी दी गई है ।

तृतीय अध्याय-आद्यादेवी हिंगुलाखण्ड इस अध्याय में देवी हिंगलाज का मंत्र हिंगुल शक्ति पीठ का स्थान प्रसिद्धी का कारण लालू जसराज कापड़ी (कामड़ साध)

की राजा रामचन्द्रजी को हिगुलाज पुरसाने की कथा। नो नाथ बारह पंन्थ हिंगलाज के भजन हिंगलाज का ठूमरा व कामड़ सन्तों के द्वारा प्रचार हिंगलाज ज्योति पंथ को विस्तार पूर्वक प्रामाणिक जानकारी दी गई है। साथ शैव सम्प्रदाय के संन्यास वंक्ष वृक्ष की भी जानकारी दी गई है।

चतुर्थ अध्याय :-श्री कपिलायन खण्ड इस अध्याय में कपिल भगवान् की उत्पति तथा शैव सम्प्रदाय के कपिलानी पंथ के प्रथम आचार्य होने उनकी प्राप्त सिद्धियों, तथा शैव सम्प्रदाय में वैष्णव योग तथा सांख्य दर्शन की विस्तृत जानकारी दी गई।

पंचम अध्याय :-श्री अलख उपासना खण्ड इस अध्याय में अलख को क्यों जाने, तथा उसके निर्गुण निराकार रूप के उपासना व इसके महत्त्व के बारे में बताया गया है।

छठा अध्याय :-श्री रामदेव खण्ड इस अध्याय में कामड़ सम्प्रदाय के रक्षक व पोषक बाबा रामदेवजी द्वारा अछूतो द्वार के लिए कामड़ सन्तों का सहयोग लेने व उनकी रक्षा का वचन देने की जानकारी दी गई है।

सातवां अध्याय :-कामड़ समाज खण्ड इस अध्याय में कामड़ शब्द की परिभाषा कामड़ साधुओं की विशेषता इनकी प्राचीन धूणियाँ, तद्विषपक कथाएं तथा संन्यासी

कामड़ सन्तों के महापुरुष घरबारी होकर रहने के बाद के प्रसिद्ध स्थानों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

आठवां अध्याय :-कामड़ सन्त प्रेरणा खण्ड इस अध्याय में सम्पूर्ण राजस्थान के विभिन्न भागों में फैले कामड़ सन्तों के संगठन राजस्थान कामड़ समाज संस्थान के गठन रजिस्ट्रेशन व संस्थान के उद्देश्य कार्यकर्त्ता का वर्णन व कामड समाज के प्रेरणा स्रोत महापुरुषों की जीवनियाँ । व प्रसिद्ध स्थान समाज के उत्थान हेतु प्रेरक बाते सन्दर्भ ग्रन्थ सूची व दान दाताओं की सूची

इस प्रकार 'कामड़ जाति का इतिहास' नामक इस पुस्तक में, सगुण व निर्गुण की उपासना की कामड़ साधुओं की पद्धति व इसके परिणाम समयानुसार इसमें सुधार हेतु पंजीकृत संस्थान के माध्यम से कामड़ जाति के ही कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को सक्रिय सहयोग का अवसर प्रदान करने हेतु जानकारी दी गई है जिससे कामड़ 'साद' जाति की उन्नति व समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सके ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में कामड़ समाज की सूची में दर्शाये गये आर्थिक सहयोगकर्ता के के साथ ही साथ डॉ. पूर्णानन्द पूर्ण पन्थी सहाब, श्री बंशीदास A/S बोधानन्दजी बाबा मूलदास कल्याणी व डॉ. डोमिनीक्यू शीलाखान का अमूल्य योगदान मिला है । जिनका मैं सदैव आभारी रहूँगा ।

विषय–सूची

क्रम संख्या		पृष्ठ
1.	सृष्टि रचना वर्णन....	03
2.	शिव पुराण के अनुसार सृष्टि रचना बर्णन...	05
3.	ब्रह्मा जन्म....	08
4.	ज्ञान प्राप्ति....	10
5.	ब्रह्मा विष्णु को उपदेश...	13
6.	सृष्टि रचना व पृथ्वी की आयु का बर्णन....	16
7.	ब्रह्माण्ड व सौर परिवार....	19
8.	नक्षत्र और चन्द्रमास....	24
9.	ऋषि मुनि व सिद्ध कामड़ साधुओं की उत्पत्ति शिवपुराण रुद्र संहिता के अनुसार....	30
10.	मनु की सृष्टि का वर्णन	34
11.	कामड़ साधों का ऐतिहासिक विवेचन....	38
12.	कामड़ शब्द उत्पत्ति....	39
13.	कामड़ों के परम्परागत कार्य...	40
14.	भारत वर्ष में जाति वाद का ऐतिहासिक वि.	41
15.	श्री कृष्णानन्द कामड़ मु. पो. बस्सी महाराज की...	54
16.	वि. सं. 1982 में उप्रास रियासत जयपुर नि. गणेशदास भवानीदास का व्याख्यान प्रकाशित...	56
17.	अंग्रेज लेखक रसेल के अनुसार कामड़ साधु	

हिंगलाजमाता व बाबा रामदेव के पूजारी... 59
18. हिंगुला खण्ड ... 65
19, लालू जसराज कापड़ी द्वारा हिंगलाज.... 66
20. नौ नाथों के नाम.. . 69
21. हिंगलाज के भजन.... 71
22. हिंगलाज की आरती.... 72
23. आदनाथ गणपतजी.... 73
24. हिंगलाज का ठूमरा ... 75
25. हिंगलाज पूजन विधि 84
26. नाथ सम्प्रदाय के 12 पंथों का विवरण... 89
27. दस नाम संन्यास का वृक्ष.... 90
28. वन की चार मंडी.... 93
29. श्री कपिलायन खण्ड ... 94
30. रामदेव खण्ड.... 107
31. कामड़ शब्द परिभाषा.... 113
32. मालाणी धूणी का वर्णन.... 119
33. हरचंदाणीधूणी, रामदेवबाणी नाथाणी.... 120
34. सांकरडा राछेटीधूणी का परिचय.... 127
35. अलखजी का अडाणा की धूणी का परिचय....
133
37. कुचोली की धूणी का परिचय... 135
38. केलवा धूणी का परिचय ... 140
39. कटालिया की धूणी का परिचय 150

40. कामड़ सन्त प्रेरणा खण्ड ... 152
41. ब्राह्मण्या के नाम संदेश .. 161
42. कामड़ समाज-महासमुद्र.... 166
43. जीवित समाधियाँ... 173
44. जुंजाला चौकी का वर्णन . 179
45. ओमप्रकाश पंवार.... 202
46. बाबूदास, सरपंच.... 208
47. पुस्तक प्रकाशक में दानदाताओं की सूची 223
48. समाज विकास हेतु प्रेरक बातें.... 228
49. श्री मूलदासजी की जीवनी.... 245

डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपंथी का भावोद्गार

आज मुझे अपार खुशी है कि 'कामड़ जाति का इतिहास' नामक पुस्तक आप के कर कमलों में सुशोभित है इतिहास समाज का दर्पण होता है। इतिहास की परिभाषा- इति = पूर्व घटनाएँ, ह = स्पष्ट, आस = कहना, कथन करना अर्थात् पूर्व घटनाओं का स्पष्ट रूप से कहने वाला ग्रन्थ या शास्त्र इतिहास होता है।

इस महान् कार्य को सम्पन्न करने में समाज के प्रबुद्ध व विद्वान् तथा दानदाताओं ने जो अथक प्रयास व निष्ठा तथा सच्ची लगन से योगदान दिया उनमें प्रमुख श्री रामचन्द्रदास गुसाई, श्री मूलदासजी कल्याणी श्री ओम प्रकाशजी कामड़, श्री बंशीदासजी सांवता इन सब को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं। एक निवेदन है कि पुस्तक प्रकाशन में भरपूर ध्यान दिया गया है फिर भी कहीं 'प्रेसक्रेक्शन' निकालने की असावधानी से कोई त्रुटि रह गई हो तो विद्वान् लोग सुधार कर पढें।

भवदीय डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपंथी
बीजल आश्रम नागौरी गेट जोधपुर
☎ STD 0291 548241

डॉ पूर्णानन्द पूर्णपंथी, जोधपुर

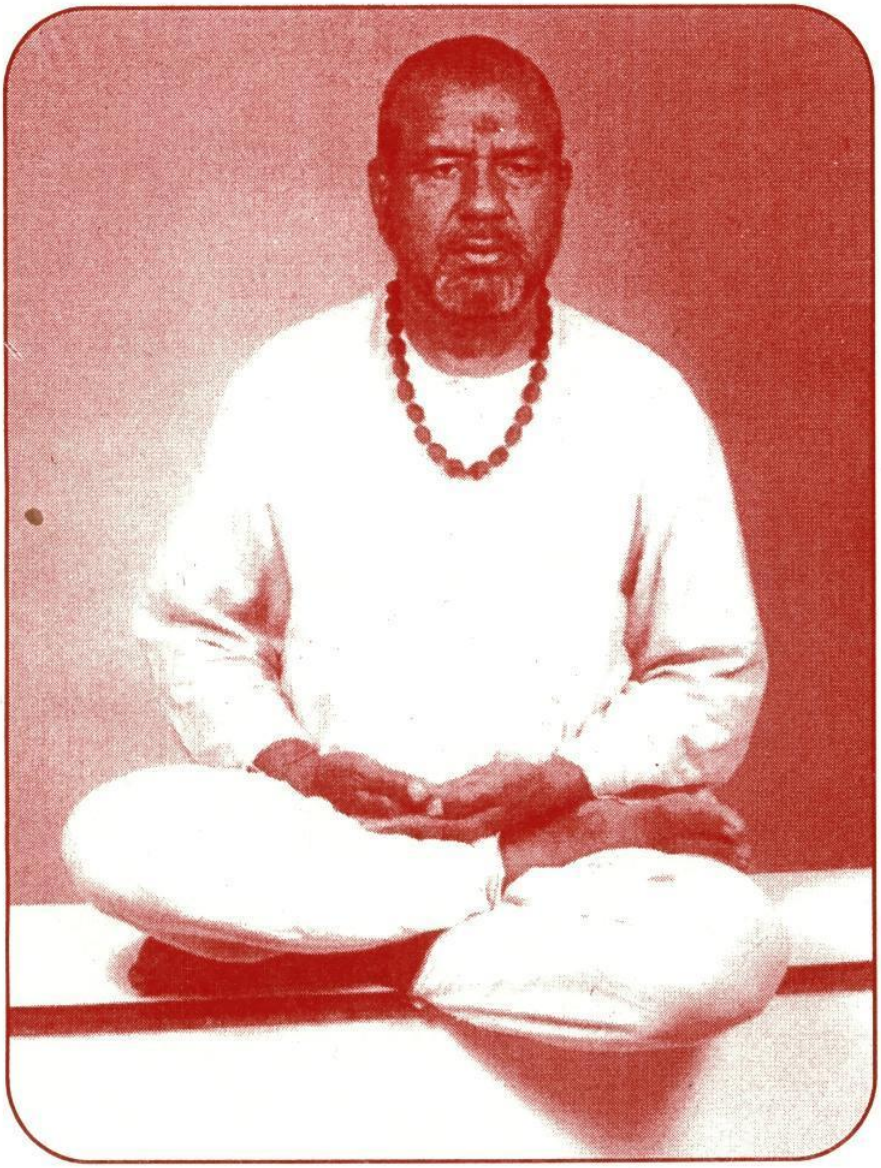

श्री रामचन्द्र (बाबो भलीकरे रामदेवरा)

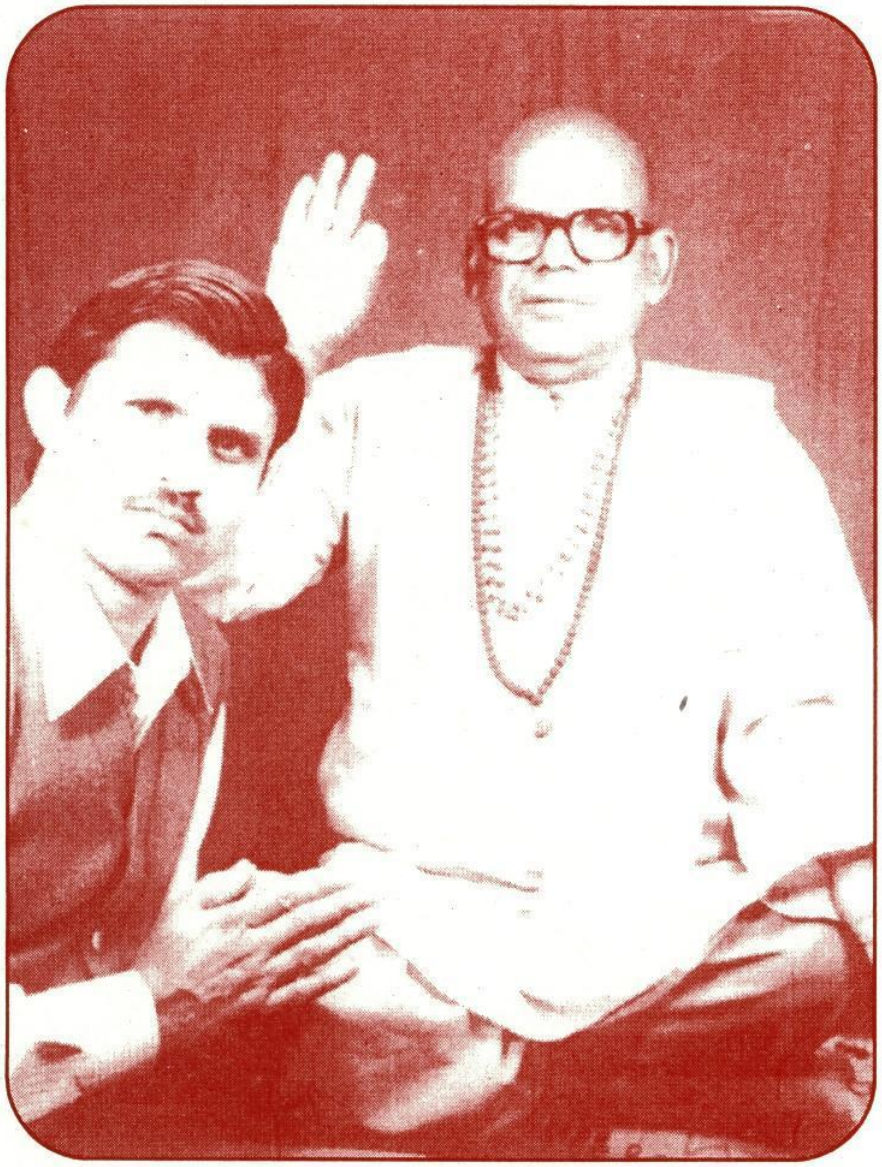

गुरु मूलदासजी (बर) व शिष्य ओमप्रकाश (केकड़ी)

श्री बोधानन्दजी व ज्ञानप्रकाश सांवता

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ अलख पुरुषाय नमः श्री हिंगलाज देव्यै नमः

कामड़ जाति का इतिहास

ॐ सदा आदि

नमस्ते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय 1
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येसु सर्वदा ।2।
या कुन्देन्दु तुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता ।
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्मासना
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैःसदा वन्दिता
सामां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ।3।
चैतन्यंशाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम् ।
नाद विन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः ।4।
सर्व श्रुति शिरोरत्न विराजित पदाम्बुजम् ।
वेदान्ताम्बुजमार्तण्डं तस्मै श्री गुरवे नमः ।5।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।6।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुदेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।7।
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरोर्पदम् ।

मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरो कृपा ।8।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।9।
अखण्डानन्द बोधाय, शिष्य संताप हारिणे ।
सच्चिदानन्द रूपाय रामाय गुरवे नमः ।10।
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञान मूर्ति ।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं, तत्वमस्यादि लक्ष्यं ।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वाधि साक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं, सद्गुरुं तं नमामि ।11।
कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भूजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।12।
वसुदेव सुतं देवं, कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं ।13।
नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ।
पाणौमहासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।14।
मनोजवं मारुत तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये ।15।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुः च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।16।
शान्ताकारं भुजग शयनं पदमनाभं सुरेशं ।

विश्वाधारं गगन सदृशं मेघ वर्णं शुभांगं ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्व लोकैकनाथं ।17।
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यंयोगिनो ।
यस्यान्तन्न विदुः सुरासुर गणाः देवाय तस्मै नमः ।18।

अध्याय 1

सृष्टि रचना वर्णन

वेदान्त के अनुसार सृष्टि वर्णन–

सामवेद में सृष्टि रचना के बारे में एक मंत्र आता है। "एकोहं बहुस्याम" उपाधि रहित, अनादि अनन्त, विकार रहित शुद्ध चेतन। शुद्ध सतोगुणी माया में आया हुआ चेतन का प्रतिबिम्ब माया विशिष्ट चेतन ईश्वर कहलाया। मलिन सतोगुणी अविद्या में आया हुआ चेतन का प्रतिबिम्ब जीव कहलाता है जिसको दूसरी भाषा में अन्तःकरण विशिष्ट चिदाभास भी कहते हैं। इस प्रकार से शुद्ध चेतन उपाधि रहित, ईश्वर चेतन माया सहित, जीव चेतन अविद्या सहित, अन्तःकरण विशिष्ट

उपाधि सहित प्रमाता चेतन, वृत्ति विशिष्ट प्रमाण चेतन वस्तु विशिष्ट प्रमेय चेतन, वस्तु का ज्ञान प्रमा चेतन एक शुद्ध चेतन है वही उपाधि रहित है तथा बहुस्याम चेतन उपाधि सहित है।

सन्त वाणी के अनुसार

प्रश्न-है वो एक प्रथम एक था बहुस्याम किम गाया।
बहुत हुआ सो कारण क्या है यही भ्रम घट छाया ?
उत्तर-जैसे बीज में अंकुर तरु शाखा पत्र फूल फल छाया।
ऐसे ही अलख से खलक भया अगम निगम यू गाया ।।

प्रश्न-चेतन को इच्छा नहीं जड से कुछ नहीं होय।
कहो जगत् कैसे रचा अचरज आवे मोय ?
उत्तर-चेतन कुछ नहीं कर सके बिना माया सम्बन्ध।
माया के सम्बन्ध से रची सृष्टि गोविन्द ।।

कुण्डलिया-ब्रह्म माया सम्बन्ध से जगत् रच्यो कई बार
तू है जूं को त्यूं आत्मा, सबको जाननहार
सबको जाननहार निजानन्द अज अविनाशी
भरा ब्रह्म दरियाव ज्ञान बिन मिटे न पासी
बोधानन्द यूं कहत है सत की पकड़ो सार
ब्रह्म माया सम्बन्ध से जगत् रच्यो कई बार

ब्रह्म माया सम्बन्ध जोव ईश भेद ये छः वस्तुएँ अनादि हैं
जिसमें ब्रह्म चेतन अनादि अनन्त है
पांच चीजें शान्त अनादि हैं ।
स्वयं पुरुष पुरुष से प्रकृति, प्रकृति से मूल माया
माया से महतत्व त्रिगुण खोल कहूँ निर्दाया महतत्व
मह तत्व से आकाश, आकाश से वायु, वायु से तेज,
तेज से पृथ्वी, पृथ्वी से खलक समाया ।

उपरोक्त सृष्टि रचना वेदान्त के अनुसार मानी गई है जिसमें चेतन का बिवर्त वाद है और माया का परिणाम वाद ।। विवर्त वादयानि अपने अपने रूप को न बदलकर दूसरा रूप दिखाना । परिणाम वाद अपने रूप को बदलकर दूसरा रूप दिखाना बताया गया है ।

शिवपुराण के अनुसार सृष्टि रचना वर्णन

रुद्र संहिता

छठवाँ अध्याय

महाप्रलय के समय में जब सृष्टि का पूर्ण विनाश हो गया

था, स्थावर जंगम, सूर्य, चन्द्र, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश सब कुछ शून्य हो गया था, तब केवल शिवतत्व ही शेष था मन वाणी से परे इन्द्रियों के विषय से रहित सत्य, ज्ञान और अनन्त स्वरूप शिवतत्व है। उससे शक्ति प्रकट हुई, वही प्रकृति है। बडी शक्ति अम्बिका, सम्पूर्ण लोकों की ईश्वरी, जगज्जननी, त्रिदेवों की माता, नित्य और मूल कारण कही गई है। जिसकी आठ भुजायें हैं और जो शुभा है। सदाशिव ने उसी शक्ति को साथ लेकर शिवलोक नामक क्षेत्र की रचना की जो परम मोक्ष प्रदायिनी और सर्वोत्तम है, उसे काशी कहते हैं। भगवान् शिव पार्वती शक्ति सहित यहाँ निवास करते हैं। यह क्षेत्र प्रलय काल में भी शिव-पार्वती से रहित नहीं होता, इसलिये उसे अविमुक्त कहते हैं। शिवजी ने यहाँ एक आनन्दवन बनाया था और वहाँ शिवा-शिव अनन्त काल तक रमण करते रहे। कालान्तर में उन्हें एक पुरुष के निर्माण की इच्छा हुई। उन्होंने सोचा कि इस आनन्दवन का भार किसी दूसरे पुरुष को देकर शांति से काशी में शयन करें। इस प्रकार विचार करके इस क्षेत्र के दक्षिण के दसवें अंश में सुधारूप आसव का व्यापार किया जिससे एक परम सुन्दर पुरुष का आविर्भाव हुआ। यह पुरुष अत्यन्त सौन्दर्य युक्त प्रतिभावान् और विविध गुणों से सम्पन्न था। उस दिव्य पुरुष ने प्रकट होकर भगवान् शिव को सादर अभिवादन करते हुए उनसे अपना नाम और

काम कहने के लिए कहा। तब भगवान् शिव हँसकर बोले कि सर्वत्र जगत् में व्यापक होने के कारण तुम्हारा विष्णु नाम प्रसिद्ध होगा, वैसे भक्तों को प्रिय तुम्हारे और भी बहुत से नाम होंगे। इसके बाद भगवान् शिव ने विष्णु को दृढ़ता के साथ तप करने के लिए कहा, साथ ही वेदों को भी प्रदान किया। भगवान् शिव के आदेशानुसार विष्णुजी ने बारह हजार वर्ष तक दीर्घ तप किया, पर अभी तक परम कल्याणकारी भगवान् शिव के दर्शन नहीं प्राप्त हो सके थे, उनकी चिन्ता को समझकर शिवजी ने यह आकाशवाणी की कि तुम अपने संशय को दूर करने के लिये और तप करो। तदनुसार विष्णु ने पुनः बहुत काल तक कठिन तप किया। शिवजी की माया से विष्णु के शरीर से अनेक प्रकार की जल धारायें निकली वह सब जल शून्य में व्याप्त होकर ब्रह्मरूप हो गया, जिनके स्पर्श से पाप ताप नष्ट होते हैं। विष्णुजी को इससे अतीव प्रसन्नता हुई और और वे थक कर स्वय उस जल पर सो गए। उसी समय उनका श्रुति सम्मत नारायण नाम पड़ा। उस समय प्रकृति पुरुष के अभाव में कुछ नहीं था, इसलिये उनसे सब तत्वों की उत्पत्ति हुई बाद में उनका बिस्तार हुआ। पहले प्रकृति से तीन गुण (सत्त्व, रज, तम) उत्पन्न हुए। पुनः उससे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध उत्पन्न हुए। उसके पश्चात् पंच महाभूत पृथ्वी, जल, वायु अग्नि और आकाश

प्रकट हुए । उससे ज्ञानेन्द्रियाँ नेत्र, नाक्, कान, जिह्वा और त्वचा और कर्मेन्द्रियाँ वाणी, हाथ, पैर, गुदा और उपस्थ प्रकट हुई ।

सातवाँ अध्याय

(ब्रह्मा जन्म)

जन्मा जब मैं कमल परागा । ज्ञान हीन तब रहा अभागा ।।

भगवान् श्री नारायण के शयन करने पर शिवजी की इच्छा से उनकी नाभि में से एक विशाल कमल उत्पन्न हुआ जिसका विस्तार अनन्त योजन का था । इसी समय पार्वती सहित शिवजी ने ब्रह्मा को उत्पन्न किया, हिरण्य कमल से प्रकट हुआ, क्योंकि कमल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देखा, उस समय कुछ भी ज्ञान नहीं था कि मैं कौन हूँ और मुझे किसने उत्पन्न किया है । उसी समय कुछ चेतना प्राप्त हुई और मैं अपने सृष्टिकारक को ढूँढने लगा हे मुनिवर ! कहाँ तक कहूँ, एक एक नाल को पकड़ कर सौ वर्ष तक नीचे को चला किन्तु कमल की जड़ नहीं मिल सकी । फिर कमल के ऊपर आते हुए कमल की एक कली मिली, वहाँ मुझे तप करने की प्रेरणा हुई । इस मंगलमय प्रेरणा से मेरा मोह दूर हुआ, ज्ञान का

प्रकाश मिला और मैं अपने पिता के दर्शन की अभिलाषा से तप करने लगा। बारह वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात् परम अभिराम भगवान् विष्णु प्रकट हुए। उन्हें देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ पर शिवजी की माया से मोहित होने के कारण उन्हें अपना पिता जानकर उनसे पूछा कि तुम कौन हो? भगवान् विष्णु आशीर्वचन देते हुए बोले कि तुम निर्भय रहो, मैं तुम्हारी समस्त कामनाओं को पूर्ण करूँगा। ब्रह्माजी बोले हे देवर्षि भगवान् विष्णु के वे वचन सुनकर मैंने कहा कि तुम मेरे साथ शिष्य जैसा व्यवहार करते हो क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं साक्षात् सृष्टि का कर्ता, प्रकृति का प्रवर्तक और जगत् के संहार का कारण हूँ। वेद मुझे स्वयम्भू, स्वराट्, परमेष्टी और श्रेष्ठ कहते हैं। हे नारदजी, मेरे ऐसा कहने पर भगवान् विष्णु मेरे ऊपर कुछ क्रोधित से होकर कहने लगे-मैं जानता हूँ कि तुम सृष्टिकारण हो, लेकिन तुम्हारी उत्पत्ति मेरे ही अविनाशी शरीर से ही तो हुई है, मेरी नाभि से ही तुम उत्पन्न हुए हो, किन्तु माया से मोहित होने के कारण तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है। मैं ही सब देवों का ईश्वर हूँ, सबका कर्ता, भरता, हरता एक मात्र मैं ही हूँ, सर्वत्र व्यापक, सर्वनियन्ता, परब्रह्म और परमतत्व हूँ। सम्पूर्ण चराचर जगत् मुझ में स्थित है। तुम मेरी शरण में आवो, सब तरह से तुम्हारा हित होगा। भगवान्

विष्णु के ये वचन ब्रह्माजी को नहीं भाये । यह क्रोधित होकर बोले कि तुम कौन हो ? व्यर्थ की बातें न करो । तुम ईश्वर नहीं हो, यह झूठ है । अवश्य ही तुम्हारा भी कोई कर्ता होगा । शिवजी की माया के अन्धकार से मैं मोहित हो रहा था, उचित अनुचित का कोई ज्ञान नहीं रह गया था जो मैंने भगवान् विष्णु से इस प्रकार अनुचित वाद-विवाद का संघर्ष उत्पन्न कर दिया । इसी बीच भगवान् शिव का लिंग प्रकट हुआ, हम दोनों ने उस देव को प्रणाम कर अपना संघर्ष बन्द किया और विनय पूर्वक प्रार्थना की कि-हे महाप्रभु ! कृपा कर शीघ्र ही आप हमें अपने वास्तविक रूप का दर्शन दें ।

आठवाँ अध्याय

ज्ञान प्राप्ति

युद्ध छोडकर जव हुये हम दौनो निर्द्वन्द्व ।
शिवकृपा को पाय कर हुये तभी सानन्द ।।

मुनिश्रेष्ठ नारदजी से ब्रह्माजी पुनः बोले–हम दौनों का गर्व दूर हो गया । तब महाप्रभू शिवजी की परम वाणी सुनाई दी । "ॐ ॐ" । मैं इस महानाद का अर्थ नहीं समझ सका, उसी समय परम श्रेष्ठ विष्णुजी ने इस लिंग में दक्षिण भाग में

सनातन आद्य वर्ण अकार को और उसके उत्तर भाग में उकार को देखा। फिर मकार को मध्य में और अन्त में ॐ को देखा जो सभी सूर्य और चन्द्र मण्डल की भाँति स्थित थे और जिसके आदि अन्त और मध्य का कुछ भी पता न था सत्य आनन्द और अमृत स्वरूप परब्रह्म परायण ही दृष्टिगोचर हो रहा था। परन्तु यह यहाँ कहाँ प्रकट हुआ है, इस अग्नि सदृश को हम परीक्षा करें और इसके नीचे की ओर जाकर देखें। हम उस वेद शब्द से उभय वेशवाले विश्वात्मा का विचार कर ही रहे थे कि उसी समय एक परम ऋषि का आविर्भाव हो गया। विष्णुजी ने उस ऋषि से पूछा और समझ कर एक दूसरे ब्रह्म शरीरी शिवजी का ज्ञान प्राप्त किया कि जो अचिन्तनीय, वाणी से अप्राप्त, मन को अगम और केवल एक ही अक्षर ओंकार से ही जाना जा सकता है। वही एकाक्षर रूप ऋत (सत्य) परम कारण, सत्य, आनन्द, अमृत, परमेश्वर और परब्रह्म है। और उसी एकाक्षर उकार से हरि (विष्णु) परम कारण है। फिर उसी मकार से नील-लोहित महादेवजी है। परन्तु सबका दृष्टि-कर्ता अकार ही है। उकार मोहन करने वाला है और मकार तो नित्य ही अनुग्रहकर्ता है। मकार विभु और बीजी है एवं अकार बीज है। ऐसे ही उकार रूप प्रधान पुरुष ईश्वर हरि योनि अर्थात् कारण है और बीजी बीज के लिंग से अकार जो

उकार रूप योनि में गिरकर चारों ओर बढने लगा। उससे सोने का अवेद्य अर्थात् न जानने योग्य और अलक्षण अर्थात् लक्षण से रहित एक अण्ड उत्पन्न हुआ जो बहुत वर्षों तक जल में स्थित रहा और हजार वर्ष के बाद भगवान् ने इसके दो भाग किये जब जल में स्थित इस अण्ड को ईश्वर ने व्याघात कर दो भाग किया तब इसका सुवर्णमय एक कपाल ऊपर स्थित हुआ जिससे द्यु अर्थात् स्वर्गलोक प्रकट हुआ और कपाल के नीचे के भाग से पाँच तत्त्वों वाली पृथ्वी प्रकट हुई। फिर उस अण्ड के ककार नामक चार भुजा वाले भव अर्थात् शंकर प्रकट हुए जो सब लोकों के रचयिता और वही तीन रूपधारी प्रभु। इसी कारण यजुर्वेदीय इनको "ओं ओं" ऐसा कहते हैं। यजु के वचन सुन ऋक् और साम ने भी सादर "हे हरे, हे ब्रह्मन्" कहा। तब इस प्रकार इन देवेश को यथा योग्य जान-कर सबने उत्पन्न मन्त्रों से महादेव की स्तुति करना आरम्भ किया और उसी समय से विश्व लोक पालक भगवान् विष्णु मेरे साथ ही उस एक सुन्दर रूप को देखने लगे जिसके पाँच मुख, दस भुजा, कपूर के समान गौर वर्ण, परमकान्तिमान, अनेक भूषणों से भूषित, महान् उदार, महावीर्यवान् और महा-पुरुषों के लक्षणों से युक्त थे और जिन्हें देखकर हरि कृतार्थ हो गये। तब तक परमेश्वर महेश भगवान् प्रसन्न होकर अपने दिव्य शब्दमय रूप से विथत हो गये। जिन अगुण गुणात्मा का

शब्दमय रूप देखकर मैं भी बहुत प्रसन्न हुआ। फिर हम दौनों ने उन्हें नमस्कार किया। तदनन्तर उन्हीं से सुन्दर अड़तीस अक्षरों वाला वह मन्त्र प्रकट हुआ कि जो बुद्धिदायक और धर्म अर्थ का साधक है उसे गायत्री चारों कालों में उत्तम और पंच-शित "ॐ" नमः" आठ कलाओं से युक्त है जिससे अभिचार अर्थात् मारण आदि कर्म होते हैं और जिसकी उत्पत्ति श्वेत और शांतिदायक तथा संहार का भी कारण है। सब में अक्षरों की भिन्न-भिन्न न्यूनाधिक क्रम संख्या होती है। उस श्रेष्ठ मन्त्र के कुल इकसठ वर्ण हैं। फिर मृत्युञ्जयमन्त्र है जिसमें "ॐ जूसः" अथवा "त्रयम्बकं यजामहे" इत्यादि कहा जाता है। इसके साथ ही पंचाक्षर मन्त्र है जिस में केवल "नमः शिवाय" मन्त्र और "क्ष म्यो" चिन्तामणि मन्त्र और दक्षिणा मूर्ति मन्त्र उत्पन्न हुआ। पश्चात् शिव का महावाक्य "तत्त्वमसि" नामक मन्त्र हुआ। इन पाँचों मन्त्रों को विष्णुजी ने ग्रहण कर जपना आरम्भ किया फिर ऋक्, यजु, साम सहित मैंने और विष्णु ने उन वरदायक साम्ब शिव ईश्वर की प्रसन्नचित्त से स्तुति करना आरम्भ किया।

नवाँ अध्याय

ब्रह्मा विष्णु को उपदेश

ब्रह्माजी बोले—विष्णु की स्तुति से प्रसन्न हो महेश्वर प्रकट

हो गये । उनके पाँच मुख तीन नेत्र थे और जिनके ललाट पर चन्द्रमा शिर पर जटा विराजमान थी और जो गौरवर्ण. विशाल नेत्र, सर्वांग भस्म लपेटे, दश भुजा वाले, नीलकंठ, सब भूषणों से भूषित, सर्वांग सुन्दर, मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड लगाये हुये थे । तब उन करुणाकर महेश ने अपनी श्वास से मुझ और विष्णुजी के लिए वेदों का ज्ञान दे दिया । फिर विष्णुजी ने पूछा कि–हे देव । आप किस प्रकार प्रसन्न होते हैं तथा किस प्रकार मैं आपकी पूजा और ध्यान करूँ । यह सुनकर महादेवजी बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि हे श्रेष्ठ देवों । मैं तुम दोनों की भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हूँ । किसी बात की चिन्ता न करना । मेरा लिंग सदा पूज्य और त्याग करने योग्य है । जैसे मैं इस समय लिंग रूप से पूजित हुआ और तुम लोगों का दुःख दूर हुआ इसी प्रकार दुःखी प्राणी मुझे लिंग रूप से पूजकर अपना दुःख दूर कर सकते हैं । मैं अनेक प्रकार के फलों और सब मनोरथों को देने वाला हूँ । तुम दोनो ही मेरे दाँये बाये अंग से उत्पन्न हुए हो । मैं तुम दोनो पर प्रसन्न हूँ । अब तुम मेरी पार्थिव मूर्ति बनाकर मेरी सेवा करो । इससे तुम्हे सुख प्राप्त होगा । अब मेरी आज्ञा है कि तुम और ब्रह्मा चराचर का पालन करो । तुमने जो मेरी बहुत स्तुति की और युद्ध के समय जो रक्षा हेतु ब्रह्माजी ने मेरी स्तुति की, मैं उसे सत्य

करूँगा, क्योंकि मैं भक्त वत्सल हूँ। तुम्हारे अंग से जो मेरा रूप प्रकट होगा वह रुद्र कहलायेगा और मेरा अंग होने से सामर्थ्य में वह न्यून भी न होगा। जो मैं हूँ वही वह है और हम दोनों ही पूजा में भी कोई भेद न होगा मेरा वही शिव रूप जैसा है वैसा ही रुद्र रूप भी होगा। शिव और रुद्र भी भेद नहीं समझना चाहिये। हाँ, कहीं कार्य में भेद हो सकता है पर कारण में नहीं। यही तो क्या मैं, आप, ब्रह्मा और रुद्र सब एक ही है। इनमें जो भेद मानेगा उसको बंधन होगा। हे ब्रह्मन्। अब मैं एक और गुप्त बात कहता हूँ। सुनो। तुम दोनों, प्रकृति से अपनी इच्छा से ही ब्रह्मा की भौहों से उत्पन्न हुए हो। परन्तु मैं सनातन शिवरूप, मूलभूत, सत्य, ज्ञान और अनन्त ही हूँ। इन तत्वों में जानकर सर्वदा मन से मेरा ध्यान करना योग्य है और रुद्र में प्रकृति का तामसी गुण जानना चाहिये। क्योंकि वह वैकारिक है। परन्तु वास्तव में वह तामसी नहीं है। अतएव हे ब्रह्मन् अब तुमको यह करना चाहिये कि तुम सृष्टि के कर्ता बनो और हरि भगवान सृष्टि के पालक बनें और यह जो मेरा अंश रुद्र का है यह लय करने वाला होगा तथा यह जो उमा नाम वाली परमेश्वरी प्रकृति देवी है उसी की शक्ति वाग्देवी अर्थात् सरस्वती ब्रह्माजी की अर्द्धार्डिनी होगी और एक जो दूसरी शक्ति प्रकृति से उत्पन्न होगी वह लक्ष्मी रूप से सर्वदा विष्णु के आश्रय में रहेगी और

वही कभी काली के नाम से मेरे अंश को प्राप्त होगी और कार्य सिद्धि के लिये यह ज्योति से प्रकट होगी और दोनों देवियाँ परम मंगलमय शक्तियाँ कहलायेगी जिनका कार्य होगा क्रमशः सृष्टि, स्थिति और संहार ।

सृष्टि रचना व पृथ्वी की आयु का वर्णन–

सृष्टि रचना व पृथ्वी की आयु के बारे में जानने की ईच्छा मनुष्य में प्रारम्भ से रही है । सृष्टि रचना की जानकारी हमें पौराणिक ग्रन्थों, श्रुति स्मृतियों द्वारा तथा वैज्ञानिक खोज द्वारा होती है । महाप्रलय से पृथ्वी कई बार नष्ट हुई है तथा कई बार इसका निर्माण हुआ है । वर्तमान पृथ्वी की आयु के बारे में वैज्ञानिक शोध द्वारा आयु का निर्णय इस प्रकार किया गया है ।

पृथ्वी की आयु–

इस सदी के अन्त में हुए भूविज्ञान के विकास के साथ अलग-अलग वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर पृथ्वी की आयु की गणना की गई है ।

लवणता के आधार पर–

सन् 1899 ई. में जोन जोली नामक वैज्ञानिक ने सर्व-

प्रथम पृथ्वी की वास्तविक आयु का वैज्ञानिक पता लगाया उन्होंने महासागरों के पानी में व्याप्त खारेपन (लवणता) को अपनी गणना का आधार बनाया। ऐसा माना गया कि प्रारम्भ में समुद्र का जल मीठा था तथा धीरे-धीरे उसमें खारापन नदियों द्वारा लाये नमक से आता गया। जोली ने विभिन्न नदियों द्वारा समुद्र में प्रतिवर्ष लाये जाने वाले नमक की मात्रा की गणना करते हुए अनुमान व्यक्त किया कि पृथ्वी की आयु 9 से 10 करोड़ वर्ष है।

पृथ्वी के ठण्डी होने की दर के आधार पर–

पृथ्वी अपनी उत्पत्ति के समय आग के एक विशालकाय गोले के समान थी। ऐसा माना गया है कि पृथ्वी पर प्रारम्भिक तापमान 3900 डिग्री सेन्टीग्रेड था और शनैः शनैः ठण्डी होकर पृथ्वी की सतह वर्तमान स्थिति में पहुंची है। केल्वीन नामक वैज्ञानिक ने पृथ्वी के ठण्डी होने की दर तथा प्रारम्भिक तापमान की गणना करते हुए यह अनुमान व्यक्त किया है कि पृथ्वी की उम्र संभवतः 10 करोड़ वर्ष है।

विकासीय प्रक्रम के आधार पर–

पृथ्वी पर जीवन का विकास एक दम से नहीं हुआ

है । पृथ्वी पर सबसे पहले एक कोशिय जीवों का उद्‌भव हुआ तथा फिर शनैः शनैः बिकासी प्रक्रम के विभिन्न चरणों में बहुकोशीय जीवों की उत्पत्ति होती रही तथा मानव इस क्रम में सबसे बिकसित जीव बना । जीवों के इस विकासीय प्रक्रम के प्रमाण हमें जिवाश्मों के रूप में प्राप्त होते हैं । इसी जैविक विकास को अपनी गणनाओं का आधार बनाते हुए जीव वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की उम्र 100 करोड़ वर्ष बताई ।

रेडियो एक्टिव विधि द्वारा आयु गणना–

रेडियो एक्टिवता की खोज के बाद वैज्ञानिक शोध में एक नई दिशा प्राप्त हुई तथा पृथ्वी की उम्र ज्ञात करने के सन्दर्भ में नवीनतम तथा एक से प्रामाणिक गणनाएँ इसकी मदद से की गई । रेडियो एक्टिव विधिका मुख्य सिद्धान्त यह है कि रेडियों एक्टिव तत्व धीरे-धीरे क्षय होकर स्थायी तत्वों में बदल जाते हैं तथा यह क्षय क्रिया एक निश्चित दर से होती रहती हैं रेडियो एक्टिव क्षय को सामान्यतः अर्द्ध आयु के रूप में व्यक्त किया जाता है रेडियो एक्टिव विधि द्वारा आयु की गणनाओं में प्रायः क्षय होने की दर तथा अर्द्ध आयु को ज्ञात किया जाता है । भू-वैज्ञानिकों ने रेडियो एक्टिव विधि द्वारा

पृथ्वी की आयु 450 करोड़ वर्ष ज्ञात की है ।

इस प्रकार आज से कुछ वर्षों पूर्व हमारी पृथ्वी कितनी पुरानी है यह एक वाद-विवाद का विषय था तथा वैज्ञानिक इस पर अपने अलग-अलग मत व्यक्त करते थे (रेडियो एक्टिव) की खोज के बाद से वैज्ञानिकों को पृथ्वी की वास्तविक आयु को जानने के लिए नई दिशा मिली है और आज यह प्रायः सर्वमान्य तथ्य है कि हमारी पृथ्वी लगभग 450 करोड़ वर्ष पुरानी है ।

ब्रह्माण्ड व सौर परिवार–

आकाश में अवस्थित असंख्य ताराओं के 27 समूहों को अश्विणी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरादि 27 नक्षत्रों के नाम से जाना जाता है । यदि अश्विनी नक्षत्र के अर्न्तगत पडने वाले तारा समूहों काल्पनिक रेखाओं से मिलायेगें तो अश्व मुख की आकृति बनेगी । इसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्रों के अर्न्तगत पडने वाली ताराओं की काल्पनिक रेखाओं से मिलायेगें तो अलग-अलग आकृतियाँ बनेगी, जैसे भरणी की योनि, कृतिका की क्षुर (तेज धार का अस्त्र) या चिंगारी, रोहिणी की गाडी मृगशिरा की मृगादि आकृति बनती है ।

प्रत्येक नक्षत्र के अर्न्तगत पडने वाले तारा समूहों का भू-वासियों पर सीधा प्रभाव (Direct Effect) पडता है और जो नैसर्गिक गुण उन तारा समूहों के होते हैं। वे सभी उनमें दृष्टिगोचर होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र की अपनी विशेषता होती है जो व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन में क्रियाशील होने को प्रेरित करती है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक नक्षत्र होता है जिसमें उसका जन्म होता है। व्यक्ति का नक्षत्र के जिस चरण में जन्म होता है। उसके चरणाक्षर के अनुरूप उसका जन्म नाम रखा जाता है।

नक्षत्र क्या हैं ?

रात्रि को घटा विहीन नीले आकाश को देखने पर उसमें असंख्य तारे टिमटिमातें हुये दिखाई पडते हैं। सभी तारे दिन में रहते हैं किन्तु सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं पडते हैं। इन असंख्य तारों को ध्यान से देखने पर दो प्रकार के तारे दिखाई देते हैं। एक तो वे जो तारे दीपक की लो की तरह घटते बढते (टिमटिमाते) रहते हैं। इन्हें तारा (Star) कहते हैं। जो कि स्वतः प्रकाशवान होते हैं। दूसरे प्रकार के तारे वे हैं जिनका

प्रकाश एक सा रहता है । वे टिमटिमाते नहीं हैं अर्थात् इनका प्रकाश घटता बढता नहीं है । इनको ग्रह (Planet) कहते हैं जो कि स्वयं प्रकाशवान न होकर सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं ।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है यद्यपि देखने में प्रतीत होता है कि सूर्य चल रहा है । पृथ्वी की तरह मंगल, बुध, गुरु और शनि आदि ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं । या आकाश में सूर्य जिस मार्ग से भ्रमण करता हुआ प्रतीत है उसे क्रान्तिवृत (Eclipti) कहते हैं । यह क्रान्तिवृत गोल नहीं है । अपितु अण्डाकार है । क्रान्तिवृत के दोनो और 9-9 अंश का एक कल्पित पट्टा है जिसे क्रांति प्रदेश या भचक्र कहते (Zodic) है । वस्तुतः स्पष्ट है कि 18 अंश के चौडे पट्टे के भीतर क्रान्तिवृत पर समस्त गृह परिक्रमा करते हैं । भचक्र का आदि या अन्त नहीं है । लेकिन नापने के लिये आरम्भ बिन्दू नियत किया जाता है । इस आरम्भ बिन्दू से भचक्र के 27 समान विभाग किए जाए तो 27 नक्षत्र होते हैं और यदि 12 समान विभाग किये जाये तो बारह राशियाँ बनती हैं । क्रांतिवृत के केन्द्र पर चार समकोण के कारण 360 अंशो के कोण बनते हैं इसलिये क्रांतिवृत भी 360

अंशो का होता है । इन 360 अंशो को 27 बराबर विभागों में बांटा जाय तो एक विभाग 13 अंश 20 कला (एक विभाग) के चार विभाग किये जाये तो एक विभाग में 3 अंश 20 कला का होता है । एक नक्षत्र में 13 अंश 20 कला के क्षेत्र में पडने वाले विशिष्ट तारा पुंज को नक्षत्र के नाम से जाना जाता है । तथा 3 अंश 20 कला के चार चरण एक नक्षत्र में होते हैं । 360 अंश के कांति वृत में इस प्रकार के 27 नक्षत्र होते हैं जिनमें अपने विशिष्ट नाम है और इस क्षेत्र में पडने वाले तारा समूहों को परस्पर काल्पनिक रेखाओं से मिलाने पर एक विशेष आकृति बनती है जिससे इन नक्षत्रों को पहचाना जाता है ।

प्रत्येक नक्षत्र की अपनी विशेषता और महत्व होता है । नक्षत्र का स्वामी गृह जीवन में अधिक प्रभावशाली होता है । भारतीय ज्योतिष में राशि का निर्धारण नक्षत्र चरणानुसार किया जाता है और नक्षत्र चरणाक्षर के अनुरूप जन्म नाम रखा जाता है । जन्म कुण्डली विशोत्तरी दशा की गणना और चन्द्र स्पष्ट का आधार भी नक्षत्र है । नक्षत्र 27 है जिनके भारतीय अंग्रेजी और फारसी नाम है–

1	Beta Arietis	अश्विनी	भरणी
2	41 Arietis	भरणी	वर्तानि
3	Etatauri Alcyone-2	कृत्तिका	सुरेंथा
4	Aldebaran	रोहिणी	दवरा
5	Lambda Orionis	मृगशिरा	हकुआ
6	Gamma Geminorum	आर्द्रा	हनझा
7	Beta Geminorium	पुनर्वसु	झिरा
8	Delta Cancri	पुस्य	नखरा
9	Zeta Hydare	आश्लेषा	तुर्फा
10	Regulus/Roleonis	मघा	जवहा
11	Delta Leonis	पूर्वा फाल्गुनी	जाहेरा
12	Denebala	उत्तरा फाल्गुनी	सफा
13	Delta Corvi	हस्त	अवा
14	Virginis Spica	चित्रा	ससाक
15	Alpha Bootis Arcturus	स्वाति	गफरा
16	Alpha Librae	विशाखा	झवा
17	Delta Scorpii	अनुराधा	अकली
18	Antares	ज्येष्ठा	कल्ब
19	Lambada Scorpi	मूला	सोला
20	Delta Sagittarii	पूर्वाषाढा	नक्षा
21	Sigma Sagittarii	उत्तरषाढा	वलदा
22	Alpho Aquila Aliair	श्रवण	वला

23	Beta Delphini	धनिष्ठा	सोऊद
24	Lambada Aquarii	शतभिषा	अखवा
25	Beta Pagasi Markab	पूर्वा भाद्रपद	मुकई
26	Gamma Pegasi Algenib	उत्तरा भाद्रपद	मुअख
27	Zetu Piscium	रेवती	रिशा
28	Vega	अभिजित	भावे

टिप्पणी–

नक्षत्र 27 है इनके अतिरिक्त एक नक्षत्र अभिजित भी माना जाता है। 27 नक्षत्रों के क्रम में इसकी गणना नहीं होती है। क्योंकि यह नक्षत्र क्रांति-प्रदेश से बाहर है। उत्तराषाढा नक्षत्र क्रांति-प्रदेश से बाहर है। उत्तराषाढा नक्षत्र के चतुर्थ चरण की अन्तिम 15 पंक्तियां और श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण की 4 घंटियाँ, इस प्रकार 19 घंटियों के मान वाला अभिजित (Vega) नक्षत्र होता है।

नक्षत्र और चन्द्रमास–

प्रत्येक मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है उसी के अनुरूप भारतीय मास का नामकरण किया जाता है। नक्षत्र और चन्द्रमास का परस्पर अटूट

सम्बन्ध है तभी तो प्रत्येक मास पूर्णिमा को एक नक्षत्र विशेष की पुनरावृति होती है। इस प्रकार चैत्र मास में चन्द्रमा, चित्रा, वैशाखा मास में विशाखा ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठा, आषाढ मास में उत्तराषाढा, श्रावण मास में श्रावण, भाद्रपद में पूर्वा भाद्रपद, आश्विन मास में अश्विनी, मार्गशीर्ष मास में मृगशिरा, कार्तिक मास में कृतिका, पोष मास में पुष्य, माघ मास में मघा और फाल्गुन मास में पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में रहता है।

टिप्पणी–

कभी-कभी पूर्णिमा को यह नक्षत्र नहीं होता अर्थात् इन नक्षत्रों के अतिरिक्त एक नक्षत्र अगला या पिछला हो सकता है। प्रायः ऊपर लिखे अनुसार ही पूर्णिमा को नक्षत्र मिलते हैं। आकाश में दिखाई देने वाले तारे प्रति-दिन 4 मिनट पूर्व उसी स्थान पर दिखाई देते हैं। इस प्रकार दो दिन में 8 मिनट पूर्व तीन दिन में 12 मिनट पहले इनकी स्थिति (जगह) वही होती है तथा इस प्रकार एक वर्ष बाद पुनः अपनी उसी स्थिति पर आ जाता है।

हमारी आकाशगंगा–

रात्रि के खुले आकाश में देखने पर दूध की नदी का सा तारों का समूह दिखाई देता है जिसे आकाश गंगा कहते हैं। हमारा सौर मण्डल इसी आकाश गंगा का सदस्य हैं तथा अन्तरिक्ष में ऐसी करोड़ों आकाश गंगाएँ है। हमारी इस आकाश गंगा में प्रतिदिन सूर्य से भी करोड़ों गुना अधिक चमकीली कौंध दृष्टिगोचर होती है जिसके रहस्य का वैज्ञानिकों ने पता लगाया है।

सृष्टि का समय जानने के लिए समय की संज्ञा निरूपण–

आंख की पलक गिरने के समय का नाम निमेष है। 18 निमेष की काष्ठा होती है 30 काष्ठा की एक कला 30 कला का एक मुहूर्त 30 मुहूर्त का एक दिन रात होता है। सूर्य, मनुष्य व देव सम्बन्धी रात दिन का विभाग करता है। मनुष्य के एक मास का एक रात्रिदिन दितरों की होता है। उसमें कृष्णपक्ष दिन कर्म करने के लिए व शुक्ल पक्ष रात्रि शयन करने के लिए होता है। मनुष्यों के एक वर्ष में देवताओं का रात्रि दिवस होता है फिर उसका विभाग यह है कि उतरायण दिन है व दक्षिणायन रात्रि है सूर्य की परिक्रमा पृथ्वी एक वर्ष में

करती है । उत्तरायण में प्रकाश की वृद्धि से देव दिन व दक्षिणायन प्रकाश की घटती से देव रात्रि मानी है ।

मनुष्य के 360 वर्ष का देव वर्ष ऐसे चार हजार वर्ष को कृतयुग कहते है और उसकी सन्ध्या युग का पूर्वकाल 400 वर्ष का होता है और सन्ध्यांश और सन्यांश मिलकर 4800 देव वर्ष की होता है । अन्य तीन त्रेता द्वापर कलि की संध्या और सध्यांश के साथ जो संख्या होती है वह क्रम से सहस्त्र में की है और शत में है

जैसे–

क्रम सं.	नाम युग	देव वर्ष	मानव वर्ष
1	कृतयुग	4800	1728000
2	त्रेतायुग	3600	1296000
3	द्वापर	2400	864000
4	कलियुग	1200	442000
	एक महायुग	12000	4320000

एक देव वर्ष बराबर 360 मानव वर्ष

यह जो प्रथम गिनाये इन्हीं चार युगों को 12000 गुणा करके देवयुग कहाता है । देव सहस्त्र युगों की ब्रह्मा

का एक दिन और सहस्त्र युगों की रात्रि अर्थात् देव दो सहस्त्र युग होने से ब्रह्मा की रात्रिदिन होता है देव 12000 वर्ष की एक युग इसे 1000 से गुणा करने पर 32000000 मानुष वर्षो की ब्रह्मा का दिन और इतनी ही रात्रि हुई सहस्त्र युग से अन्त अर्थात् समाप्ति है। ब्रह्मा की रात्रि के बाद ब्रह्मा सोते से जागृत होती है और जागकर संकल्प विकल्पात्मक मन को उत्पन्न करता है परमात्मा की रचने की इच्छा से प्रेरित हुआ मन सृष्टि को विकृत करता है मनस्तत्व से आकाश तत्व उत्पन्न होता है उसके गुण को शब्द कहते हैं आकाश के विकार से सब गन्ध को ले चलने वाला पवित्र बलवान वायु उत्पन्न होता है वह स्पर्श गुण बलि होता है। वायु के विकार से तम का नाश करने वाला प्रकाशित चमकीला अग्नि उत्पन्न होता है उसका गुण रूप है। अग्नि के विकार से जल उत्पन्न होता है जिसका गुण रस है और जल से पृथ्वी जिसका गुण गन्ध है प्रथम से सृष्टि का यही क्रम है।

पूर्व जो बारह सहस्त्र वर्ष का देवयुग कहा था एसे 71 युग का एक मन्वन्तर होता है मन्वन्तर असंख्य है सृष्टि संहार और प्रलय भी असंख्य है इनको प्रजापति क्रिडावत् बिना श्रम के करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ मनुस्मृति ले. तुलसीराम स्वामी
सम्वत् 1969 स्वामी मशीन यन्त्रालय मेरठ

स्मृतियों के मतानुसार सृष्टि उत्पत्ति का एक ब्रह्मा दिन माना जाता है जो । हजार चतुर्यगो का होता है 71 चतुर्यगो का 1 मन्वन्तर 14 मन्वन्तरों का एक कल्प जो कि 1 ब्रह्मा का दिन और इतने ही काल को एक ब्रह्मा रात्रि होती है ।

वर्तमान में "श्वेतवाराह कल्प" की सातवां वैवस्ह मन्वन्तर चल रहा है । इस मन्वन्तर का 28 वां कलियुग चल रहा है तथा कलियुग के 5100 वां वर्ष बीतने जा रहा है तथा 426900 वर्ष बाकी है। इस प्रकार वर्तमान सृष्टि सं. 1955885000 है इसकी कल्पना की गई है ।

अन्य मजहबों के संवत् इस प्रकार है–

चीनी पहले राजा से	96002509
ईरानी पहले सम्राट से	189970
शालिवाहन	1921
हजरत मोहम्मद सं.	5099
इब्राहीमी सम्वत्	3920

मूसवी सम्वत् हजरत मूसा से	3572
युधिष्डर सं.	5099
दाउदी सं.	3024
रूमी सम्वत्	2752
सिकन्दर सं.	2353
विक्रम सं.	2056
ईश्वी सं.	2000
मुहम्मदी सं.	1419
हिजरी सं.	1407

सृष्टि की कुल आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है। जिसको कल्प माना जाता है।

[प्रथम अध्याय समाप्त]

[अध्याय दूसरा]

ऋषि मुनि व सिद्ध कामड़ साधुओं की उत्पति शिव पुराण रुद्र संहिता के अनुसार

ब्रह्माजी बोले इसके पश्चात् शब्दादि पंचभूतों द्वारा पच्चीकरण करके उनसे स्थूल आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी, पर्वत, समुद्र, वृक्षादिक और कालादि से युग पर्यन्त कालों की भी मैंने रचना की तथा और भी सृष्टि के बहुत से पदार्थों को मैंने रचा। परन्तु जब इससे भी मुझे सन्तोष नहीं हुआ तो मैंने अम्बा सहित शिवजी का

ध्यान कर सृष्टि के अन्य पदार्थों की रचना की और अपने नेत्रों से मरीचि को, हृदय से भृगु को, शिर से अंगिरा को और कान से मुनि श्रेष्ठ पुलय को, उदर से पुलस्त्य को, समान से वशिष्ठ को, आंख से क्रतु को, कानों से अत्रिको, प्राण से दक्षको और गोदी से तुम नारद को और अपनी छाया से कर्दम मुनि को उत्पन्न किया। साथ ही सब साधनाओं का भी साधन धर्म को भी मैंने अपने संकल्प से उत्पन्न किया तब में कृतार्थ हुआ। फिर मैंने अपना दो रूप किया। मैं आधे से नारी और आधे से पुरुष हुआ, जिसमें परम साधक पुरुष स्वायम्भुव मनु और शतरूपा नामवाली योगिनी एवं तपस्विनी वह नारी हुई कि जिस परम सुन्दरी को ग्रहण कर मनु ने विवाह की विधि से मैथुन द्वारा सृष्टि को उत्पन्न किया। तब उससे मनुजी ने प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र तथा आकुति, देवहूति और प्रसूति नामक तीन कन्यायें उत्पन्न की और आकुति को रूचिनामक मुनि को और देवहूति को कर्दम मुनि को दिया तथा उत्तानपाद की छोटी बहन प्रसूति को दक्ष प्रजापति को दिया जिसकी सन्तानों से चराचर जगत् भर गया। फिर आकुति के रूचि द्वारा दक्षिणा युक्त यज्ञ और यज्ञ के दक्षिणा में

बारह पुत्र उत्पन्न हुए। फिर देवहूति के कर्दम मुनि से बहुत पुत्र उत्पन्न हुए और इधर दक्ष के चौबीस कन्यायें उत्पन्न हुई जिनमें से दक्ष ने श्रद्धा-आदिक तेरह कन्याओं को धर्म को दिया जिनके नाम ये है श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तृष्टि, पुष्टि, मेघा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वसु, शान्ति, सिद्धि और कीर्ति। फिर इनसे छोटीं ग्यारह कन्याओं ख्याति, सत्पूथ, संभूति, स्मृति प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुरूपा, उर्जा, स्वाहा और स्वधा को क्रमशः भृगु, भव मरीचि, अंगिरा, मुनि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, वशिष्ठ, वहिन और पितर इनको दिया, जिनकी सन्तानों से त्रिलोकी भर गई। फिर तो शिवजी की आज्ञा से प्राणियों के कर्मानुसार असंख्य जातियों की उत्पत्ति हुई और जिसमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हुए। कल्प भेद से दक्ष के साठ कन्याओं की भी उत्पत्ति कही गई है और जिनकी सन्तानों से पाताल से लेकर सत्यलोक तक यह चराचर जगत् व्याप्त हो गया तथा कुछ भी शून्य न रहा। इस प्रकार शिवजी की आज्ञा से ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की। सदा शिव ने त्रिशूल के अग्रभाग से सती की रक्षा की जिन्हें सर्व व्यापी विष्णु ने अपने प्रभाव से पहले ही निर्माण किया था और फिर जो दक्षजी से लोक कल्याण

के लिये ही प्रकट हुई थी। इस प्रकार शिवजी ने भक्तों के उदार के लिए बहुत सी लीलायें की जिनका बाम अंग वैकुण्ठ और दक्षिण अंग मैं हूँ। इस प्रकार मैं विष्णु और रूद्र यह तीन गुण इधर प्रधान हुए और उधर इसी प्रकार सत, रज और तम तीन गुणों से जिनका मैं स्वयं प्रधान हूँ उसमें से रजोगुण वाली सुरादेवी तथा सतोगुण वाली सती और तमोगुण वाली लक्ष्मी प्रकट हुई। सती के परा और शिव [उम] ये तीन रुप है, जिनमें यही शिवा सती के रुप में शंकर के साथ ब्याही गई और पिता के यज्ञ में शरीर त्यागकर नारद से अपने पदको प्राप्त हुई। फिर पार्वती होकर तप करके शिवजी को मिली जिनके कालिका, चण्डिका, भद्रा, चामुण्डा, विजया, जया, जयन्ती, भद्रकाली, दुर्गा, भगवती, कामाख्या, कामदा, अम्बा, मृडानी और सर्व मांगलिक भुक्ति मुक्ति दायक नाम हुए। फिर तो यह तीनों गुणमयी देवियों और गुणमय तीनों देवताओं ने मिलकर अनेकों प्रकार की उत्तम सृष्टि की। हे मुनिसत्तम। इस प्रकार तुम्हारे लिये मैंने सृष्टि का प्रकार कहा। शिवजी की आज्ञा से मैं ही इस ब्रह्माण्ड का रचियता हूँ।

सत्रहवां अध्याय

[मनु की सृष्टि का वर्णन]

शतरूपा नारी महा स्वायम्भुव नर श्रेष्ठ ।
ये कारण नर सृष्टि के ज्ञान पूजा जगयेष्ठ ।।

वायु बोले–हे ऋषियों । महेश्वरजी की कृपा द्वारा परम शक्ति पाकर मैथुन सृष्टि की रचना के लिये ब्रह्माजी ने आधे शरीर से तो शतरूपा नामक नारी उत्पन्न की और आधे से स्वायम्भुवन ामक मनु पुरुष पैदा किया । उसी शतरूपा कन्या ने कठिन तपस्या द्वारा परम यशस्वी मनुजी को प्रतिरूप में पाया । इन दोनों ने मिलकर मैथुन द्वारा प्रियव्रत उत्तानपाद नामक दो श्रेष्ठ पुत्र आकुति, देवहूति, प्रसूति नाम की तीन कन्याएँ पैदा की । स्वायम्भुव मनुजी ने दक्ष को प्रसूति विवाह दी और आकुति प्रजापति रूचि ने विवाह दी । रूचि द्वारा आकुति से यज्ञ पुरुष तथा दक्षिण नामक दो युगस पुत्र पैदा हुए । प्रसूति से दक्ष प्रजापति ने श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तृष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, सिद्धि, कीर्ति, ख्याति सती सम्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुसूया, उर्जा, स्वाहा, स्वधा नामों वासी चौबीस

कन्यायें पैदा की। इनमें से श्रद्धा आदि तेरह कन्यायें धर्म के साथ ब्याही गई। ख्याति आदि दश भृगु रुद्र, मरीचि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, अत्रि, वशिष्ठ एवं अग्नि के साथ ब्याही गई। बाकी ऊर्जा आदि तीन पितरों को समर्पित हुई। धर्म ने श्रद्धा आदि तेरह पत्नियां पाकर उनसे काम से लेकर यश तक तेरह सुखोन्तर पुत्र पैदा किये। अधर्म ने हिंसा नामक पत्नी से अधर्म लक्ष्मण वाण दुःखोन्तर निकृति आदि पुत्र पैदा किये। यह सब के सब नियमहीन, स्त्री संतति रहित, धर्म विनाशक सिद्ध हुए। पक्ष प्रजापतिजी की पुत्री सतीजी ने रुद्रदेव को पति पाकर अपने पिता के यज्ञ में पति का अपमान न सहन कर पिता–माता आदि कुटुम्बियों की निंदा करके योगाग्नि में अपना शरीर भस्म कर दिया। फिर मैना द्वारा हिमाचल की पुत्री हुई, उमा नाम हुआ। कठिन तपस्य द्वारा भगवान को फिर पति रूप में प्राप्त किया भृग ऋषि ने ख्याति नामक पत्नी से लक्ष्मी एवं मन्वन्तरधारी धाता विधाता नामक दो पुत्र पैदा किये। उन दोनों पुत्रों ने तो सैकडो हजारों पुत्र पैदा कर दिये। वे सब के सब स्वायम्भुव मन्वन्तर में भार्गव वंशीय कहलाये। मारीच ऋषि ने स्मृति पत्नी से चार कन्याओं के साथ पौर्णमास पुत्र पैदा किया। इसका वंश बहुत

बढा । इसी वंश में वश्यप ऋषि हुए । स्वभूति नामक पत्नी से अंगिरा ऋषि ने आग्नींध्र तथा शरभ दो पुत्र और चार कन्यायें पैदा की । हजारों पुत्र तथा नातियों वाले यह सब हुए । प्रीति नामक पत्नि से पुलस्त्यने दन्त अग्निपुत्र पैदा किया जो स्वायम्भुव मन्वन्तर में प्रथम जन्म में विख्यात अगस्त्य ऋषि हुये । उनकी सभी सन्तान पौलस्त्य कहलायी । क्षमी नामक पत्नी से कर्दम ने, आसुरि एवं सहिष्णु पैदा किये ये त्रैताग्नि जैसे तेजस्वी हुए । इनका वंश भी बहुत बढा । सन्नति नामक पत्नी से ऋतुके बाल खिल्यादि साठ हजार पुत्र हुए ये सब के सब ब्रह्मचारी सूर्य नारायण को चारों ओर घेरे रहते है । अनुसुइया पत्नी से अत्रि ऋषि ने सत्य नेत्र, हव्य, आपोमूर्ति, शनेश्चर तथा सोम इस प्रकार पांच पुत्र पैदा किये श्रुति नामक एक कन्या भी पैदा की । इसी से शंख नामक पुत्र हुए, जो कि ऋषि थे । स्वायम्भुव मन्वन्तर में अत्रि पुत्रों के बहुत से हजारों पुत्र, नाती हुए । वसिष्ठजी ने अपनी पत्नी से पुण्डरीक, रज, गात्र उर्ध्वबाहु सबन, अनय, सुतया एवं शत्रु नामक सात पुत्र पैदा किये । ये सप्त ऋषि हुए इनके नाम द्वारा इनकी सन्ताने के गौत्र प्रसिद्ध हुए । वसिष्ठ पुत्रों की स्वायम्भुव मन्वन्तर में सैकडों अरब संख्या में सन्तानें हुई । हे मुनियों ये सब

मैंने ऋषि सृष्टि का वर्णन किया है। अब दूसरों की सृष्टि का वर्णन करता हूँ। ब्रह्माजी के मानस पुत्र रुद्र रूप जो अग्नि हुए उन्होंने अपनी स्वाहा पत्नी से पावक, पवमान, शुचि इन नामों के तीन पुत्र पैदा किये। पवमान मन्थन की अग्नि है, पावक विद्युत की अग्नि है और सूर्य की अग्नि शुचि कहलाती है। हव्यवाह कव्यवाह एवं सहरक्षा इन तीनों अग्नियों के क्रमशः देवता पितर एवं असुर संज्ञक पुत्र पैदा हुए। इन्हीं के उनंचास पुत्र हुए। यह तो नित्य नैमित्तिक एवं काम्य इन तीनों कर्मों में स्थित है रुद्रस्वरूप एवं रुद्रपरायण है। तभी तो अग्नि में होमित पदार्थ रुद्र को प्राप्त होता है। हे मुनियों! यह भी मैंने आपको संक्षेप में कह सुनाया। अब पितृ वंश सुनिये। बसन्त आदि छहों ऋषि पितरों के स्थान है। गृहस्थ लोगों के दो प्रकार के पितर होते है। अयज्वान, अग्नि स्वान्त एवं यज्वान ये तो बर्हिषद है। स्वधा नामक पत्नी द्वारा अग्नि स्वान्त पितरों ने जगत् प्रसिद्ध मैना तथा वर्हिषद पितरों ने धारणी नामक कन्या पैदा अग्नि स्वान्त पितरों ने मैना को हिमाचल से व्याहा मैना द्वारा हिमाचल ने मैनाक व क्रौंच नामक दो पुत्र तथा रुद्र पत्नी उमा एवं परमपावनी गंगा पैदा की। बर्हिषद ने धारण कन्या मेरू को ब्याह दी। धारिणी ने तो सुन्दर-सुन्दर

गुफाओं वाले तथा दिव्य औषिध वाले मन्दराचल पुत्र को पैदा किया। भगवान् रुद्र के शाप से दक्ष प्रजापति भी चाक्षुष मन्वन्तर में इनके पुत्र हुए। वायु बोले–इस प्रकार धर्म आदि वंश का विस्तार मैंने कह सुनाया। यह तो संक्षेप से कहा गया पूरा वर्णन तो सैकडों वर्षो तक भी असम्भव है।

कामड़ साधों का ऐतिहासिक विवेचन

कामड़ों की उत्पत्ति–

शिव वंशज शिव शक्ति सम्प्रदाय के उपासक प्रचारक सिद्धों से कामड़ों की उत्पत्ति हुई है। प्राचीन काल में वैदिक धर्म के कर्मकाण्ड और ब्राह्म आचार जन सामान्य के समझ से बाहर की बात थी। जन सामान्य को सत्य को जानने व जीवन के रहस्य को बताने के लिए अपभ्रंश व प्राकृत भाषा द्वरा मनुष्य के अन्त मन व [घट] शरीर में सिद्धों ने इसका रहस्योद्घाटन किया व लोक भाषा में वाणी या पद्य गायन व नृत्य द्वारा इसमें आकर्षण उत्पन्न किया जिसका प्रसार जोगी व जंगम ने किया सिद्ध लोग साधना द्वारा अलौकिक सिद्धियां प्राप्त चमत्कार पूर्ण व अति प्राकृतिक शक्तियों से युक्त व्यक्ति सिद्ध कहलाते थे। इनमें 84 सिद्ध प्रसिद्ध हुए। सिद्धों के महायानी सिद्ध व

नाथों के कपिलानी व कापालिक नाथ गुरु अति प्राचीन-काल में तम्बरु शिवगण नाम से जाने जाते हैं। बाद में तेरह ताली कामड़िया। शिवजी के 18 पंथ व गोरखनाथजी के 12 पंथ आपस में कलह किया करते थे। गोरखनाथजी ने शिवजी के 12 पंथों को नष्ट कर 6 पंथ अपने और मिलाकर नये 12 पथों की स्थापना की इनमें कपिलानी पंथ से भी कामड़ साधुओं की उत्पत्ति मानी गई है। जिसके मुख्य आचार्य कपिल भगवान् विष्णु के अवतार थे। इस प्रकार शिवपंथ के वैष्णव योग होने से इनके उपासकों के नाम के साथ दास शब्द भी लगा है तथा अलख के चरण की पूजा को मान्यता दी गई है। कामड़ पर्यायवाची शब्द : प्राचीन काल में कामड़ का कर्म करने वालों को देश काल व परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग समय व स्थान पर इतिहास व पुराण आदि में निम्नलिखित नाम से सम्बोधन किया गया है। तबरू, तालजंघ जंगम तेरहताली, कपिली संन्यासी कापड़ी कामड़ कामड़िया पीर पण्ड़ा साधु बाबाजी सिद्ध साधु महाराज आदि इनमें गौत्र शामिल नहीं है।

कामड़ शब्द उत्पत्ति–

कामड़ शब्द का निर्माण डॉ. सोहनदान चारण की

पुस्तक राजस्थानी साहित्य की सैद्धान्तिक विवेचन के पेज सं. 279 के अनुसार कामड शब्द काम्बड़ का विकृत रूप है। काम्बड शब्द में मूल शब्द अम्ब है जिससे कम्बड़ शब्द से "अम्ब" से पूर्व "का" उपसर्ग लगा जिससे काबं बना जिसका अर्थ हरे वृक्ष की ताजी छड़ी [स्त्री संज्ञा] इसे पुरुष संज्ञा बनाने हेतु ड़ का प्रत्यय लगा है। इस प्रकार मूल शब्द अंब यानि मां से कामड़ शब्द की उत्पत्ति है। शास्त्रों में अम्बा के मत के प्रचारक के रूप में काम्बड़ शब्द की उत्पत्ति हुई है और परम्परा से हिंगलाज माता के मत कपिलानी नाथ पंथ के प्रचारक के रूप में लिखा गया है तथा कपिली संन्यासी नाम से जाना गया है।

कामड़ों के परम्परागत कार्य–

जैसा कि हरेक जाति का नामकरण उनके कार्य के अनुसार किया गया है जो अलग-अलग स्थान, देश, समय व अज्ञान के कारण इनमें अन्तर व बदलाव पारा जाता है इनका सम्बन्ध अम्बा या शक्ति के उपासक व प्रचारक के रूप में शास्त्र सिद्ध है तबरू, तालजंघ, तेरहताली के कार्य ये लोग शिवशक्ति की कथा में आदिकाल से दक्ष माने जाते हैं पितृ तर्पण जलपिण्ड की क्रिया द्वारा जीवों

की मुक्ति के कार्य करते हैं तथा तेरह ताल नृत्य द्वारा शक्ति पूजा व उपासना करते हैं इन्हें अम्बा का गण कहा गया है व केवल शिव उपासी नाम के साथ नाथ लगाते हैं कपिलानी नाथ कापडी बाबा शिव कथा के साथ-साथ अन्य पौराणिक कथा व विष्णु भगवान् के चरण की पूजा व नाम के साथ दास लगाते हैं जीव ब्रह्म की एकता द्वारा अलख की उपासना करते हैं कामड साधु पण्डा रामदेवजी शिवजी विष्णु आदि के मन्दिर पूजा व कथा कीर्तन का कार्य करते हैं। पीर व सिद्ध रियासत काल में राजपूतों या बादशाहों द्वारा इनके चमत्कार या सिद्धि से प्रभावित होकर भेंट की गई भू सम्पत्ति के स्वामी होते हैं।

भारत वर्ष में जाति वाद का ऐतिहासिक विवेचन–

प्राचीन काल में मनुष्य के गुण धर्म के अनुसार भारत वर्ष में चार वर्ण माने जाते थे अर्थात् एक ब्राह्मण गुण कर्म से शूद्र बन जाता और एक शूद्र अपने को ब्राह्मण बना सकता था, इन चारों वर्णों में ब्राह्मण का कार्य वेद विद्या अध्ययन अध्यापन आदि क्षेत्रिय का कार्य युद्धकला में पारंगत होकर प्रजा की रक्षा करना था वैश्य का कार्य व्यापार आदि व शूद्र का कार्य इन सबकी सेवा करना था।

चीनी यात्री हुयेन सांग के भारत भ्रमण के समय ईस्वी सन् 630-645 तक चार वर्ण ही थे।

बौद्ध काल [ई. सन् से पूर्व 300 से 500] में जन्म सम्बन्धी जाति और सामाजिक निमय नहीं माने जाते थे। आगे चलकर ज्यों-ज्यों बोद्धमत का लोप होता गया लोगों ने हिन्दू पौराणिक मत स्वीकार करना आरम्भ किया तब से अनेक जातियों व उपजातियों का बनना आरम्भ होता गया।

गुप्तों के राज्यकाल [8 वीं शताब्दी] में वैदिक धर्म में बड़ी उथल पुथल हो गई थी और वैदिक सिद्धान्त भी लुप्त होकर पौराणिक रस्में जारी हो गई थीं। इस काल में अनेक स्मृतियाँ बनी जिनमें इन जातियों की मनमानी उत्पत्ति लिखी गई। जैसे ब्राह्मण पिता और शूद्र माता से निषाद अनुलोम प्रतिलोम विवाहों की परम्परा से कई उपजातियाँ बनी हुई बताई गई हैं। इन्हीं जातियों व उपजातियों के देश भेद धर्म भेद, कार्य भेद अविद्या आदि कई कारणों से इन चार वर्णो के स्थान पर लगभग 18000 जातियाँ हो गई हैं।

त्रेतायुग और द्वापरयुग की सन्धि के समय परशुराम

जी के पिता जमदग्नि ऋषि को सहस्त्रबाहु अर्जुन के मार देने से परशुरामजी ने अपने बाप की मृत्यु का बदला लेने के लिए पृथ्वी के सब क्षत्रियों का बार-बार नाश किया। उस समय क्षत्रिय लोग परशुरामजी से भयभीत होकर अपने प्राण बचाने के लिए अन्य कई जातियों में मिल गये और जीविका निर्वाह के लिए कई प्रकार के धन्धे में मिल गए।

भारत देश पर अक्सर मुसलमानों के हमले अधिक हुए हैं उस समय उनका यह कायदा था कि उनकी विजय होने के बाद आम हिन्दुओं खासकर राजपूतों तथा युद्ध करने वाली जातियों को जान से मार डालते अथवा मुसलमान बना देते उस समय भी उनसे बचने के तीन उपाय थे या तो मुसलमान हो जाय या अन्य जातियों से मिलकर उन्ही का धन्धा अपना कर जीवन निर्वाह करे ताकि फिर लडाकू न रह सके अन्यथा काजी के खंजर के नीचे आकर अपने प्राण दे दे।

क्षत्रियों में सबसे बड़े पुत्र को राजा की उपाधि मिलती थी अन्य छोटे पुत्र योग्य होते हुए भी इससे वंचित रहते थे या युद्ध करके राजा बन जाते थे। जिनका अपने वंश परिवार से उत्तराधिकार को लेकर

मतभेद होने पर संन्यासी लेकर बाहर चले जाते थे या अन्य जातियों में मिलकर जीवन निर्वाह करते थे ।

उपरोक्त तथ्यों के कारण अधिकांश क्षत्रियों ने अपने प्राणों की रक्षा व सेवा कार्य के लिए साधु व संन्यास मार्ग को अपनाया परन्तु औरतों व बच्चों को साथ रखते हुये भी कामड़ साधु कपिली संन्यासी कहलाये । कामड़ों में पाये जाने वाले विभिन्न गोत्रों व इनके निकास या उद्गम स्थल से यही सिद्ध होता है कि उनमें अधिकांश क्षत्रिय राजपूतों के गोत्रों के साधु बने हैं स्त्रियों ने अपनी स्त्रीत्व की रक्षा के लिए तेरहताल नृत्य द्वारा शक्ति की आराधना की इसमें मंजीरों के तेज प्रवाह व तलवार के अभ्यास से स्त्रियों कई युद्धाओं को परास्त कर सकती थी । ईक्ष्वांकु राजा को ताल जंघाओं ने परास्त कर मार दिया आगे चल कर ईक्ष्वांकु वंश के राजा बाहुक ने ताल जंघाओं का बुरी तरह से दमन किया जिसके परिणाम स्वरूप ये लोग पुनः सरस्वती प्रदेश में लौट आये व स्वतन्त्रतापूर्वक अपने पंथ का प्रचार किया ।

ऊँकार से अकार उकार मकार इनसे आद शून्द से निराकार से निरन्जन से अनहद से पवन सुन्न से अलील देव से जल से जीव से नारायण से ज्योति स्वरूप से परम

पुरुष से स्वयंभुव से मनु के दस पुत्र हुए–

श्लोक-मरिचीमंत्रयं गारो सेठे पुलस्त्य, पुल ऋतम प्रचेतास

वशिष्ट च भृगु नारदमेवच [मनु स्मृति]

मरीची का प्रथम ईक्ष्वाकु हुवा। ईक्ष्वाकु का ब्रह्मदेव का विराट का विष्णु के सोम सद के अग्नि स्वात के महादेव के स्वामी कार्तिक के सनक के हर तलब के संगसब के मारकण्डेय के धोम ऋषि के भारद्वाज से विमल ऋषि के अत्रय ऋषि के दत्तात्रेय के नामदेव के गौतम के सतानन्द के गार्गेय के, जनक के वस्त्रदेव के दुर्वासा के रोहिणाचार्य के जडभरत थे। बामदेव के कामदेव के कर्मद के कपिल। कपिल मुनि की संख्या दर्शन कोलायत तीर्थ कामडी सम्प्रदाय स्वामी नन्द नाम से चली तथा सदानाम से चली सदाजोव ब्रह्म की एकताका नाम है स्वामी कपिल के कवला मुनि के कर्णाद के देव मुनि के वशिष्ठ मुनि के अगस्त्यमुनि के सन्मुखाचार्य के सेवाचार्य के द्रोणाचार्य के कृपाचार्य के भट्टाचार्य के गउचार्य के गऊचार्यजी के गोसाईजी के नाम से पुकारते थे। उन्होंने मारवाड़ में आकर जुंजला नामक ग्राम में आपने मठ स्थापित किया। गउचार्य जी

के चार शिष्य समसपीर, हरचन्दपीर, पीराजालणची पीर समीकजी हुए इन्हीं चार शिष्यों से चार सम्प्रदाय बनी। [1] समसाणी [2] हरचन्दवाणी [3] रामदेवाणी [4] जालाणी इस नाम से कापडी सम्प्रदाय में प्रचलित है।

नाथ सम्प्रदाय डॉ. द्विवेदी पेज 28 के अनुसार एसियाटिक सोसाथटी की लाइब्रेरी में एक ताल पत्र की पोथी है जिसका नम्बर 48/34 अक्षर बंगला और लिपिकाल लक्ष्मण सं. 388 दिया है। ग्रंथकार कवि-शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर है जो मिथिला के राजा हरिसिंह देव [सन् 1300-1321 ई.] के सभासद थे। इस पोथी का नाम "वर्ण रत्नाकर" है। इस पोथी में चौरासी नाथ सिद्धों की तालिका दी है हुई है। यद्यपि ग्रंथकार उनकी संख्या चौरासी बताता है तथापि वास्तविक संख्या 76 ही है। लेखक के प्रमादवश शायद आठ नाम छूट गए हैं। इन 76 नामों में अनेक पूर्व परिचित हैं पर नये नाम ही अधिक हैं। तिब्बती परम्परा के चौरासी सहजयानी सिद्धों से इनमें के कई सिद्ध अभिन्न हैं। दोनों सूचियों को आसपास रखकर देखने से स्पष्ट मालूम होता है कि नाथ पंथियों और सहजयानियों के

अनेक सिद्ध उभय साधारण है। नीचे दोनों सूचियां दी गई हैं। पहली "वर्ण रत्नाकर" के नाथ सिद्धों की है और दूसरी महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यान की संग्रहित वज्रयानियों की है--

सख्या नाथ सिद्ध	संख्या सहजयानी सिद्ध	विशेष
1– मीनानाथ	1– लूहिपा	
2– गोरक्षनाथ	2– लीलापा	
3– चौरंगीनाथ	3– विरूपा नाथ सिद्ध [=ना.सि.]	
4– चारगीनाथ	4– डोम्भीपा	
5– तंतिपा	5– शबरीपा	ना. सि. 47 से तु.
6– हालिपा	6– सरहपा	
7– केदारिपा	7– कंकालीपा	
8– धोंगपा	8– मीनपा	ना. सि. 1 से. तु.
9– दारिपा	9– गोरक्षपा	ना. सि. 3
10– विरूपा	10– चौरंगीपा	ना. सि. 3
11– कपाली	11– वीणापा	
12– कमारी	12– शान्तिपा	ना. सि. 44 से तु.
13– कान्हा	13– तन्तिपा	ना. सि. 5 से. तु.
14– कनखल	14– चमरिपा	
15– मेखल	15– खडगपा	

16- उन्मन	16- नागार्जुन ना. सि. 22
17- काण्डलि	17- कराहपा ना. सि. 13 से. तु.
18- धोबी	18- कर्णरिपा [आर्यदेव]
19- जालन्धर	19- थगनपा ना. सि. 48 से. तु.
20- टोंगी	20- नारोपा
21- मवह	21- शलिपा [शीलपा] ना. सि. 53 से. तु. श्रृगाली पाद 2
22- नागार्जुन	22- तिलोपा
23- दौली	23- छत्रपा
24- भिषाल	24- भद्रपा ना. सि. 37 से.तु.
25- अचिति	25- दोखधिपा [द्विखडिपा]
26- चम्पक	26- अजोगिपा
27- ढेण्टस	27- कालपा
28- मुबरी	28- धोम्भिपा
29- वाकलि	29- कंकणपा
30- तुजो	30- कमरिपा [कंबलपा]
31- चर्पटी	31- डेगिपा
32- भादे	32- भद्रेपा
33- चांदन	33- तंधेपा [तंतिपा]
34- काभरी	34- कुकुरिपा

35- करवत	35- कुचिपा (कुसूलिपा)
36- धर्मपाततंग	36- धर्मपा
37- भद्र	37- महीपा (महिलपा)
38- पातिलभद्र	38- अचिन्तिपा
39- पलिहित	39- भलहपा (भवपा)
40- भानु	40- नलिनपा
41- मीन	41- भूसुकपा
42- निर्दय	42- इन्द्रभूति
43- सवर	43- मेकोपा
44-	44- कुडालिपा
	(कुद्धलिपा) ना. सि. 7 से तु.
45- भर्तृहरि	45- कमरिपा
	(कम्मरिपा) ना. सि. 12 से तु.
46- भीषण	46- जालधरपा
	(जालधारक) ना. सि. 19 से तु.
47- भटी	47- राहुलपा
48- गगनपा	48- धर्मरिपा (धर्मरि)
49- गमार	49- धोकरिमा
50- मेनुरा	50- मेदनीपा (हालीपा 2)
	ना. सि. 6 से तु.
51- कुमारी	51- पंकजपा

52- जीवन	52- घंटा (वज्रघंटा) पा
53- अधोसाधव	53- जोगीपा (अजोगिपा)
54- गिरवर	54- चेलुकपा
55- सियारी	55- गुडरिपाः (गोरूरपा)
56- नागवालि	56- लुपिकपा
57- विभवत्	57- निर्गुणपा
58- सारंग	58- जयानन्त
59- विविक्धज	59- चर्पटापा (पचरीपा)
	ना. सि. 31 से तु.
60- मगरधज	60- चम्पकपा ना. सि. 26
61- अचित	61- भिखनपा ना. सि. 46 सेतु
62- विचित	62- भलिपा ना. सि. 66 से तु.
63- नेचक	63- ना. सि. 51 से तु.
64- चाटल	64- चवरि (जवरि)
	ना. सि. 4 से तु. अजपालिपा
65- नाचन	65- मणिभद्रा (योगिनी)
	ना. सि. 74 से तु.
66- भीलों	66- मेखलापा ना. सि. 14 सेतु.
	[योगिनी]
67- पाहिल	67- कनखलापा
	ना. सि. 14 से तु. (योगिनी)

68- पासल	68- कलकलपा
69- कमल-कंगारि	69- कन्तालो)कन्थालो) पा
70- चिपिल	70- धहुलि (रि) पा
	(दबडोपा 2)
71- गोविन्द	71- उद्यनि (उधलि) पा
72- भीम	72- कपाल (कमल) पा
	ना. सि. 68 से. तु.
73- भैरव	73- किलपा
74- भद्र	74- सागरपा
75- भमरी	75- सर्वभक्षपा
76- मुरूकुटी	76- नागबोधिपा
	ना. सि. 56 से तु.
77-	77- दारिकपा
	ना. सि. 9 से तु.
78-	78- पुतुलिपा
79-	79- पनहपा
80-	80- कोकालिपा
81-	81- अनंगपा
82-	82- लक्ष्मीकरा
83-	83- समुदपा
84-	84- भलि (व्यालि) पा

उपरोक्त सहजयानी 84 सिद्धों की सूची के क्रम सं. 30 व 45 पर कमरिपा [कम्बलपा] तथा नाथ सिद्ध सं. 12 व 34 पर कमारी व कमारी नाम के सिद्ध से कामड़ साधुओं की उत्पत्ति हुई है। सर्वेक्षण से प्राप्त कामड़ों का जोग पट्ट से भी यही जानकारी होती है कि कमेर नाम ऋषि से कामड़ कहलाना प्रारम्भ हुआ। यही कमेर ऋषि यानि कमरिपा सिद्ध कुभीदास नाम से तथा कुम्भोदर मुनि नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। रामायण में उल्लेख के अनुसार जब रामचन्द्रजी को सीता सहित चारों दिशाओं की धाम पर पितृ तर्पण एवं ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्ति के लिए पिण्डदान करने पर भी शांति नहीं मिली तब कुम्भोदर मुनि की सलाह पर सीता सहित पश्चिम दिशा की हिंगलाज धाम परीसने गये।

कुम्भ में सिन्धु समावत नाही सुत तासु समुद्र चलु भरे है।

गनिकासुत जे गधुनाथ पिता गुरू जमरीसुत वेद हृदय धरे रे, मकरी सुत मार्कण्डेस ऋषि दासी सुत विदुर दया-धर रे अपनी करनी सुत होय बडों जो वंश बडों तो कहा करि है। इस प्रकार इन्हीं कुम्भोदर मुनि के पुत्र अगस्त्य मुनि हुए जो कपिल मुनि की बहिन प्रीति के पुत्र थे। ये दोनों ही महान् सिद्ध हुए एवं शिव सम्प्रदाय के

कपिली संन्यासियों [कामड़] के प्रथम आचार्य हुए। जिनसे कमिलानी कामड़ सम्प्रदाय चला। बाद में परम्परा नाद [दत्तक] एवं बिन्दु [वंश] के अनुसार चली जो अजयपाल, चाँदनाथ, गऊँचार्य [गुसाईजी] पर्यन्त समसाणी, नाथाणी रामदेवाणी, मालाणी, व हरचन्दणी के रूप में विकसित हुई। तत्पश्चात् कई चौकियाँ व उप धूणियाँ बनी।

डॉ. ह. प्र. द्विवेदी एवं शिवपुराण व मदभागवत के लेख के अनुसार तेरहताली कामड़ों को हेहय लोग पुरोहितों की तरह मानते थे दक्षिणा देते थे व भारी आदर करते थे। हेहय जाति के घनिष्ट सम्पर्क में आने के कारण जितना ताल जंघाओं [तेरहतालियों] के आदर का विस्तार हुआ उतनी ही उन्हें आगे चलकर हानि भी हुई क्योंकि हेहय जाति का ईक्ष्वांकु राजा से वैमनस्य हो गया। ताल जंघाओं का प्रभाव ईक्ष्वांकु परिवार में भी था। अतः ताल जंघाओं की मदद से हेहय लोगों ने ईक्ष्वांकु राजा को परास्त कर दिया। कहते हैं कि जिस समय ईक्ष्वांकु राजा तेराताली नृत्य देख रहा था। उस समय उस पर आक्रमण करके परास्त कर दिया गया अतः यह नृत्य अभिशापित हो गया इससे ताल जंघाओं

के सत्कार को काफी धक्का लगा और तेरातली नृत्य उपासना की भावना सीमा से निकाल दिया गया। आगे चलकर ईक्ष्वांकु वंश के राजा बाहुक ने ताल जंघाओं का बुरी तरह दमन किया जिसके परिणाम स्वरूप ये अरावली की पहाडियों के साथ-साथ ईरान असिरिया, मिश्र अफगानिस्तान पाकिस्तान चित्राल की तलहटी के क्षेत्र एवं कम्बोडिया तक फैल गये। पश्चिम देशों के अंग्रेज जब नई दुनिया की खोज में कम्बोडिया क्षेत्र में पहुँचे तथा वहां के लोगों की जानकारी प्राप्त की तब उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हैं तब उत्तर में कम्बोडिया शब्द मिला जिससे उस क्षेत्र का नाम कम्बोडिया पडा जहा 5000 वर्ष पुराने शिव शक्ति के अंगकोरवाट मन्दिर भी पाये गये हैं। कमेर ऋषि एवं कपिली संन्यासी से सम्पूचिया शब्द बना।

श्री कृष्णानन्दजी कामड मु. पो. बस्सी मादाजी की जिला राजसमन्द से संकलित जोग पट्ट वर्णन

ऊँ गुरूजी आद-आद ऊँकार की माया, जलाबम्ब से सायब आया आप अखन्डी न्यारा, आप विश्वम्भर बुन्द उपाई, आलस मोड उबासी खाई जद मन्शा देवी बाहर आयी, देवी पूँछ शिव ने सिंवरो पृथ्वी रचे सो कारज

करो आप संगत ने गल किया, ऊँ सा सील घर किया, घर-घर में वास किया, सुन धारा छींक आई दोई करम ईन्डा ले आई ब्रह्मा विष्णु महेश देवा पांच पुरुष मिल करे सेवा, कहे कर्ता सुन शक्ति जल पर थल-थल पर रची पृथ्वी, किरता ने कान पर धरिया हाथ एक ऋषि उपाया कुम्भर ऋषि नाम धराया। कमेर ऋषि से कामड़ कहाया। आप अलख सू कमेर ऋषि कहे, काया ढके सो बात कट्ठे अलख पुरुष की भक्ति करो, जद दीया कपास का बीज कपास से कपडा बनाया, गेरू से भगवां रंग उपाकर बाना पर चढाया शिम्भु दल का साध सन्तां में बर्ताया, पीर पण्डित कामड़ करणी का पूरा साध कामड हो तो करणी करो राखो धीज, कामड है एकाम्बर पर पीर जोगी जंघम सेवडा संन्यासी दरवेश छठा दर्शन ब्रह्म का यामे मीन न मेष जोग भेद सम्पूर्ण हुया सुमेर पर्वत की धूणी पर बैठ आप कुमे किसी कहया।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने रामदेवरा मेले में सितम्बर 1959 में कामड़ों के पिचहत्तर परिवारों का अध्ययन किया। जिससे प्राप्त जानकारी के आधार पर प्रकाशित शोध पत्रिका के पेज 182 व 183 के अनुसार कामडों की उत्पत्ति भगवान् के कान से जिस प्रथम पुरुष की

उत्पत्ति हुई उसका नाम "काम्बर" था। एक समय भगवान् के यहां हो रहे नृत्यगान में काम्बर भाई भी जा पहुँचा तथा अपने अकेलेपन का दुःख प्रकट किया। भगवान् ने उसे वही पास हो मंजीरों की धुन पर सिर पर कलश लिए नाच रही गोपियों में से एक के साथ ब्याह करने के लिए कह दिया। ऐसा कहा जाता है कि तब से कामड़ जाति और तेरहताली का प्रचलन हुआ तथा मंजीरा इनका मुख्य वाद्य बना।

विक्रम संवत् 1982 में उग्रास रियासत जयपुर निवासी गणेशदास भवानीदास का व्याख्यान प्रकाशित हुआ तत्कालीन कामड साधुओं की स्थिति पर प्रकाश डालता है जो इस प्रकार है।

हम लोग वंशाचार्य अर्थात् कुल गुरु हैं हमारी सम्पदा का मठ है सो नाथ गुसाईयों में से निकली हुई है इस विषय में ऋषि शब्द प्रमाण देता है कि ओम्कार निकलंककी माया। पारा ऋषिजी ने आप फरमाया। पारा ऋषि अलख की माया। आदि पुरुष वाकानाम धराया। ज्यां देखू जहां अगम अगाद में पूजू सतगुरु का पाद जोत कलस ले निरंजन आया। शिव मार्ग सबको परमाया, उमादेवी अगम उपाई, जब देवी बाहर आई,

शंकर ले पातालांधाया जोत कलस का ध्यान बताया मिट्टी का ठाट मिट्टी का पाट मिट्टी का कलस थपाया अणबीद मोत्या आखा पुराया जब अंजनीनाथ जी आया सिम्भू पर मेल्या हाथ महर करी जब ऋषि पै आया, सवा हाथ तो भेक बन्दाया, चौथी कूट कलस दिया, जुग-जुग ऋषि अमवाणी कीयी, आवो सिधो जाजम बिछाई, जीपर बैठ नाथ गुसाई सबने मिल ऐसा फरमाया, हरिया बनका रोख कटाया, कारीगर को वेग बुलाया नो का पाटया ग्यारा कामडी चौरासी बैल गेडया घडाया नो पाटया नो नाथ ने दिया दस कामडी गुसायां ने दीनी, चौरासी बैल गेडया कामड ने दीना, रही कामडी कौन उठाई, रही कामडी लोवा जी भारती उठाई, कोजी लोवा भारती जी ने थें किया उठाई सतगुरु दीनी अलख फरमाई, लीनी कामडी धारी टेक जब से चाल्यों कामड भेक कामड पंथ ऋष सब्द जप सम्पूर्ण सहि सिद्धा में गादी बैठ श्री गोरखनाथ जी कहि । गोरखनाथ जी का प्रवाण से हमारा भेक प्रमाणिक है परन्तु प्रमाण वार्ता विषे उपरोक्त है याते विद्धानों की समज से बाहर है सो अब शास्त्र विधि से कहते हैं कि श्लोक–यते–इन्द्रिये ब्रह्मचर्य विषियासक्त विवर्जितम्, कामदेव जैतिकामड प्राणायाम परायणम् । अर्थ इसका यह है कि समस्त इन्द्रियों को निग्रह कर के

ब्रह्मचर्य होकर विषय वासना को त्याग दे वो कामदेव को जीतने वाला कामड है, जो पुनः पुनः प्राणायाम करते हैं। हे मित्रों, इस कामड सम्प्रदाय में दो भेद हैं कि जो पण्डित पीर पीराना वाले हैं वो तो पूजनीय हैं और स्त्री साथ में ले के गाना करते हैं वो धर्म से विरुद्ध है।

डॉ. डोमिनीक्यू शीलाखान के दि. 17 से 21 दिसम्बर 1991 को राजस्थान पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सैमिनार उदयपुर के उपलक्ष्य में प्रकाशित अंग्रेजी भाषा के 33 पेज के शोध पत्र "भूली बिसरी परम्पराओं के पुजारी राजस्थान के कामड़" के अनुसार–

कामड राजस्थान के अलावा गुजरात मध्यप्रदेश पंजाब एवं हरियाणा में भी पाये जाते हैं। तथा बाबा रामदेव और कामड़ साधुओं का तत्कालीन विवेचन किया गया है तथा बाबा रामदेव की परम्परा के विशेषज्ञ कामड़ साधुओं को माना है तथा हिंगलाज माता के प्रचारक के रूप में प्रथम कामड लालू जसराज को बताया है जिसने त्रैतायुग में राजा रामचन्द्रजी को पवित्र हिंगलाज धाम पुरषायी थी। पेंज सं. 9 पर बताया है कि बाबा रामदेव ने राजस्थान के अन्य सन्त जाम्भोजी एवं दादू जी की तरह अलग से पंथ का निर्माण क्यों नहीं किया इसका उत्तर

बताया गया है कि वे जिस पंथ में थे वह पुराना था तथा पहले से चला आ रहा था जिससे रामदेवजी को कई स्थानों में कामड़ कहा गया है। रामदेवजी के पिता अजमालजी, अजमालजी के पिता रणसीजी समस ऋषि के शिष्य थे। इन्हीं समस ऋषि से कामडों में समसाणी धुणी का निकास हुआ तथा रामदेव से रामदेव वाणी मल्लीनाथ से मालाणी व हरचन्दाणी धूणी चली। इन चारों धूणियों के कामड राजस्थान में पाये जाते हैं। रामदेवजी ने गुसाईजी की आराधना के कई भजन व वाणियां बनाई हैं ये गुसाईजी उपरोक्त चारों धूणियों के आचार्यों के गुरु थे तथा इनका स्थान जुन्जाला में है जहां प्रतिवर्ष नवरात्रों के मेले में अब तक कामड साधु परम्परागत रूप से आकर भजन कीर्तन करते हैं।

अंग्रेज लेखक रसेल के अनुसार कामड़ साधु हिंगलाजमाता व बाबा रामदेव के पुजारी है।

RUSSEL RV. TRIBES AND CASTES OF CENTRAL PROVISINCES REPRINT OOSTERHOUT 1969. VOL. Ip 371.

Kamad : A small Caste of jugglers, who come from Rajputna and travel about in the Hoshaugabad and Nimar Districts, They were not returned at the census,

and appear to belong to Rajputana. Their special entertainment consists in playing with cymbals, ond women are the Chief performers. The woman has eight or nine cymbals secured to her legs before and behind. and she strikes these rapidly in turn with auother held in her band. twisting her body skilful(y so as to read all of them, and keeping time with the music played on quitar-like instruments by the men who accompany her if the womah is especially skilful, she will also hold a naked sword in her mouth, so as to inorease the difficulty or the performance.

The Kamads dress after the Rajputana fashion and wear yellow ochre coloured clothes. Toeir cxogamous sections have Rajput names, Chouchan, Panwar, Gudesar, Jegpal and so on, and like the Rajputs they seud a cocoanut core to signify a propolal for marriage,

They employ a Brahman, however to officate at thèir marriage and death ceremonies. Like the Gosains the Kamdads bury their dead in a sitting posture, a niche being hollowed out at the side of the grave in which the corpse in placed. Crushed bread (malida) and a gourd full of water are laid beside the cropse. The caste worship the

footprints of Ramdeo a sanit of Marwan and pay special reverence to the goddess hinglaj who is a deity of several castes in Rajputana.

Dr, Gahlot S. S.'s Book Castes & Trlbes of Rajasthan.

के पेज 194 के अनुसार

Kamad : Conspicuous by their saffroe-coloured clothes: the Camads are the wandering minstrels of Rajathan. Both men and women move about the country side singing songs in the praise of Ramdeo to the accompaniment of the stringed instrument Rawan Hatta or Tomboora. Their women-folk tuck up brass pallets all over their garments and produce rythemic sound to enchance the musical effects of their performances. They profess the Hlndi religion and live mainly in the rural areas of the state. There are 2,521 Komdads in the state constituting 0.07 percent of its total seheduled Caste papulation. They cultivate land and work as agricultural labourers while some are engaged in sundry occuptions. Barring Ajmer, Tonk, Jaislmer, Jalore, Sirohi and Banswara distric, the Kamdas are spread all over the state. Only 5 percent of their Total population resides in the urban areas of state, more than three-fourths of which is located

in the urban areas of Ganganagar, Chittorgarh and Churu districts and the rest in Nagour, Sikar, Barmer, and Jhunjhunu districts, In nural areas, their concentration is in Sujangrah and Ratangarh tehsils of Churu districts, tehsils of Lachhmangarh and Patehpur in Sikar District, Bhadra and Nohar tehsil of Ganganager district, Shahpura tehsils of Bhilwara districts, tehsils of Didwana and Merta of Nagaur district and Gogunda tehsil of Udaipur district.

श्री भोलदासजी कामड़ मु. पो. मुसालिया वाया सोजत रोड जिला पाली के पास उपलब्ध मूल ताम्र पत्र संवत 1314 के अनुसार सरदारदास गोत्र गहलोत कामड़ को भेंट मर्यादा (लाग) हारण रा आयस जी चंचल वन जी व रावत उदो जी ने बाँधी थी जो उनकी आव औलाद दिया जावसी ऐसा लिखा गपा है इससे भी सिद्ध होता है कि कामड़ साध सम्प्रदाय अनादि है व बाबा रामदेव के समय से पूर्व की संन्यासियों व सिद्धों की शाखा है।

रामदेव जी

रामदेवजी ने अछूतोद्धार को लेकर एक पंथ भी चलाया जो कामड़िया पंथ के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें दीक्षित व्यक्ति जात पाँत ऊँचनीच आदि के झमेले से मुक्त

हो जाता था रावल मल्लीनाथ जूडेका जैसल भाटी उगमसी, हड़डू जी मांगलिया महा इत्यादि प्रतिष्ठित धराने के लोग तथा धारू पंवी तना रेबारी डाली कई जैसे अस्पृश्य समझे जाने वाले इसमें सम्मिलित थे।

डॉ. महेन्द्र भानावत

सन्दर्भ :- राजस्थान साहित्य संस्कृति कला सम्पादक डॉ. भगवान्दास जी वर्मा की पुस्तक के अनुसार 4979

राजस्थान सन्त सिरोमणि राणी रूपादे और मल्लीनाथ नामक पुस्तक के लेखक डॉ. डी. बी. क्षीरसागर ने अपने शोध ग्रन्थ में विचार व्यक्त किये हैं कि राणी रूपादे के गुरु उगमसी भाटी के साथ कामड़ साधुओं की जमात रहती थी। जिनको बीज (शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि) के दिन जागरण व भेंट देने के वचन (संकल्प) के प्रमाण से कामड़ों को संन्यासी माना जाना चाहिये।

डॉ. सोनाराम विश्नोई की पुस्तक बाबा रामदेव : इतिहास एवं साहित्य के पेज 536 व 537 के अनुसार।

(3) राव मलीनाथ पथ में आयो ते री वाल

(1)

रूपादें बाल्हे तुड़िये री बेटी-खेत में रखवाली करती हेती रोही राखेत हंतो। पाणी पूरतो हंतो सू उगवसी

भाटी, रावल जैसलमेर रे धणीं रो बैटो पैड़े आवसों हंतो सू रोही माही तिस मरतो हंतो साथे काबड़िया हंता। ताहरा रूपादे बैठी हंती तठे आया आय अर पूछियो बाई पाणी है रूपादै कहयों छे। ऊगमसी कहयो आवो साघा। पाणी पीवो। रूपादे-रो मुँहड़ो भूड़ो हुवो जु पाणी हंतो सू पी गया, अर बाप भाई आसी सू कासू पीसी-पीसों ओ सोच कियो। तद उगवसी पाणी पी अर घड़े ऊपर हाथ दे कहयों साहब-साहब पूरो तद घड़ो भरीज गयो।

तद रूपादे पगे लागी। उगवसी कहयों-परणी किना कुआरी रूपादे कहयों-कुँवारी छू। जद रूपादे रै हाथ तांबे री बेल पाती अर कहयों बीज-रे दिन सात घर माहि मांगि-अर कावड़िया नू टांट देवे इयू कहि माथे हाथ दे उगवसी चालता हुआ।

(2)

रूपादे ज्यूं कहयों त्यूं कियो। आ रूपादे सांहे सुन्दर हंती सू हेक दिन माले दी दीठी। तद तुड़िये-न कहयो जू थारी बेटी मो नू परणाय तुड़िये तो नीछो कियो पण मालीजो जोर धाति परणिया राणीं हुयी पण बीज रे दिम सात घर मांग कावड़िया नू खीच करि बाट देवे।

कितरे हैके दिनै ऊगवसी महेवे आयो। कावड़िया

तृतीय अध्याय- आद्यादेवी हिंगुला खण्ड

"ॐ परम हिंगुले अमृत कपिणी तनु शक्ति
मनः शिवा. श्री हिंगुलाय नमः स्वाहाः ।।

जाति भाष्कर लेखक श्री कृष्णदास मथुरादास बैंकट प्रेस बम्बई के अनुसार सिन्धु देश में हिंगलु तीर्थ के समीप दधिचि ऋषि का आश्रम था। महर्षि दधिचि ने दैत्यों से अपनी रक्षा हेतु उपरोक्त मंत्र से आराधना करके हिंगलाज देवी से आशीर्वाद पाने को लिखा गया है।

गुजरात से संकलित हिंगुलाज देवी के एक चित्र में चित्रकार ने लिखा है हिंगलाज सत्यछे देवी के चित्र के सामने एक तरफ परशुराम जी अपना फरशा लिए खड़े हैं व दूसरी ओर दो क्षत्रिय लालू व जसराज माँ हिंगलाज से रक्षा हेतु हाथ जोड़कर दिखाया है व लिखा है "न क्षत्री पृथ्वी डरे, परशु ब्रह्म द्वार क्षेत्रिय डेरा संत रखो, हिंगुल धरती पार।" यानि क्षत्रियों ने परशुराम जी से अपने प्राणों की रक्षा हेतु त्रेतायुग में माँ हिंगलाज के सन्त के रूप में हिंगुल क्षैत्र में निवास किया।

हिंगुल शक्ति पीठ का स्थान :-

तंत्र चूडामणि एवं ज्ञानार्णव के अनुसार भगवान्

विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र के माध्यम से मृत शिव पत्नी सती के शव को खण्ड खण्ड करने पर उनके विभिन्न अंग और उनमें पहने आभूषण 51 स्थलों पर गिरे जिससे वे स्थल शक्ति पीठों के रूप में प्रतिष्ठित हो गये । इस प्रकार 51 शक्ति पीठ माने जाते हैं । भारत के अतिरिक्त कुछ शक्ति पीठ विदेशों में हैं जिनमें पाकिस्तान के हिंगुलाज में यह शक्ति पीठ है यहाँ सती का ब्रह्मरन्ध्र गिरा था । सती भेकवी कहलाती है और शिव भीम लोचना । यह शक्ति पीठ पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रान्त के हिंगलाज में है ।

लालू जसराज कापडी द्वारा राजा रामचन्द्र जी को हिंगलाज पुरषाणा :–

अकल हंसा वर हंसा बोले इमरत वाणी, रामचन्द्र के त्रेता जुग में लालू जसराज अगवाणी, भाग प्राप्ति पाई कण्डीर कुण्ड विस्तार चौरासो का बिखमा घाट, चाँद सूरज की लागे साख, तन कापडी मन कपाट बोलो सन्तों-शरण हिंगलाज ।

रावण मार रामचन्द्रजी घर आये मन में विचार किया कि मैंने ब्रह्म हत्या की इसका पाप मुझे लगा अब यह पाप कैसे उतारूं ? तो रामचन्द्र जी तीनों दिशाओं की धाम पर तर्पण यज्ञ आदि करने गये । अपने पिता

राजा दशरथ के जीव के तर्पण हेतु भारत के अनेक स्थानों पर तर्पण व श्राद्ध करने पर भी तसल्ली नहीं हुई तब उन्हें कुम्भोदर मुनि मिले कि हे राजा पश्चिम दिशा में हिंगुल धाम परोसने तुम्हारी ब्रह्म हत्या व पिता के तर्पण का फल प्राप्त होगा तो रामचन्द्र जी को सुधि आई तो माई हिंगलाज के धाम को गये। वहाँ कण्डीर कुण्ड में स्नान किया तो वहाँ पर लालू व जसराज कापडी को देखा वे माई के अगवाणी थे। फिर वे रामचन्द्र जी को हिंगलाज की पूजा करवाई और गुफा में परिक्रमा देकर आये तो रामचन्द्र जी बड़े प्रसन्न हुए तो अपना पीताम्बर लालू जसराज कापडी को दान में दे दिया फिर वहाँ से रामचन्द्र जी चले गये। पीछे से दोनों भाइयों ने उस पीताम्वर के बंटवारे (पांती) में झगड़े तो जसराज बड़ा भाई के कारण छोटे भाई को मारपीट कर पीताम्बर लेकर भाग गया तब लालू कापडी ने प्रण लिया कि मैं अब ओढु तो वैसे रंग की चादर ओढ़ू नहीं तो अन्न पानी खाना पीना नहीं लूंगा। इस प्रकार प्रण लेकर भाई हिंगलाज की बनो में चला गया तो घूमते-घूमते अचानक महादेव जी की धूणी आयी धूणी पर ऋषि महाराज तपस्या करता महादेव के रूप में उसने कहा बच्चा यहाँ तुम कहाँ से आया तो लालू कापडी ने महाराज को सारा हाल सुनाया

तो महादेव जी प्रसन्न होकर कहा ले बेटा मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ अब ले यह भगवा रंग की चादर तुझे देता हुँ यह ले ले लालू महादेव जी से भगवी चादर लेकर बहुत प्रसन्न हुआ फिर महादेव जी ने लालू को अन्न पानी खिलाया और उनका प्रण निभाया तब लालू ने यह प्रण कर लिया कि मैं अब भेष के सिवाय किसी का भी अन्न नहीं लूंगा। अव वहाँ से चला तो नगर ठठा गाँव में आया तो देखता है कि ओघडनाथ बाबा के धूणा पर ओघडनाथ बाबा ने पूछा कि तू कौन है ? जो भगवा वस्त्रधारी है। लालू ने कहा कि यह तो लालू कापडी है तो ओघड बाबा ने कहा कि या तो मेरा मुण्डत बन नहीं तो यह चादर यहीं पर रख दे तो लालू कापडी अपनी चोटी कटवा कर बाबा ओघडनाथ का चेला बन गया फिर लालूनाथ नाम धराया वापस महादेव की धूणी पर आया तो महादेवजी से कहा कि अब मेरा कमाई का साधन क्या है ? तो महादेवजी ने लालू कापडी को बीणा जन्तर दे दिया और कहा कि बेटा ले इस जन्तर में 6 राग 36 रागणी है। माई हिंगलाज का पाट पूजन जोत आरती कलश की पूजा करो व कमा कर खावो लालू कापडी की अलख का नियम झला दिया व नाम बताया। जगन्नाथ देवता बद्रीनाथ तीरथ हरषनाथ भैरू आस की माता पूजना। थोड़े दिन बाद गिरनार से

गुरु दत्तात्रेय स्वामी जी ने सभा बनाई दत भज दत भज की फौज आई। दरबार पिछम दिशा में जुड़े नो नाथ दस नाम अवधूत माही। वहां बैठे श्री राम भारती भजन के प्रताप से रीध याई उगिया भाग गुरु दतात्री से ध्यान लगाकर पूछे लालू कापडी भाई जाकर वीणा जन्तर बजाई तो नौ नाथ दश गुसाई खुशी हो गये तो लाखों की सम्पदा लालू कापढी को भेंट की। तो लालू कापडी ने नियम लिया व प्रण किया कि नाथ गुसाई के सिवाय किसी का दान नहीं लूंगा उसी दिन से नौ नाथ व दश नाम के साथ कापडी यानि कामड़ साध जुड़े हुए हैं। हकमनाथ जी ने कामड़नाथ नाम व्यक्ति को अगवानी माना उसी दिन से कापडी नाथ है दया नाथ जी ने दास नाथ जी ने दास नामा को चलाया जब से कापडो के भी दास लगता है।

नो नाथों के नाम :-

1) जलन्धरनाथ 2) मच्छन्दरनाथ 3) गोरखनाथ
4) भरतनाथ 5) नागेश्वरनाथ 6) रेवणनाथ
7) ग्याननाथ 8) चटपटीनाथ 9) कानिफानाथ

श्री मस्तनाथ अद्भूत लीला में लिखे बारह पन्थ :-
ले. शंकर नाथ योगी मु. भोर जि. रोहतक

1) आई पंथ 2) पागल पंथ 3) पाद पंथ

4) ध्वज पंथ 5) सतनाथ पंथ 6) वैराग पंथ
7) गंगनाथ पंथ 8) मन्त्रनाथ पंथ 9) नटेश्वर पंथ
10) धर्मनाथ पंथ 11) दरियानाथ पंथ
12) शिवनाथ पंथ और महाकाल योग में शिवजी को पार्वती के प्रति बारह पंथ का नाम यह बताया था:-

1) हेतु पंथ 2) अरण्य पंथ 3) गोपाल पंथ
4) पाद पंथ 5) चौली पंथ 6) गम पंथ
7) हवन पंथ 8) दास पंथ 9) रावल पंथ
10) पागल पंथ 11) कन्ड़ पंथ 12) वन पंथ

आदेश करने का मन्त्र :-

ॐ गुरुजी आदेश नाम सु एक सो अठोतर अभय देवा,
सात द्वीप नो खण्ढ पृथ्वी करें आदनाथ की सेवा
आदेश नाम अनधड़ की काया,
रणुकार में सणुकार आण समाया,
पुष्प प्रेम असंग जुगा मेव आदिनाथ णुणा दी देह,
करा तुम्हारी सेवा बरण करो देव अमर काया,
आदेश नाम सिद्धों ने पाया,
आदेश नाम से पाखाण तारिया ब्रह्मा विष्णु महेश्वर योगी,
अवागमन कभी न भोगी अधर दलिचे बैठकर
करूँनाथ जी को आदेश ।

आदेश नाम मनघड़ भाखो
लख चौरासी जीया जूण पर्यन्त राखो
ओम सोहं विश्वा पुरुषोतम महोदेवाय धी नेहीं लीनो आदेश
इतना हो आदेश मन्त्र सम्पूर्ण सही तो महादेवजी
पर्वती जी को ध्यान में नौ नाथ चौरासी सिद्धां ने कही ।
(सत. साह.)

हिंगलाज के भजन :-

टेर- हो हिंगलाज तू भव तारीणी माई थारी पंथ खांढाधार
जल पर तारिया पाखाण दुरमत छोड़ दे अभिमान चलणो
माई के द्वार हो हिंगलाज तू अब तारणी नगर ठठा पीर
पढा ठूमरा का ठाठजी ओघड़ की तो पूजा कर ले बोले
जय जयकार हो हिंगलाज तू भव तारिणी ।।

खारी नदी की पूजी करल्यों बोलो अय जयकार जी
पापिया का पाँव धूझे धर्मी दौड़या जाय हो हिंगलाज
बाटया भैंरू जी की पूजा करल्यों बोलो जय जयकार
दांतण वाही मोडल्यों माई के दरबार
माई थारो पंथ खांडाधार ।

वेतरणी नदी की करल्यों बोलो जय जयकार
संग साथी चालिया दुरमत गोता खाय
हो हिंगलाज तू भवतारिणी

कण्डीर कुण्ड विस्तार भरिया देखा माई का ठाहजी
लालू कामड़यो भणे शरणा में सोरा राख ।

हिंगलाज पंथ का प्राचीन काल में विस्तार ठूमरा इसको मानने वाले ऋषि मुनि राजा महाराजाओं व सिद्ध कापड़ियों के नाम, विश्व में इस पंथ का विस्तार व इस पंथ की प्रसिद्धि पंथ का वैज्ञानिक सिद्धान्त इसकी प्रसिद्धि मानव समाज को इस पंथ के लाभ । इस पंथ का दुरुपयोग वामा चार की प्रवेश शिष्यों की परीक्षा । आचार्यों की तपस्या व सिद्धियां की कमी । बादशाहों का आक्रमण इसका इस पंथ पर प्रभाव इसके विधि विधान को गुप्त बनाने का कारण विधि विधान के शख्त नियम, व्यवस्था इस पंथ के कर्मकाण्ड के वैज्ञानिक परिणाम रोग कटना, वंश बढना, धन्धों रोजगार चलना इस पंथ की वर्तमान स्थिति मान समाज की वर्तमान स्थिति में इस पंथ की उपादेयता - लुप्त हो रहे हिंगुल उपासना भवन विधि के संरक्षण हेतु सुझाव व नियम संस्थान के प्रयास । मातृ-सता व पितृ भक्ति के मार्ग का प्रशस्तीकरण ।

हिंगलाज की आरती

टेर- हो जटा धारण जोगणया थारो पंथ खांडा धार
जल पर त्यारिया पाखाण, दुरमत छोड़ दे अभिमान
हे माँ करां थांकी आरती

1. पहला जुगा री आरती ध्यायी है प्रहलाद ये मां
होली में उबारिया ले चढी निर्वाण हेमा
जटा धारण जोगणी
2. तीजा जुग री आरती ध्यायी है हरचन्द राव ये मां
हाटो हाट बिकाविया ले चढी निर्वाण ये मां
जटा धारण जोगणी
3. दूजा जुगा री आरती ध्यायी है जेठल राव ये मां
हीवाले में गालिया ले चढी निर्वाण है मां
जटा धारण जोगणी
4. चौथा जुगा री आरती ध्यायी बलचन्द राव ये मां
पग पियाला चापिया ले चढी निर्वाण ये मां
जटा धारण जोगणी
5. पांचां सातां नवां बारहां तेतीसां की आरती ये मां
लालू कामड़ यू भणे शरणा में सोरा राख ये मां
जटा धारणी मां राखज्यो विश्वास ।

आदनाथ गणपत जी

करा निवण महाराज राज ने करा निवण तिवरां रा तिलक ने
हो जा घोड़े असवारी अन्नदाता आरोध्या बेगा आई हे
आदनाथ गणपत जी ने सिमरूं म्हारा हिरदा में सुरमत
माई है

नित उठ कुवर द्वारका ने सिवरूं भूलिया ने राय बतायी ।
गढ रुणीजा घाम ध्यया री पुरषज्यारी सुफल कमाई
पुरुषा सोई प्रेम पद पावे, भूल्या की काँई ओलखाई
माता मेला दे पिता अजमाल दे बडा बिरमदे भाई है
बालीनाथ जी रा चेला कहीजे मस्तक हाथ धराई
घुडलो चढिया दुश्मण दलिया उण दिन करी चढाई
काड कुण्डियों दन्त डाटिया वज्र शिला मरकाई
कुडा कुडा कपटी लोभी लालची जमला में मति बुलाई
वो नुगरा से म्हारी पलो मत अडज्यो लापरा की काई बडाई
सियाराम सतगुरुजी मे शरणे भवानी राम ओल खाई
गोपाल भारती ने पिया पियाला भंगवा री लाज रखाई

गोरी का नन्दन खोलो बन्धन रणतभंवर का रखा है
हर हर बानी म्हारे हिरदे में आणी
नजर दुष्ट की टाल वापसी
इन्द्रासन मे उतरी हे ज्वाला हाथ खडग दुधारो ज्वाला
खोल भ्रम को तालो म्हारो–

1. घेर घुमेरो घाघरो हे ज्वाला नाडो रेशम वालो
मैया खोल भ्रम रो
चोटी वासक नाग ज्यू में ज्वाला शीष बणयों
नारेलो

2. अंगिया सोवे काचली है ज्वाला स्यालु सांगानेरी
सुगरा नर ने सामी मिलोये ज्वाला दे नुगरा ने टालो
3. स्यालु सांगानेर रो
4. पगल्या पायल बाजणी है ज्वाला झाझर को झणकारो
5. चुड़लो हस्ति दांत को है ज्वाला बिन्दी को चलकारो
6. हाथां मेहन्दी राचणी है ज्बाला काजल है गुणवालो
7. शोभो सोनी बीनवे है ज्वाला शरण राख उबारो।

बसजा बवानी ये आजा मोरे कण्ठ शारदा
कौन देव थने पैदा कीनी कौन दैव थने मानी
कौन देवता करे रसोई कौन भरे जल पानी (1)

ब्रह्मदेव म्हाने पैदा कीनी शिव शक्ति मिल मानी
सूर्य देवता करे रसोई इन्द्र भरे जल पानी (2)
भंगवा चौला अंग बिरावे घोले गढ की रानी
लालू कामड़ पे किरपा कीनी राख लिये अगवानी
पारस पीपल धज्जा फरूको लाल धज्जा रे मैया
तेरे परसाणी।

हिंगलाज का ठूमरा

अंग्रेज लेखक ब्रिग्स ने 'गोरखनाथ एवं कनफटा योगी' नामक पुस्तक के पेज सं. 104 व 105 पर लिखा है कि

शिव और पार्वती हिंगलाज जाते समय आशापुरी के जंगल में रुके। शिवजी ने पार्वती से कहा कि वह खिचरी बनाये। और स्वयं लकड़ी लेने जंगल में जाने लगे तब पार्वती के चारों ओर हड्डियों का एक चमत्कारिक गोला बनाया और कहा कि इस जंगल में एक दैत्य रहता है वह पीछे से आकर तुम्हें अपवित्र कर सकता हैं वह इस गोले को छूने पर जल कर मर जायेगा तथा वह गीले के अन्दर सुरक्षित रहेगी।

शिवजी जब दूर जंगल में चले गये तब वह दैत्य आया। पार्वती ने शिवजी के त्रिशूल से उस दैत्य को मार दिया। उस दैत्य का रक्त चारों और फैल गया। यहाँ तक कि जहाँ खिचरी पक रही थी उसमें भी फैल गया। थोड़ी देर बाद शिवजी आये। राक्षस ने शिवजी से मुक्ति हेतु प्रार्थना की। उसकी मृतात्मा कैलाश पर्वत को गई। राक्षस का शरीर धूल में बदस गया। जो अभी तक सुगन्धित पावडर के रूप में वहाँ उपलब्ध है। यह देखकर की राक्षस के खून से सारी चीजे अपवित्र व खराब हो गई हैं। शिवजी ने पार्वती से कहा कि पकाई हुई खिचडी दैत्य के रक्त से खराब हो गई है इसे फैक दो कहते हैं इसी खिचडी के दानों से ठूमरा बना जो चावल व मूंग की छोटी बड़ी आकृति में वहां पाया जाता है। इन्हें लोग

इकठ्ठा कर नाला बनाते हैं तथा बेचते हैं। छोटे दाने की माला को हिंगलाज का ठूमरा कहते हैं बड़े दाने को आशापुरी कहते हैं। योगी इसे इन्हें नगर ठठा से खरीदते हैं और हिंगलाज पहुंचने पर देवी को चढ़ाकर स्वयं धारण करते हैं। वापसी यात्रा में नगर ठठा में जब आशापुरी देवी के पीठ पर पहुंचते हैं तब दूसरी माला यहां देवी को चढाकर धारण करते हैं।

ठूमरा के बारे में यह भी कहा जाता है कि रावण को मार कर चौदह वर्ष के वनवास के बाद राम सीता के साथ आशापुरी के जंगल से जा रहे थे तब सीता ने राम से कहा कि वह शिवजी से ठूमरा की माला लेकर आये जिसे हिंगलाज देवी के चढाने से ब्रह्म हत्या (रावण को मारने) के पाप से मुक्ति मिल जायेगी। आशापुरी की पवित्रता इसलिए है क्योंकि राजा रामचन्द्रजी हिंगलाज को जाते समय अपने साथ आये बन्दर (सैनिकों) को वहां छोड़कर गये थे।

एक कहानी यह भी है कि एक बार मुस्लिम फकीरों ने नगर ठठा में हिन्दू धर्मानुयायियों को रोक दिया तव देवी शेर पर बैठ कर स्वयं प्रकट हुई तथा फकीरों को भगा दिया तब वे सब हिंगलाज को गये। इस चमत्कार

के कारण योगी नगर ठठा व हिंगलाज दोनों स्थान पर जाते हैं ।

हिंगलाज का स्थान इन्दुस नदी/घाटी के मुहाने से लगमग 80 मील दूर पर माकरान (MAKRAN COAST) पर स्थित है तथा समुद्र से 12 मील दूर है ।

हिंगलाज में एक बार दो सिद्ध अपने शिष्य का कान चीरने लगे थे, परन्तु क्या ही चमत्कार कि वह छेद बार-बार बन्द हो जाता था तब से औघड़ परम्परावादी कान चिराते हैं । राजस्थान की (नाथ परम्परा) सिद्ध परम्परा में कान न चीरने वालों की संख्या जो अधिक है वे भी हिंगलाज के उपासक हैं । राजस्थान की कई जातियां जिनमें चारण, खत्री, मेघवाल, बलाई, जाट, गूर्जर, राजपूत आदि हिंगलाज देवी को मानते हैं । हिंगलाज देवी के पूजन को इसके जानकार आचार्य नाथ गोसाईं कामड़ से करवाने से इससे कई चमत्कारिक लाभ देखे गये हैं ।

अलख उपासी कामड़ समाज संतों का प्राचीन कार्य

हिंगलाज के ज्योति पंथ द्वारा अछूतोद्धार विदित हो कि सृष्टि के आदि काल में पहले ऋषियों का विस्तार हुआ ऋषियों ने सारा विश्व रचा वेदों में निराधार हुआ

एक अग्नि में करता हवन और एक वर्ण था नर नारी
फिर एक वर्ण से चार वर्ण गुण कर्मों से स्वीकार हुआ
उन चारों का विस्तार बढ़ा तब, भेद अठारह हजार हुआ
अठारह हजार जातियों में. हिन्दुओं में फूट का वास हुआ
इसलिए मित्रों धर्म कर्म का देखो सत्यानाश हुआ नाना
मत नाना जाति से बर्बादी की नींव डली छुआछूत का
भूत लगा, बिना एकता के नहीं होगा भली जे तुम चाहो
भला देश का मत जाति अभिमान करो कल्याण भारती
धर्म और कर्म से भारत का उत्थान करो।

उपर्युक्त इस संत वाणी से पता चलता है कि यह जाति भेद अनादि नहीं है यह मनुवादी स्वार्थी लोगों का बनाया हुआ हैं जिन पोपो ने अशिक्षित समाज को गृह गोचर व पुराणों का किस्सा कहानी सुनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध किया। एक समय ऐसा भी आया था जिसमें प्राचीन ग्रन्थों को अवसर पाकर अपने हित हो ऐसा उलट पुलट करके भोले भाले भारतीयों को बहका कर मानव-मानव के बीच छुआछूत का भूत लगा दिया जिसे आज तक निकालना मुश्किल हो रहा है।

जिस वक्त इन स्वार्थी पोपो ने मनुस्मृति का आधार लेकर गलत प्रचार शुरू कर दिया कि शूद्र जाति को वेद

पढ़ने पढ़ाने का अधिकार नहीं है वे तो अधजले मुर्दे के समान हैं ऐसा कहकर मनुवाद फैलाया। एक सच्ची घटना है जि एक निम्न जाति के घर पर सत्यनारायण भगवान् की कथा हो रही थी जिसे एक चौधरी ओ कि धार्मिक प्रवृति का था वो बैठकर सुन रहा था उसी वक्त वहां से एक पण्ढित जी गुजर रहे थे उन्हीं चौधरी को निम्न जाति के घर बैठा देख बाहर से आवाज देकर चौधरी को बुलाया और सब के सामने यह कहा कि चौधरी शूद्रों के घर पर बैठकर कथा सुनोगे तो नरक में जाना पड़ेगा ऐसा कहकर पंडित चौधरी को उठाकर अपने साथ ले गया। इस प्रकार सत्यनारायण भगवान् की कथा के फल को भी ऐसे लोगों ने जातियों के अनुसार बांट दिया जो कहां तक सत्य है जबकि ईश्वर के यहां ऐसा बंटवारी नहीं है जैसे जिस आक्सीजन से शूद्र जीता है उस आक्सीजन से पंडित भी जीता है कार्बनडाईआक्साईड से नहीं। जिस पानी हवा अग्नि की आवश्यकता जीने के लिए शूद्र को होती है उसी से ब्राह्मण भी जीता है क्या उनके लिए अलग से कोई व्यवस्था है ? प्रकृति ने यह भेद नहीं किया है यह भेद स्वार्थी लोगो ने किया है स्वार्थी तत्वों ने यहां तक रोक लगवा दी कि शूद्रों को छूओ मत, छूओगे तो तुम्हारे घर्म कर्म मिट्टी में मिल जागेगे एवं

तुम्हारे पितृ नरक में चले जायेंगे ।

उपर्युक्त ऐसी विचार धारा के विरोध में शम्भू दल के संत, नाथ, गोस्वामी व कामड़ साध आचार्यों ने जन सामान्य को जागृत किया इन आचार्यों में कपिल मुनि अजयपाल, गोरखनाथ गऊचार्य जी शंकराचार्य जी, एकनाथ जी बाबा रामदेव जी, सेकुदास, समसधीर, राजा माल जी, हरचन्द पीर, पीर जालपसी, पीर राधो, पं. देवायत इन्होंने अपनी बोलचाल की भाषा में मंत्र बनाकर हवन पद्धति क्रिया को पूजन जम्मा जोत में बदल कर साधारण लोगों को सनातन धर्म के साथ जोड़े रखा । इस कार्य को भी स्वार्थी लोग सहन नहीं कर सके । उसके लिए भी मकोल उड़ाई ये तो बाम मारगी हैं दशनामी हैं । फिर भी बुद्धीजीवी लोगों ने इसे मरणोपरान्त क्रिया के साथ जोड़ दिया । क्योंकि मृत्यु का भय तो हर प्राणी को प्रभावित करता है । मृत्यु भी किसी को सुवर्ण या शूद्र समझकर माफ नहीं करती । हवन पद्धति के साथ शंखा ढाल (पितृ तर्पण) क्रिया को जोड़नें से इसमें कई प्रकार के बहम (भय) भी बढ गये जिससे कमजोर मानसिकता वाले लोगों में कई प्रकार की परेशानियां बढ गई । जिसका नाजायज फायदा कुछ लोगों ने उठाया जिससे यह

पंथ बदनाम होने लगा तथा लोग इस पंथ में सम्मिलित लोगों से डरने लगे। जिससे इसकी क्रियाएँ लुप्त होने लगी।

म. भ. गीता के अध्याय 2 में श्री कृष्ण से अर्जुन पूछते हैं कि महाभारत में हमारे वंश के करोड़ों लोग मरेंगे। हे प्रभु, जल और पिण्ड की क्रिया अब लुप्त होने जा रही हैं इनका उद्धार कैसे होगा ? इससे भी सिद्ध होता है कि भारत वर्ष में महाभारत से पूर्व ही जल पिण्ड की क्रिया लुप्त होने जा रही थी वह गुप्त रूप से कुछ समुदायों में मौजूद थी जिसका अर्जुन को भी ज्ञान था। मृत आत्माओं की मुक्ति के लिए तथा उसके परिवार के जीवित सदस्यों के जीवन के कल्याण के लिए यहां हिंग-लाज देवी का पूजन कामड़ साधुओं द्वारा परम्परा से किया जा रहा है। जिसका चमत्कारिक लाभ रोजगार, वंशवृद्धि व स्वास्थ्य में सदियों से लोगों को मिलता रहा है तथा त्रितोपों का निवारण होता रहा है। जिसके ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं जैसे डूगरसिंहजी के समय राणी रूपादे की थाली में फूल प्रकट होना, तोलां के द्वारा जैसल धाड़ायती के मन को बदलना। बाबा रामदेव जी के कई पर्चे, कामड़ साधुओं द्वारा अनेकानेक चमत्कारिक कार्य वर्तमान तक हो रहे हैं।

तोलां तीन नर तारिया, लासा, शाह सधीर ।
जैसल जुग को चोरड़ो कियो पलक में पीर ।।

वर्तमान में भी ऐसे कई चमत्कार होते रहते हैं जिससे लोग इस क्रिया को अपने घर करवाते हैं ।

इस क्रिया के आचार्य नाथ गुसाईं कामड़ आदि इस क्रिया को परम्परा से कई जातियों में करते आ रहे हैं ।

हिंगलाज पूजन की विधि आगे दी गई है इसमें कई मन्त्रों के साथ यह पूजा सम्पन्न होती है अलग अलग क्षेत्र के आचार्य अपनी स्थानीय बोली के मन्त्रों द्वारा इसे सम्पन्न कराते हैं । मन्त्रों के साथ ही यह पूजा पद्धति होने पर ही फलदायी होती है । ये मन्त्र कामड़ साध परम्परा से अपने पूर्वजों से सीखते हैं तथा इसमें विशेषज्ञ होते हैं । अलग अलग क्षेत्रीय बोलियों में होने व मन्त्रों को गुरुमुख से सीखने की परम्परा कायम रहे इसलिए ये मन्त्र नहीं लिखे जा रहे हैं ।

हिंगलाज के पूजन की आवश्यकता :–

मानव जीवन में गृहस्थ लोग कई घटनाओं व दुर्घटनाओं से होकर गुजरते हैं । इन घटनाओं का प्रभाव उनके मन में संस्कार के रूप में बैठ जाता है जिससे मन में

खिन्नता उदासी, भ्रम बना रहता है जिसके प्रभाव से कई बार जीवन भार बन जाता है ।

जीवन के सच्चे रहस्य का ज्ञान जब इस पंथ की क्रिया से गृहस्थ को होता है तो उसके जो ऋणात्मक सोच व प्रभाव हैं वे नष्ट हो जाते हैं देवी हिंगलाज की कृपा से से उन्हें नई सोच व नया जीवन मिलता है कई चमत्कारिक लाभ होते हैं परन्तु ज्योति पंथ के पूजन की विधि व मन्त्रों के जानकार आचार्य के द्वारा ही सम्पन्न होना चाहिए । यह परम्परा लाखों वर्षों से निर्बाध रूप से चल रही है । भारत देश के स्वतन्त्र होने व औद्योगीकरण के कारण आये सामाजिक बदलाव के कारण यह परम्परा अब थोड़ी कमजोर जरूर हुई है क्योंकि शिक्षा के बढते प्रभाव से लोक भाषा के स्थान पर कई अन्य भाषाऐं बढती जा रही हैं जिससे इसके जो मन्त्र अशिक्षित भारतीयों को समझाने के लिए सरल व स्थानीय भाषा में बने हुए हैं वे लुप्त हो रहे हैं ।

हिंगलाज पूजन विधि :–

1. सर्वप्रथम मकान की शुद्धि लिपाई या पुताई करावें ।
2. आचार्य कोटवाल के साथ मण्डप वाले कक्ष में जाकर गवली (गौमूत्र) का छिडकाव करावें ।

3. रेत के पानी से भिगोकर 3 इन्च ऊँचा सवा हाथ लम्बा x सवा हाथ चौडा चौका या लकड़ी के चौके पर सफेद वस्त्र के उपर लाल कपड़ा बिछावें ।

4. सवा किलों चावल से संलग्न चित्र अनुसार पाट बनावें ।

5. पूजन सामग्री:– रोली, मोली, इत्र, पान, कपूर, सूखा मेवा, चावल, धूप, गूगल, अगरबत्ती, नारियल, रूई, सूत (कूकड़ो) दीया, घी, तेल गुथ, लोंग, इलायची, सुपारी, फूल माला, फल आदि श्रद्धानुसार लावें ।

6. धूप सामग्री व घी से ज्योति खडी करें । पाट पर चार साखिया व एक मुख्य ज्योति दीपक जलावें । पंच मेवा पाट पर रखे कम से कम 9 व अधिक आये हुए सन्तो की संख्यानुसार 11 या 13 कूटा रखे ।

7. आचार्य इनका संचालन करते हुए समय समय के मन्त्र बोले ।

1. मकान शुद्धि मंत्र
2. गुरु गादी मंत्र
3. जोगणी गादी मंत्र
4. साखिया गादी मंत्र
5. वीर गादी मंत्र
6. भण्डारी गादी मंत्र
7. कलश स्थापना मंत्र
8. पाट पूरने का मंत्र

9. अटल शब्द 10. सरभंग मंत्र
11. जोत का मंत्र 12. गणेश व सरस्वती हनुमान् असख व हिंग- के मंत्र
13. नौ गृह देवता, पितृ तीर्थ आदि का मंत्र
14. कांकण न पायल जाप 15. कोटवाली मंत्र
16. नौ पातर का जाप 17. गुरु मंत्र
18. अमर मंत्र 19. चन्डी स्तुति
20. शंख गायत्री 21. हंस पखाना
22. जवाब पेडी 23. भैरू पाट का जाप
24. जोत झिलाने का जाप ।

8. भजन मण्डली गणेश वन्दना, रामदेव जी, अलख जी, हिंगलाज के भजन तत्पश्चात् हेली फकीरी के भजन । उपदेश चेतावनी ।

9. रात्रि 2·30 बजे दूध मंगाकर कुशा का पुतला बनाकर पुरुष हो तो सफेद महिला हो तो लाल कपडा पहना कर शंख ढाल द्वारा मृतक के वंश के शंखा ढाल करें । सूत व बणेठी की सीढी बना कर एक झूला बनावें । नौ पेडी की सीढी उस पुतले को पार

करवा कर झूले में उसके परिवार के लोग झुलावें। प्रसाद वितरण कर पुतले को अगले दिन नदी तालाब या तीर्थ स्थान को भेजें।

उपरोक्त हिंगलाज की ज्योति की विधि मांयली (अन्दर की) जोत लिखी गई है जो सब में श्रेष्ठ है। इसमें परिवार की मृत आत्मा की शान्ति हेतु शंखाढाल व श्रद्धा तर्पण किया जाता है। यह बन्द कमरे में की जाती है।

उजली जोत में शंखाढाल की जरूरत नहीं है यह खुले में भी की जा सकती है तथा यह जोत घर में सुख समृद्धि हेतु की जाती है।

उपरोक्त ज्योति पंथ का महात्म्य शिवपुराण के महात्म्य के चौथे अध्याय एवं पांचवें अध्याय से भी स्पष्ट होता है जिसमें लिखा है कि विन्दुग नाम का ब्राह्मण अपने दुष्कर्मों से मरने के बाद दैत्य बना तब उसकी पत्नी चंचुला ने शिवजी व पार्वती को प्रसन्न कर अपने पति की आत्मा की मुक्ति की प्रार्थना की/पार्वती ने प्रसन्न होकर तम्बुरु मुनि को बुलाया तथा उस दैत्य की मुक्ति हेतु ज्योति पंथ एवं शिव कथा में दक्ष तम्बुरु मुनि के इस पंथ द्वारा मुक्ति हेतु कहा तम्बुरु मुनि (हिंगुलाचार्य काम्बड

सन्त) ने चंचुला के पति विन्दुग ब्राह्मण की पिशाच देह से मुक्ति कर दिव्य देह से शिव लोक को पहुंचाया ।

नोटः- कामड़ सन्तो को पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों में तम्बुरु, तालजंघ, तेरातालो, कपिली संन्यासी आदि नामों से लिखा गया है । यह अलग अलग स्थान के भेद कार्य भेद व ज्ञान भेद के कारण है ये शब्द एक दूसरे शब्द के निर्माण में सहायक रहे हैं ।

हिंगलाज देवी के ज्योति पंथ का नाथ, गोस्वामी और कामड़ सन्तों द्वारा अन्य जातियों में प्रचार प्रसार किये जाने से इस पंथ के अनुयायी बने । शिव सम्प्रदाय के नाथ और गोसाईं सम्प्रदाय भी अद्वैत मत के प्रचारक हैं तथा कामड़ सन्तों का इन सम्प्रदायों से अनादि काल से सम्पर्क रहा है इनके यहां बड़े मठों पर शिव रात्रि जागरण या माई की जोत कराने हेतु आज तक कामड़ सन्त जाते हैं तथा कामड़ सन्तों को इनके द्वारा भेंट लाग मर्यादा दी जाती है । अतः नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथ एवं दशनामी संन्यासियों का वंश वृक्ष जानकारी हेतु दिया जा रहा हैः-

नाथ सम्प्रदाय के 12 पंथों का विवरण:-

स	नाम	मूल प्रवर्तक	स्थान	प्रदेश	विशेष
1	सत्यनाथी	सत्यान	पाताल भुवनेश्वर	उड़ीसा	सत्यधाम स्वयं ब्रह्मा का ही नाम इसीलिये ये लोग ब्रह्मा के योगी कहलाते हैं।
2	धर्मनाथी	धर्मराज युधिष्टर	दल्लुदेलक	नेपाल	...
3	रामपंथ	श्री रामचन्द्र	चौक तप्पे पचोरा	गोरखपुर युक्तप्रान्त	इस समय ये लोग गोरख-पुर के स्थान को ही अपना स्थान मानते हैं।
4	नाटेश्वरी	लक्ष्मण	गोरखटिला	झेलम पंजाब	इनकी दो शाखाएँ नाटेश्वरी और दरियापंथी।
5	कन्हड	गणेश	मानफरा	कच्छ	....
6	कपिलानी	कपिलमुनि	गगासागर	बंगाल	इस समय कलकत्ते (दमदम) के पास गोरखवंशी इनका स्थान है।
7	वैरागपंथ	भतृहरि	रतढोहा	पुष्कर के अजमेर	....

8	मानन्नाथी	गोपीचन्द	अज्ञात	— इस समय जोधपुर का महामंदिर मठ ही इनका स्थान है।
9	आई पंथ	भगवती विमला	जोगी गुफा या गोरखकुई	बंगाल के दिनाजपुर जिले में
10	पागलपंथ	चोरंगीनाथ (पूरनभगत)	अबोहर	पजाब ....
11	धजपंथ	हनुमानजी	—	— ....
12	गंगानाथी	भीष्मपितामह	जखबार	गुरुदासपुर (पजाब) ....

दश नाम संन्यास का वृक्ष

सतयुग के आजा	गौत्र-वश्यप	महाकाव्य चार–
शिव ब्रह्मा, विष्णु	दक्षिण मठ के	अहंब्रह्मास्मि मयंआत्मा,
	सन्यासी	ब्रह्म तत्वमसि, प्राज्ञनं ब्रह्म
शिव से संन्यास	पुरी, भारती	
त्रेतायुग आर.	सरस्वती	
शिव, शान्ति पराशर	सम्प्रदाय भूवार	संन्यास चार—
द्वापर के आचार्य	देवता-आदि	हंस परमहस,बोर्द्धक,
	वाराह	कुटीचर
व्यास सुखदेव	देवी-कामाक्षा-	भगवान शकर के अगले
	देवी	दशनाम
कलयुग के आचार्य	तीथ-सत	ब्रह्माण्ड से पुरी, ललाट
	रामेश्वरय्	से भारतीय

गोड गोविन्द शंकराचार्य	वेद-यजुर्वेद	जिह्वा से सरस्वती
जोशी मठ के संन्यासी	आचार्य- पृथ्वीधराचार्य	
गिरी, पर्वत, सागर	ब्रह्मचारी-चेतन	बाहु से गिरि, पर्वत सागर
सम्प्रदाय-आनंवार	गोत्र-भु.भुवें	कुक्ष में वन ऐरण्य
देवता-नारायण	दिशा-दक्षिण	चरणों से तीर्थ, आश्रम
देवी-पुण्यगिरि	पश्चिम दिशा के सन्यासी गुरु शंकराचार्य सन्यासी	
तीर्थ-अलखनन्दा	तीर्थ आश्रम	
दोद-अथर्व	सम्प्रदाय-कीटवार	1 श्री शम्भू पंच आवहान
आश्रम- बद्रिकाश्रम	देवता-सिद्धेश्वर	2 जुना अखाडा
गौत्र-भृगु	देवी-भद्रकाली	3 निरन्जनी
ब्रह्मचारी-	आचार्य-	4 आनन्द
आनन्द	स्वरुपाचार्य	5 निवाणी
आचार्य-	तीर्थ-मोमती	6 अटल
निरोतोटकाचार्य		7 अग्नि
दिशा-उत्तर	वेद-सामवेद	27 मण्डीगिरी पर्वत
पूर्व दिशा गोर-	ब्रह्मचारी-प्रकाश	सागर
धनमठ के संन्यासी		1 रामदत्ती
वन, ऐरण्य		2 ओंकारी

आचार्य-	गौव अविगत	3 चन्दन नाथी बोदल
पद्माचार्य		4 ब्रह्मनाथी
सम्प्रदाय-	भालेचार-	5 दुर्गानाथी
देवता-जगन्नाथ	दत्प्रकाश,	6 ब्रह्मभद्रनाथी
	सूर्यप्रकाश	7 रोजनाथी
देवी-विमलादेवी	भैरवप्रकाश	8 जगजीवननाथी
	चन्द्रप्रकाश	9 पाटम्बरनाथी
तीर्थ-महोदधि	चार धुन्नी	10 ज्ञाननाथी
वेद-ऋगवेद	दत्धुन्नी, गोपाल	11 ओघरनाथी
	धुन्नी	

ब्रह्मचारी-प्रकाश अजय मेघधुन्नी सूर्यमुखी

12 भावनाथी	13 सागरनाथी
14 ऋषनाथी	15 चान्दनाथी वीदला
16 कुसुमनाथी	17 अपारनाथी
18 रत्ननाथी	19 नगेन्द्रनाथी
20 रुद्रनाथी	21 महेशनाथी
22 अजगरनाथी	23 मेघनाथी
24 पर्वतनाथी	25 भाननाथी
26 पारसनाथी	27 दरियानाथ

पुरीयों की 16 मंडी :-

1 बैकुण्ठपुरी	2 केशवपुरी मुलतानी

3 मंगादरियापुरी 4 त्रिलोकपुरी
5 सेजपुरी 6 वन मेघनाथपुरी
7 भगवन्तपुरी 8 पूर्णापुरी
9 भण्डारी हनुमन्तपुरी 10 जड भरतपुरी
11 लोदर दरियापुरी 12 संग दरियापुरी
13 सोन दरियापुरी 14 नील कंठपुरी
15 तामक भीयापुरी 16 मायापुरी निरन्जनी

भारतीयों की चार मंडी :-

1 मन मुकुन्द भारती 2 नृसिंह भारती
3 पद्मम भारती 4 बाल विषम भारती

वन की चार मंडी :-

1 गंगासनी वन 2 सिंहसनी वन
3 बाल वन मुण्डली वन 4 होडसरी वन आत्म वन

पोहरी की छाप लामा गुरु की मंडी, गिरियों की 27 मंडी, पुरियों की 16 मंडी, भारतीयों की 4 मंडी वन की 4 मंडी, लाभा की 1 मंडी, (चीन में) यति, ज्योति प्रकट, नन्द ये चारो संन्यासी 52 मंडियों में बैशुमार होते हैं।

नोट:- इसमें कोई त्रुटि या गलती हो तो जानकार महात्मा सुधार लें।

शान्ति आश्रम, (सरनेश्वर महादेव)
परम संत श्री श्री 1008, जवाहर सागर बांध
जिला–बून्दी (राजस्थान)

अध्याय समाप्त

अध्याय–4

श्री कपिलायन खण्ड

सृष्टि रचना खण्ड में बताया गया है कि सृष्टि रचयिता ब्रह्माजी ने अपनी छाया से कर्दम ऋषि को उत्पन्न किया। कर्दम ऋषि के क्षमी व देवहुति नामक पत्नियों से कई पुत्र नाति पैदा हुए। माता देवहूति के गर्भ से कपिल मुनि का जन्म हुआ। इनके नौ बहिने भी हुई। हबि नामक बहिन का विवाह पुलस्त्य ऋषि के साथ हुआ। पुलस्त्य ऋषि के पुत्र अगस्त्य ऋषि महान् सिद्ध पुरुष हुए। कर्दम ऋषि शिवजी के महान् भक्त थे। शिवजी की आराधना से ही इन्हें सिद्धियां प्राप्त थीं पूर्व के अध्याय में बताया जा चुका है कि सिद्धों में हुई एक होड से कर्दम ऋषि ने अपने मन्त्र बल से रेगिस्तान में वर्षा करवाई तथा कोलायत झील बनी। कर्दम ऋषि की तरह ही इनके पुत्र नाति कपिलमुनि व अगस्त्य मुनि शिव सम्प्रदाप के महान् आचार्य हुए। अगस्त्य मुनि ने स्वामी कार्तिकेय को

दक्षिण भारत में शिव शक्ति के पंथ के विस्तार हेतु भेजा तथा स्वयं शिवजी ने अपने 18 पंथो में से एक पंथ का आचार्य कपिलानी पंथ का आचार्य कपिलमुनि को बनाया। जिसको कालान्तर में गोरखनाथ ने भी अपने बारह पन्थों में मान्यता दी। कपिल मुनि के बाद इसके प्रसिद्ध आचार्यों में अजयपाल, चांदनाथ गऊचार्य, समस्त ऋषि आदि हुए।

कपिल मुनि विष्णु के अवतार थे इनके पंथ को शिव सम्प्रदाय व गोरखनाथ द्वारा मान्यता देने से नाथ सम्प्रदाय में वैष्णव योग हुआ। इस सम्प्रदाय के साधुओं की वेशभूषा शिव सम्प्रदाय की तरह भगवे रंग की हुई परन्तु वैष्णव उपासक होने से नाम के साथ 'दास" शब्द तथा अलख के चरण की पूजा प्रारम्भ हुई।

अध्याय-3 में डॉ. द्विवेदी ने लिखा है:-

7-वैष्णव योग

गोरखनाथ के सम्प्रदायों के कपिलानी का कपिलाय शाखा वैष्णव योग की पुरानी परम्परा पर आश्रित होने से वैष्णव योग कही जा साकती है। कपिलमुनि विष्णु के अवतार थे। दशवीं शताब्दी में कपिलायन योग किस रूप में वर्तमान था, इसका आभास "भागवतपुराण" से मिल

सकता है। कपिल भगवान् ने अपने माता देवहूति को इस योग का उददेश दिया था। "भागवत" के तृतीय स्कंध के छब्बीसवें अध्याय से लेकर कई अध्यायों तक इसका विस्तृत वर्णन हैं। छब्बीसवें अध्याय में सांख्यशास्त्र के तत्ववाद का वर्णन है. फिर सताइसवें अध्याय से योग का वर्णन है। संक्षेप में भागवत में उपदिष्ट मत का सारांश यह है :-

परम पुरुष परमात्मा निर्गुण है, सुतरां अकर्ता और अविकार है। सूर्य जल में प्रतिविम्बित होने पर भी वास्तव में जल का धर्म जो चंचलता है व हिलना है, उसमें लिप्त नहीं होता।

हे मातः वही एक निगुर्ण आत्मा प्रकृति आदि चौबीस गुण समूह (सतोगुण युक्त मन आदि, रजोगुण युक्त इन्द्रियादि, तमोगुण युक्त पंचाभूतादि) द्वारा सज्जित हो कर अहंकार मय होता है। उसी अहंकार में मूढ होकर अपने को ही प्रकृति कार्यों का कर्ता मानता है। अतएव अवारा होकर प्रासांगिक कर्म के दोप से सत् (देय) असत् (तिर्यक) मिश्र (मनुष्य) योनियों में उत्पन्न होकर संसार पदवी को प्राप्त होता है। (अर्थात् जन्म मरण से दुःख से पीडित होता है (27-1-3)।

यम आदि योग मार्गों का अभ्यास करता हुआ श्रद्धा-पूर्बक मुझ में सत्य भक्तिभाव करे, मेरी कथाओं का श्रवण करे, सब प्राणियों को एक दृष्टि से देखे, किसी से बैर न करे असत्संग न करे, ब्रह्मचर्य और मौन (प्रयोजन भर बोलना) रहे, धर्म करे और उसे ईश्वरार्पण कर दे।

जो मिल जाय उसी में सन्तुष्ट रहे, उतना ही भोजन करे जिससे शरीर स्वस्थ रहे. मुनिव्रत का अवलम्बन करे, एकान्त में रहे, शान्त स्वभाव धारण करे, सबसे मित्रभाव रखे, दया और धैर्य धारण किये रहे। प्रकृति और पुरुष का तत्व दिखाने वाले ज्ञान का ग्रहण कर इस देह अथवा इसके संगी स्त्री पुत्रादि में मैं हूँ–मेरा हैं" इस असत् आग्रह को त्याग दें। बुद्धि के जागृत, स्वपन, सुषुप्ति इन अवस्थाओं को निवृत करके तुरीय अवस्था में स्थित हो। सबमें अपने को, अपने में सब को देखे. तब वह आत्मदर्शी पुरुष आत्मा से परमात्मा को प्राप्त होता हैं। जैसे चक्षु-स्थित (चक्षु के अधिष्ठाता) सूर्य) (वा तेज) द्वारा सूर्य का दर्शन होता है (अर्थात् चक्षु स्थित सूर्य द्वारा आकाश स्थित सूर्य की प्राप्ति होती है वैसे ही पूर्वोक्त निबम के पालन में अहंकारयुक्त आत्मा द्वारा शुद्ध आत्मा अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति होती है) इस अवस्था को प्राप्त पुरुष ब्रह्म को प्राप्त होता है। वह ब्रह्म सत् अर्थात् प्रधान

का अधिष्ठान है, और असत् जो माया का कार्य है उसके नेत्र को सदृश प्रकाशक है। कारण और कार्य दोनों में आधार रूप से अनुस्यूत है एवं अद्वय अर्थात् परिपूर्ण है : भागवत 27-6-11)

संसारी जीव देह में सर्वत्र ही ब्रह्म विराजमान है। उस ब्रह्म के तीन आवरण हैं। एक आवरण देह, इन्द्रिय और मन आदि है। दूसरा आवरण अहंकार है। इन्द्रिय मय देह में आत्मा का तेज जितना है उसकी अपेक्षा अहंकार वा चैतन्यमय देह में अधिक है। तृतीय आवरण प्रकृति है। आत्मा की प्रभा देखना हो तो वह आत्मा प्रकृति में जाज्वल्यमान रूप में देख पड़ता है। अर्थात् प्रथम (आत्मगत) आत्म बिंब को देहादिगत जानना होगा फिर आत्मसता को अहंकारगत बोध करना होगा, फिर वह दर्शक स्वमादगत प्रकृति से व्याप्त आत्मा का दर्शन कर सकने पर शुद्धब्रह्म के देखने में समर्थ होगा। इस सुषुप्ति अवस्था में सूक्ष्मपंचभू, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, इत्यादि तंद्रा व निद्रा द्वारा असन्तुल्य अव्याकृत प्रकृति में लीन, अर्थात् जडता को प्राप्त होने पर यह आत्मा विनिद्र अर्थात् ज्ञान रहित वा जडतारित एवं अहंकारहीन होकर अपने स्वरूप अर्थात् सच्चिदानन्द ब्रह्म को प्राप्त होता है। उस समय यह आत्मा साक्षीरूप से अवस्थित होकर अपनी

उपाधि (अहंकार) के नष्ट होने पर स्वयं नष्ट न होने पर भी अपने को नष्ट जानता है। जैसे धन के नष्ट होने पर आप ही मानो नष्ट हो गये, इस प्रकार आतुर होते प्रायः लोग देख पड़ते हैं। (भावगत 27-12-15) अपने धर्म्म का भक्तिपूर्वक यथाशक्ति आचरण, विरुद्ध वा निषिद्ध धर्म्म (अधर्म) निवृत होना, जो प्रारम्भ वा देव वश प्राप्त हो उसमें सन्तोष, आत्मत्व के जानने वाले ज्ञानियों के चरणों की सेवा पूजा। ग्राम्य अर्थात् धर्म्म, अर्थ काम इस त्रैवर्गिक धर्म्म से निवृत मोक्षदायक धर्म्म में रति, शुद्ध एवं मित (जितने में योगाभ्यास करने में कोई विक्षेप न हो उतना ही) भोजन करना; बाधा रहित निर्जन स्थान में रहना। हिंसा (शारीरिक, वाचिक, मानसिकहिंसा, अर्थात् दूसरे को मन, वाणी और काया से पीडित करना) न करना, सत्य बोलना, अन्यायपूर्वक पर धन न ग्रहण करना जितनी वस्तु की आवश्यकता है उतनी ही वस्तु का संग्रह रखना। ब्रह्मचर्य्य रहना, और तप, शोच (ब्रह्म व आन्तरिक), स्वाध्याय [वेद पाठ] परम पुरुष का पूजन करना। मौन [प्रयोजन से अधिक न बोलना], रहना आसन जीतकर स्थिर भाव से स्थिर होना, फिर धीरे-धीरे क्रम से प्राण वायु को जीतना, इन्द्रियों को मन द्वारा यिषयों को हटाकर अन्तःकरण में लीन करना, मूलाधार

आदि प्राण के स्थानों में किसी एक स्थान में मन सहित प्राण को स्थित करना, भगवान् की लीलाओं का मन में ध्यान करना, एवं मन को समाधि [एकाग्रता] में लगाना। इन सम्पूर्ण एवं इनके अतिरिक्त अन्य व्रत आदि उपायों में असत् [विषय] मार्ग में लगे हुए दुष्ट मन को क्रमशः बुद्धि द्वारा योग साधन में लगाना चाहिए एवं आलस्य त्याग कर प्राणवायु को जीतना चाहिये।

[यम,, नियम और आसन, इन तीन योग के अंगों को क्रमशः कहकर अब प्राणायाम आदि अंग कहते हैं तदनन्तर किसी पवित्र स्थल में आसनजित व्यक्ति आसन बिछावे। उस आसन पर स्वस्तिकासन से अथवा जिस आसन से सुखपूर्वक बैठ सके उस आसन पर बैठकर शरीर को सीधा करके प्राणापाम का अभ्यास करे। पहले पूरक बाहर के वायु को भीतर भरना [कुम्भक] उस वायु को भीतर रोकना [रेचक] उस वायु को बाहर निकालना इस तीन प्रकार के प्राणायाम से अनुलोम वा प्रतिलोम क्रम से चित्त को ऐसा शुद्ध करे जिससे वह अपने चंचलता दोष को त्यागकर एकदम शान्त हो जाय। जैसे वायु और अग्नि के ताव में सोना अपने मल को त्याग देता है वैसे ही बार बार प्राणायाम द्वारा श्वासजय करने से योगी का भी मन शीघ्र ही निर्मल हो जाता है। इसके अनंतर

समाधि के द्वारा स्वरूप, प्राणायामादि जो चार कार्य मनुष्य को करना चाहिए उन्हें कहते हैं–प्रथम प्राणायाम द्वारा कफ, पित्त आदि शरीर के दोषों को दूर करे, फिर धारणा (वायु के साथ मन को स्थिर करना) से मलं अर्थात् पातक को नष्ट करे फिर प्रत्याहार (सबसे हटाकर चित्त को ईश्वर में लगाना) से संसर्ग अर्थात् बिषय वासना को नष्ट करे, एवं ध्यान से रोग द्वेष आदि का त्याग करे। इन सातों अंगों के पश्चात् अन्तिम आठवाँ अंग समाधि (स्थिर मन की ऊपर ओर होने की निवृति) है। इस प्रकार जब मन भलीभांति निर्मल और योग द्वारा एकाग्र हो तब नासिका के अग्रभाग में दृष्टि स्थिर रख कर भगवान् की इस प्रकार की सुन्दर मूर्ति का ध्यान करे। (भागवत 27-1-12)।

मातः इस भांति ध्यान की आसक्ति से योगी को हरि में प्रेम होता है, भक्ति से हृदय परिपूर्ण होकर द्रवित हो जाता है। आनन्द के मारे रोम खड़े हो जाते हैं। दर्शन की उत्कंठा के कारण नेत्रों में आनन्द आंसू भर आते हैं। इस प्रकार मन वाणी से न ग्रहण करने योग्य निराकार हरि के ग्रहण करने की बंशी सदृश उपायस्वरूप उस साधक का चित्त क्रमशः ध्येय पदार्थ (अर्थात् उस कपिल हरि के रूप) से वियुक्त हो जाता है, अर्थात् सम्पूर्ण

विषयों से अतीत हो जाता है। (भागवत 27-34)

जननि ! इस संसार में प्राणी जैसे धन और पुत्र को अति स्नेहवश अपना मानकर भी अपने से भिन्न जा ता है, वैसे आत्मज्ञानीजन शरीरादि को आत्मा से अलग देखते हें। जैसे काष्ट की ज्वलन्त अवस्था धूम, अग्नि, शिखा ये तीनों ही अग्नि से उत्पन्न जान पड़ते हैं, पर अग्नि काष्ठ से और इन अवस्थाओं से भी अलग है। उसी प्रकार साक्षी आत्मा भी अग्नि के सदृश पंचतत्व इन्द्रिय, अन्त:करण और जीव से अलग है। जीवात्मा से ब्रह्मात्मा या परमात्मा पृथक है। इसी भांति प्रधान (माया स्वरूप तत्व समूह) से उनका प्रवर्तक साक्षी परमात्मा अलग है। [वही 27·38-40]।

यहि कपिल मुनि के उपदिष्ट योग का सारांश है। यह साख्यतत्ववाद पर आश्रित पातंजल योग का प्राणायाम प्रधान रूप है। प्राणायाम की महिमा इस योग में उसी प्रकार प्रतिष्ठित है जिस प्रकार हठयोग में। केवल इसमें भक्ति का मिश्रण है। इस प्रकार के योग मार्ग का कापिलायन सम्प्रदाय गोरक्षनाथ के झण्डे के नीचे आ खडा हुआ। निश्चय ही यह गोरक्षनाथ से पूर्व-वर्ती है। इस प्रकार वैष्णव योग की साधना भी इस मार्ग में अन्तर्भूक्त हुई है।

अध्याय–5 अलख उपासना खण्ड

कामड़ सम्प्रदाय में निर्गुण निराकार अलख की उपासना अनादि काल से चली आ रही है इसलिए कामड़ साधुओं को अलख उपासी साधु भी कहा गया है।

शैव सम्प्रदाय के गोरखनाथ भरतरी आदि की तरह कामड़ सम्प्रदाय के कई आचार्यों के भजनों में अलख की आरोधी वाणियां प्रचलित हैं। बाबा रामदेवजी के अवतार से पूर्व कामड़ साधु अलखजी के मन्दिरों की पूजा करते थे जो अब तक कई स्थानों पर निरन्तर करते आ रहे हैं जिसमें मेवाड़ में अलखजो का अडाणा मन्दिर, सगरेव, साकरड़ा, बाण्डा, सैलागुडा वस्सी भादा की चन्देरिया अलखजों की धूणी अजमेर व मारवाड में जुन्जाला, जेतगढ कडैल मझेवला बाली इत्यादि कई प्रसिद्ध मन्दिर अभी तक मौजूद हैं।

अलख का अर्थ :–

अलख से आशय जिसको लखा नहीं जा सके अर्थात् जो इन्द्रियातीत है।

प्रमावृत्ति 6 प्रमाण सहित प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द प्रमाण अर्थापति प्रमाण अनुपलब्धि प्रमाण।

अप्रमावृति = जिसमें उपरोक्त 6 प्रमाण नहीं हैं।

जैसे कि सन्त कबीर के इस पद से भी स्पष्ट होता है–

सन्तो सतगुरु अलख लखाया
परम प्रकाशक पुन्ज ज्ञान धन घट भीतर दर्शाया ।। टेर ।।
मन बुद्धि वाणि नहीं जानत, वेद कहत सकुचाया
अगम अपार अथाहा अगोचर नेति नेति जेहि गाया ।।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मा के वो प्रभू हाथ न आया
व्यास वशिष्ट विचारत हारे कोई पार नहीं पाया
तिल में तेल काष्ठ में अग्नि, घृत पय माहि समाया
शब्द में अर्थ पदार्थ पद में, सुर में राग सुनाया
बीज में अंकुर तरु तरु अरु शाखा पत्र फूल फल छाया
ज्यो आत्म में है परमात्म ब्रह्म जीव और माया ।।
जप तप यौग व्रत अरू पूजा, सब जन्जाल छुडाया
कहे कबीर कृपालु कृपा कर निज स्वरूप परखाया ।।

अलख के एक चरण की पूजा का महात्म्य :-

राजा बलि के द्वारा पर भगवान् के वामन अवतार रूप धारण कर तीन पांव पृथ्वी मांगी इस सम्बन्ध में लिखमाजी माली का पद्य इस प्रकार है :-

पहला पांव धरयो परमेश्वर सत जुंजाला गुसाई
दूजा पांव धरयो अन्नदाता मक्का मदीना माही
तीजो पांव बलि के माथे सत पाताल पठाई
वामन अक्तार के तीन पांव जमीन मांगने को बसि नहीं जान सका तीसरे पांव से बलि पाताल गया तब कहा

आपकी गति कोई नहीं जान सका आ तो अलख है..... अलौकिक कहते हैं त्रिदेवों ने भी पाबाल जा कर एक चरण की पूजा की चरण प्रक्षालन कर व्रह्माजी ने कमण्डल में जल लिया जो गंगा के रूप में अवतरित हुआ। जिन चरनन से निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई इस पद्य में भी चरण पूजा का महत्व बताया गया है।

इसी प्रकार वामन अवतार ने जो पहला चरण जुन्जाला में रखा उसे अलख चरण के रूप में पूजा जाता जाता है तथा भारत के कई अन्य स्थानों में अलखजी के एक चरण की पूजा होती है।

मक्का मदीना में भी कहते हैं कि एक चरण की पूजा किसी अन्य रूप में होती है।

अलख को क्यों जाना जाये :-

मानव में जीव और ब्रह्मा के रहस्य को जानने की लालसा इसलिए रहती है क्योंकि जीव की उपस्थिति का प्रमाण तो उसे सामान्य बुद्धि से मिल जाता है व्रह्मा की उपस्थिति का प्रमाण तो उसे सामान्य बुद्धि से मिल जाता है व्रह्म की उपस्थिति के लिए उसे विशेष प्रयास करने होते हैं। और यही ब्रह्म जिसे शुद्ध चेतन कहा गया है

इसी का संसार सकल पसारा है उसको जानने के लिए आगम वेद व निगम वाणियों की शाखा है जिससे कर्म उपासना व ज्ञान द्वारा अलख को जानकर जगत् के प्रपन्च से मोक्ष प्राप्ति हेतु अलख की उपासना की जाती है। जीव ओर ब्रह्म की एकता स्थापित करने को भी अलख उपासना कहा गया है। मानव शरीर में जिन तत्वों का जिस मात्रा में आभास होता है ब्रह्माण्ड में भी वे तत्व उसी मात्रा में पाये जाते हैं इनमें अबाध व निरन्तर सम्पर्क जारी रहता है। जब किसी कारण से इस सम्पर्क में व्यवधान उत्पन्न होता है तब मानव पोडित होता है उसे तीनों ताप आध्यात्मिक आदिभौतिक व आधिद्वैविक ताप सताते हैं अलख उपासना की साधना इन व्यवधानों को दूर कर जीव ईश के सम्बन्ध में मार्ग को प्रशस्त करती है। साधु सम्प्रदाय का यह सामान्य कार्य है कि इस गहन विषय की जानकारी का लाभ सामान्य जन मानस को पहुँचावें। जिससे मानव समाज के अस्तितत्व, सभ्यता व संस्कृति का विकास हो।

अध्याय–6

रामदेव खण्ड

1. अवतार विवेचना :–

अवतार की परिभाषा :–

अवतार शब्द दो शब्दों अव+तार से बना है अव यानि अवनि या धरती तार यानि तिराना इसका अर्थ हुआ धरती जब पापाचार में डूबने लगती है तब उसे तिराने के लिए अवतार होता है। जैसे गीता के चौथे अध्याय के 7 व 8 वें श्लोक में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है–

"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानंसृजाम्यह्म
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।"

हे भारत जव जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूं अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होना हूं।

साधु पुरूषों का उद्धार व पापकर्म करने वालों का विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिए में युग युग

में प्रकट हुआ करता हूँ। इस प्रकार से विष्णु के 24 अवतार माने जाते हैं जो निम्नलिखित हैं–

नर नारायण नारदा हरि हंस हयग्रीव,
कपिल दत्त बुद्ध मोहिनी
राम जानकी पीव ऋषभदेव यज्ञपुरूष धनवन्तरि प्रकाश
कच्छ मच्छ वाराह सिंह सुर, वामन परशु व्यास
कृष्ण ओर सन्त कुमार कल्कि काल के काल
रत्न धरणी से लेन की पृथु निकाली चाल ।।

अवतार दो प्रकार के होते हैं एक नित्य अवतार दूसरा निमित्त अवतार नैमितिक अवतार तीन प्रकार के होते हैं–

1. पूर्ण अवतार 2. अंशावतार 3. कला अवतार

नित्य अवतार सन्त होते हैं। कलियुग में विक्रम संवत् में रामदेवजी के अवतार के समय के बारे में कई लेखकों ने अलग अलग तिथी लिखी है।

आपका जन्म तिथि भादवा सुदी दोज (बीज) संवत् 1409 को बाढमेर जिला अन्तर्गत उण्डू गांव मे ठाकुर अजमालजी के घर हुआ।

तँवर वंश के मायने अनंग पाल नरेश
दिल्ली तक्थ के उपरे निशिदिन तपे हमेश
पृथ्वीराज को राज दिया बसे नारणा धाम
वहाँ पर उनके पुत्र भया, अम्ब धरायो नाम
अम्ब के रणा भया सन्तों के सिर मोर
सत का करोत सिर पर लिया है सन्ता में सिर मोड
रणसी के दो पुत्र भया, अजमज अरू धनराज
उण्डू कामीर के मायने, अपनों जमायो राज
धनराज के दो पुत्री भया, अजमल के नहीं सन्तान
इस कारण यह कथा बणी, सुणो सज्जन धर ध्यान

इस प्रकार रामदेवजी अजमालजी के घर अवतार लिया। अजमालजो के पिता रणसिंहजी ने समस ऋषि को लूटा, समस ऋषि के श्राप से रणसि को कोढ हुआ। समस ऋषि की सेवा से उनका शरीर अच्छा हुआ। इस प्रकार समस ऋषि को रणसी ने अपना गुरूधारण किया।

समस पीर गुसाईजी के शिष्य थे जिससे कामड़ सम्प्रदाय के समसाणी धूणी के कई परिवार आज भी पाये जाते हैं। इसी प्रकार समस पीर रणसिंह के गुरु होने से तँवर वंश से कामड़ सम्प्रदाम के साधुओं का सम्पर्क हुआ। कामड़ों की चार धुणियों में समस पीर समसाणी धूणी के मुख्य आचार्य माने गये हैं।

अजमालजी के समय काल में जैसलमेर के भाटी उगमसिंहजी महान् सन्त हुए इनके शिष्य रावल मालदे जैसल तोला अजमालजी देवु मद्धा रामदास आदि प्रसिद्ध महापुरूष हुए। उगमसिंह भाटी की प्राप्त कथाओं से यह सिद्ध होता है कि यह कामड़ साधों के आचार्य थे और इनके सत्संग में कई कामड़ इनके साथ रहते थे। अपने पूर्वजों की तरह ही रामदेवजी ने भी कामड़ साधु सम्प्रदाय को मान्यता दी तथा भाटी उगमसिंह की तरह कामड़ सन्तों को साथ लेकर छुआछूत को मिटाने के लिए समाजों में सत्संग व धर्म का प्रचार किया।

श्री रामदेवजी को विष्णु का अंशावतार माना जाता है जिससे आपने कई चमत्कारिक घटनाओं से तत्कालीन समाज को प्रभावित किया और इन घटनाओं की कई कथाओं का प्रचलन हुआ जिसमें 24 प्रमाण 16 सायलें आरोधि वाणियां व 24 पर्चे शामिल हैं।

इन उपरोक्त कथाओं का जन जन में प्रचार करने के लिए उस समय कोई दूरदर्शन या रेडियो का साधन नहीं था तब कामड़ सन्तों ने हिन्दुस्तान के कोने कोने में जाकर बाबा रामदेवजी की कथाओं का प्रचार किया जिससे गां गांव में बाबा के मन्दिर बनें तथा इन मन्दिरों की

पूजा प्रतिष्ठा हेतु कामड़ सन्तों को नियुक्त किया गया तत्कालीन राजाओं व बादशाहों ने जागीरें निकाली। रामदेवजी के साथ साथ जन मानस पर कामड़ सन्तों का भी प्रभाव बढा। रामदेवजी की अद्वैत सिद्धान्त के प्रचारक महापुरुष थे जिन्होंने छुआछूत पर उस युग में कठोर प्रहार किया। आज दिन तक बाबा के मेले में हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई बिना भेदभाव के आते हैं व चमत्कार से लाभान्वित होते हैं।

रामदेवजी ने अपने पूर्वजों की तरह कामड़ सम्प्रदाय के नियमों व सिद्धान्तों का अध्ययन किया व इसे मान्यता दी क्योंकि रामदेवजी अद्वैत सिद्धान्त को मानने वाले थे व कामड़ सम्प्रदाय भी अद्वैत सिद्धान्त को मानने वाले हैं परन्तु जैसा कि हिंगुलु खण्ड में लिखा गया था कि ल लू के छोटे भाई जसराज कामड़ ने महादेवजी से वीणा जन्तर व भगवा लेकर प्रण लिया था कि वह शिव सम्प्रदाय के नाथ गोस्वामियों से ही सम्पर्क रखेगा अन्य से नहीं इस प्रकार रामदेवजी से पूर्व जसराज की सन्तान वाले स्वर्णनाथ व गोस्वामियों के सम्पर्क में रहे। जिसका प्रमाण इसके बड़े बड़े मठो यथा उज्जैन, डीसा, राजपुर गहलपुर नगर ठठा हीराव सारण आसरडाई व्योपारी जिलोलाव लादवास आदि में हजारों वर्षो पूर्व से जाते

आते रहे हैं जिनके पट्टे ताम्र पत्र उपलब्ध हैं तथा वहां भी उनका नाम दर्ज है। इस प्रकार रामदेवजी ने देखा कि अद्वैत मत के प्रचार से छुआछूत को मिटाया जा सकता है तब कामड़ साधुओं को विशेष आह्वान कर निम्न जातियों में इसका प्रसार करने हेतु लगाया। रामदेवजी के कामड़ों को समर्थन देने से इनके राजपूत रिश्तेदार इनको भी कामड़ कहने लगे तथा निम्न जातियों के उत्थान के द्वेष से रामदेवजी को कहीं पर देवों का देव कामड़िया भी कहा गया। इन सब बातों को सहन करते हुए भी इस मत का प्रसार निरन्तर होता गया आज दिन तक हिन्दुस्तान की कई जातियों में कामड़ साध सतसंग व अद्वैत सिद्धान्त द्वारा इस अछूतोद्धार के कार्य को करते आ रहे हैं।

अछूतोद्धार के कार्य करने का वचन देने से पूर्व बाबा रामदेबजी ने कामड़ साधों को यह भी वचन दिया कि जहां भी मेरी आरोधी वाणी द्वारा मुझे याद करोगे वहां पर में अदृश्य शक्ति द्वारा कार्य सिद्ध करने के लिए अवश्य आऊंगा। यह मेरा वचन है। और देखने में भी यह आया है कि जो कामड़ साध पूरे मन से बाबा को याद करता है उसके लिए बाबा जरूर चमत्कार दिखाते हैं इसके कई प्रमाण उपलब्ध हैं जो सातवें अध्याय में उल्लेख किये गये हैं।

अध्याय–7

कामड़ समाज खण्ड

1. कामड़ शब्द परिभाषा

कामड़ शब्द का निर्माण का+अम्ब+ड से हुआ है अम्ब का अर्थ मा या जल से होता है इससे पूर्व का लगने से काम्ब हुआ इसका अर्थ छडी हुआ स्त्री संज्ञा, इसे पुरुष संज्ञा वनाने हेतु ड़ प्रत्यय लगा है इस प्रकार काम्बड़ से आशय अम्बा के छड़ी दार से है जो दूर दूर जाकर हिंगलाज माता के मत का प्रचार करते हैं।

2. कामड़ साधुओं की विशेषता :–

इस सम्प्रदाय के साधुओं की विशेषता के बारे में मह पद्य प्रचलित है "कामड होय काम बस राखे, काया कसे करारी धोखा मेट घण्या ने ध्यावे करे अलख से यारी।"

यानि वह पुरुष कामड़ है जो अपने कामनाओं को नियन्त्रण में रखता है तथा अपने शरीर को योगाभ्यास से मजबूत बनाता है तथा संसार में निडर होकर घूमता है तथा मित्रता केवल अलख से करता है।

ऐसा ही एक श्लोक भी प्रचलित है :–

यतेन्द्रीय ब्रह्मचारी विषयासक्त वर्जितम् ।
जयति कामड़ कामं, प्राणायाम परायणम् ।।

यानि जो इन्द्रियों को निग्रह कर ब्रह्मचारी होकर विषय बासना का त्याग करता है कामदेव को जीतने वाला कामड़ प्राणायाम में पारंगत होता है ।

कामडों की वेशभूषा :-

शिव सम्प्रदाय के अन्य अनुयायी यथा नाथ व गुसाइयों की तरह ही कामड़ साधु का वेश भगवा कमीज भगवा रजपूति गोल साफा धोती जड़ाऊ मोचड़ी रुद्राक्ष पंच केशी जटा चिमटा सैली सिंगी धागा तुम्बी खप्पर धारण करते थे ।

3. कामड़ सम्प्रदाय की प्राचीन चार धूणियां :-
1. समसाणी 2. मालाणी 3. हरचन्दाणी
4. रामदेवाणी इसके अलावा नाथाणी भी है ।

समसाणी धूणि का वृतान्त :-

कामड़ सम्प्रदाय के महान् आचार्य समसपीर जिसको अरबी में समसु तवरेज भी कहते हैं । तथा इसके बारे में कहा जाता है कि मुलतान के बादशाह का शहजादा खुदा के हवाले हो गया उसने सुन रखा था कि पीर पेगम्बर

ओलिया साधु, मुर्दे को जिन्दा कर सकते हैं तो उसने भारत के सभी पीर, पैगम्बर एवं साधुओं से सम्पर्क किया। उन संतो में मृतक मनुष्यों को जीवित करने की सिद्धि कामड़ साधुओं को प्राप्त थी। इस भैरव के कुछ संत मृतक को पुनः जीवित करने की विद्या में भीं पारंगत थे। इन्हीं में से उस स्थान (मुलतान) पर समस पीर को भी आमन्त्रित किया गया।

एकत्रित समस्त संत मण्डली ने समस पीर से आग्रह कि हम सब सन्तों में से आप ही इस कठिन कार्य को करने में समर्थ है तो समसपीर ने मुर्दे से कहा हे शहजादे खुदा के हुक्म से उठ जा मुर्दा उठा नहीं तो उन्होंने कहा हे शहजादे मेरे हुक्म से उठ जा तो वह मुर्दा उठ खड़ा हुआ।

इसलाम में चार मत हैं तो :-

1. हकीकत 2, मार्फत 3. तरीकत

4. शरीयत के नाम दिये जाते हैं। समस पीर को हिन्दू मुस्लिम दोनों मान्यता देते थे हिन्दू इन्हें समसपीर मुसलमान समसतबरेज कहते थे।

शरीयत के पाबन्दों ने समसु तबरेज पर आरोप लगाया कि बन्दा खुदा नहीं हो सकता यह खुदा से बढकर हो गया इसने अपने हुक्म से मुर्दा जीलाया है।

ऐसे काफर की खाल खेच लेना उचित है। मुलतान के बादशाह ने अपने जल्लादों को कहा "समसपीर की खाल उतार ली जाये।" जल्लादों को कहा तो समसपीर ने स्वयं ही चोटी पकड कर अपने पूरे शरीर की खाल उतार कर जल्लादों को सौंप दी।

इसके पश्चात् समसपीर ऐसे ही पूरे शहर में घूमने लगे। सभी लोग भयभीत होकर मकानों के दरवाजे बन्द कर लेते। किसी ने भी उन्हें खाने पीने को अन्न जल नहीं दिया।

अन्त में कसाई ने माँस का टुकड़ा दिया और उन्होंने कसाई को यह आशीर्वाद दिया कि खुदा तुम्हें बरकत देगा और कम मत तोलना। जब सैकने जरूरत पडी तो किसी ने सैका तक नहीं तथा उनको देखना भी नहीं चाहा। उनके शरीर पर मक्खियां बैठ बैठ कर कीटाणु पैदा कर गई। अरबी भाषा में सूर्य को भी समस कहते हैं। बाबा समसपीर ने सूर्य से कहा :-

तु भी समस मैं भी समस मेरा कार्य कर दें।
यह मांस का टुकडा सैंक दे।।

सूर्य नीचे आ गया जिससे उसका बदन व मांस का टुकड़ा भी सिक गया। बदन के सभी किटाणु नष्ट हो गये। चमड़ी वापस बन गई। परन्तु जनार्दन गर्मी से

घबराकर त्राहि त्राहि करने लगी। स्त्री ने बादशाह के पास जाकर फरियाद की तब बादशाह ने समसतबरेज से माफी मांगी।

समसपीर के शिष्य दादा रणसीहजी व खीवणजी हुये रणसिंहजी तँवर जो अजमालजी के पिता बाबा रामदेवजी के दादा थे और तँवरों के घर में पीराई आई। उसी समसु तबरेज की विद्याबल के प्रताप से वंश परम्परा के अनुसार शक्ति एवं सामर्थ्य रामदेवजी को प्राप्त हुआ और बाबा रामदेवजो भी रामसा पीर के नाम से जाने लगे।

सियाज इन इण्डिया पुस्तक के पेज सं. 353 के अनुसार निजारी मिशनरी पीर समस अलदीन ने काश्मीर की यात्रा की काश्मीर से "उच्च" मुलतान से लगभग 80 मील दक्षिण में व भावलपुर स्टेट के जेतपुर के पास 'उच' नामक स्थान के बादशाह के लडके को जिन्दा किया इसके शिष्य समसी के नाम से मुलतान गुजरावाला रावलपिंडी डेरागाजी खा और इनके आसपास के इलाकों में भी पाये जाते हैं। समसपीर की मृत्यु 757/1356 में हुई जिसकी समाधि उच में है।

दिल्ली सुलतान फिरोजशाह ए. डी. 1351–1388 का का शासन था।

समस ऋषि (समस पीर) का वृतान्त महात्मा गोकुलदासजी ने मेघवंश इतिहास के पेज सं. 147 से 163 तक विस्तार रूप से दिया है। इसका समय वि.स. 1250 के आसपास बताया है तथा लिखा है कि ये अलखजी के एक चरण की पूजा और अजमालजी की धूणि की सेवा करते थे।

पेज सं. 151 पर लिखा है कि–

कडैल मझेवजा जुंजाले जैतगढ़, पूजे कामड़ भेरव
पंडित पीर और क्रोड कामड़ पूजे सदा अलेख
पीर पंडित और क्रोड़ कामड़ चारो धूणि का साध
रामनवाणी, हरचन्दवाणी, मालाणी समसवाणी आद
शिव शक्ति का जम्मा जगावे निरन्जन जोत जगावे
तन से मन से अलख आरोधे मन वांछित फल पावे
ठाठ पाट कलश और कँवली बेल कामङ भेरव
बीणा नाद सदा और भँगवा दीना सत्य अलेख
जमला जोत और भेष अलख को चारों जुगा के माँई
उल्टा दास "सदाजी" सुल्टा सत्य अलख फरमाई
पाँव अलख को शिर पर धर कर मारग द्वार सिधाया
धूणी अजयपाल नगर बीचूणी पहाड़ा ध्यान लगाया
समस ऋषि जी आकर ठहरया जहा है गांव बचूणी
आसण सिद्ध लगाकर बैठा, तपे ऋषि जी धूणी

उपरोक्त पद्य से कामड़ साधुओं की चारों धूणियां, कामड़ सन्तों के कार्य शिवशक्ति का जम्मा जगाना दास शब्द महिमा अलख पूजा जमला जोत आदि का विशद वर्णन मिलता है तथा समस ऋषि के प्रभाव का उनके तपस्या स्थलों का पता चलता है।

2. मालाणी धूणी का वर्णन :–

मेवागढ बालोतरा के पास जिला बाडमेर कामड सम्प्रदाय के महान् आचार्य उगमसीजी भाटी की शिष्या राणी रूपादे की कथा पूर्व अध्याय में दी जा चुकी है। रूपादे की थाली में फूलों का ढेर का चमत्कार देख रावल मल्लीनाथ जो कठोर शासक था। सन्त बन गया इनकी परम्परा से कामड़ सम्प्रदाय में मालाणी धूणी की स्थापना हुई इस धूणी के कई कामड़ साधु परिवार आज भी सभी प्रान्तों में पाये जाते हैं कहा गया है :–

थावर बीज चेतरी मेलो मिलसी कामड़ क्रोड़
माणक बक्षे माल सुलखे रा पीरो अर्ज करे कर जोड़

कहते हैं एक बार दिल्ली भयंकर अकाल पड़ा जिसमें मालजो ने अपनी तपस्या बल से वर्षा कराई जिसकी एक कथा 'मालजो का मेला' नाम से प्रसिद्ध है:–

माला :–

गढ रूणिजा से चढ़िया राम दे हरबू पाबू मेहा
मल्लिनाथ मालजी चढिया दिल्ली बर्षाया मेहा ।

3. हरचन्दाणी धूणी :–

इसका स्थान ढालोप है हरचन्द पीर महात्मा खीवणजी के गुरूभाई जयमलदासजी के शिष्य थे इन्होंने वि. सं. 1725 के लगभग ढालोप परगणा देसूरी (घाणेराव) इलाका सिरोही में जीवित समाधी ली इनकी पीढी के सेकुदास कामड़ ने इस स्थान को प्रकट किया ।

इस धूणी को मानने वाले लगभग 40 गांव के कामड़ हैं ।

रामदेवाणी धूणी :–

रामदेवाणी धूणी के आचार्य स्वयं श्री रामदेवजी महाराज हैं । जिनका पूरा वृतान्त रामदेव खण्ड में दिया गया है । कामड साधुओं के लगभग 250 घर इस धूणी से सम्वन्धित हैं जो सब प्रान्तों में पाये जाते हैं ।

नाथाणी धूणी :–

यह धूणी नाथ सम्प्रदाय के अलग अलग क्षेत्रों में बने मुख्य मठों से सम्बन्धित है । जिनमें मेवाड़ में सारण अजमेरा में गेहलपुर मठ से सम्बन्धित है नाथाणी धूणी के

कामड़ अपने नाम के साथ नाथ शब्द लगाते हैं यह इनकी पहचान है।

इन पांचों धूणियों के कामड़ साधों का आपस में सामाजिक व्यवहार होता है तथा अन्य रश्म रिवाज भी एक जैसा है।

ये धूणियां प्राचीन कास की है जब कामड़ सन्त देश देशान्तर में भ्रमण किया करते हैं इन स्थानों पर वर्ष में एक बार आकर अपने कई पारिवारिक व सामाजिक कार्य निपटाते थे। बाद में इनका स्थान चौकियों में बदला तथा कालान्तर में कामड़ सन्त भी घुम्मकड़ प्रवृति को छोड स्थान विशेष पर रहने लगे जिनसे उनकी अपनी अलग धूणियां बनी। इन्हीं उप धूणियों का आगे विस्तार से वर्णन किया गया है।

नीमेडा बाबा धेनदास की धूणि :-

लेखक स्वयं इस धूणि का वंशज है। जैसलमेर भाटी राजपूत वंश से संन्यास ग्रहण कर धेनसिंह ग्राम नीमेड़ा तहसील फागी जिला जयपुर में विक्रम की पन्द्रहवी शताब्दी के लगभग आये। जयपुर महाराज सवाई जयसिंह को अपने तपोबल से चमत्कार दिखाया। कहते हैं आसपास के गांवों से अनाज लाठ कर कामदार 8-10 बैलगाडियां

भर कर जयपुर ले जा रहा था । मार्ग में बाबा धेनुदासजी अलख धणी व अजयपालजी की उपासना कर रहे थे । जिससे बैल चमक रहे थे व आगे नहीं बढ रहे थे तब कामदार ने जाकर महात्मा को वहां से हटाने व जयपुर महाराज का जोर वताया । तब बाबा धेनदास ने कहा हम भी पूर्व में राजा थे अब महाराज हैं । तुम्हारा राजा जनता से चुंगी (लाटा) वसूल करता है परन्तु उस धरमपिता अलख को क्या देता है । तुम्हें भी अलख के नाम का निकालना होगा बात बढी तव कामदार ने जबरदस्ती कर गाडियों को बढाना चाहा पर क्या चमत्कार कि बैलगाडियाँ एक इन्च भी आगे नहीं बढ सकी । तव जयपुर महाराज की सूचना भेजी । महाराज सपत्निक नीमेडा आये व महात्मा की इच्छानुसार वहां बावडी व अलखजी के मन्दिर निर्माण प्रारम्भ करवाया तथा इनको निरन्तर व्यवस्था हेतु पुजारी के व्यक्तिगत नाम से पट्टा जारी किया । इस मन्दिर के पुजारी धेनदास के पुत्र कुशालदास बनें । इनके वशंज इस प्रकार है:—

1. धेनदास 2. कुशालदास 3. जोगीदास
4. बिहारीदास 5. नानूदास 6. रूपदास
7. नाराणदास 8. पदसादास 9. भेरदास (इनके

नाम जारी पट्टा वि. सं. 1913 का मूल पट्टा लेखक के पास है ।)

10. मंगलदास 11. नाथूदास 12. नन्दादास

13. ओमप्रकाश (स्वयं लेखक) ।

नीमेडा ग्राम में बाबा धेनदास की जीवित समाधि बनी हुई है । इस स्थान पर आज भी कई लोगों की मनौतियां पूर्ण होने से लगभग सभी जातियों के लोग यहां आते रहते हैं तथा कई प्रकार के चमत्कार इस स्थान पर होते रहते हैं ।

धेनदासजी के पुत्र कुशालदास के बारे में एक लोक कथा भी प्रचलित हुई है कहते हैं कि कुशालदास मन्दिर में पूजा कर रहा था तब साँप ने उसे डस लिया वाबा धेनदास तब बहुत वृद्ध हो चुके थे उनकी नजर कमजोर हो गयी थी तब उन्हें पता चला कि कुशालदास साँप के डसने से मर गया है तब अपना वीणा व मृत शरीर को लेकर पास ही बह रही मासी नदी के खाल में गये तथा अपनी वेदना अलख धणी से भजन गा कर कही तब स्वयं अलख पुरूष वहां ब्राह्मण के रूप में आकर उनको समझाया :–

पद्य :–

धेना रे आप अडिग सारी दुनियां डिगसी
धूजी का आसण अडिग हुआ धेनदास मत कर
मन में गारबो इण गेले संसार गया ।।1।।

धेना रे चन्द्रमा चरा की ज्योंके भाण रसोडे,
इन्द्र परीन्डा में नीर भरे रे
पवन पुत्र ज्यांकी लंका वुहार बेमाता ज्याकं कोदयु दले रे
राम रूस्या जद रावण मारिया एसा जोधा फेर न हुआ रे
धेनदास मत कर मन में गारबों
इण गेले संसार गया रे ।।2।।

सैस पुत्र राजा सगर के होता, नया नीर से दांतण कराता
राम रूस्या जद सेंस मनाया एसा जोधा फेर न हुया ।।3।।

मोर मुकुट हर के छत्र बिराजे काना में कुण्डल झलक रिया
मरिया बालक हुया जीवता चरणा माहे आय पडया
धेनदास समाधि लीना,
ग्राम नीमेडा के पछिम दिशा रे ।।4।।

उपरोक्त प्रचलित पद्य व हरिद्वार के पण्डों के पास लिखे हुए लेख से उपरोक्त घटना का प्रमाण मिलता है अपने पुत्र के जीवित हो जाने पर धेनदासजी ने नीमेडा में

ओवित समाधि ली । तनके समय में इनके पांच शिष्य भी नीमेडा में जीवित समाधियां ली जिनमें खुशला पीर के नाम से एक समाधि तो अभी तक प्रसिद्ध है ।

सवाई जयसिंह ने जयपुर से चित्रकार भेज कर मंदिर के मण्डप में चित्रकारी कारवाई जो आज दिन तक मौजूद है । अन्य कामड़ सन्तों की तरह इनके वंशज भी देश प्रदेश में भ्रमण करते थे जिससे मूल पट्टा सवाई जयसिंह के समय का कही गुम हो गया तब भेरदास अपने भाई (रामचन्द्र) रामनाथ को लेकर तत्कालीन जयपुर महाराजा माधोसिंह द्वितीय के पास गये तथा दूसरा पट्टा विक्रम सं. 1913 में लिया जिसमें लिखा गया है कि पहले का पट्टा खोया गया वताया इस कारण दूसरा पट्टा जारी किया गया । बाबा रामदेवजी ने गुसाईजी को अलख धणी मानकर आराधना की है तथा बाद के सन्तों ने बाबा रामदेवजी के चमत्कार से प्रभावित हो अलख का अवतार मान कर आराधना की है । बाबा रामदेव की प्रतिमूर्ति के रूप में पूजा है । वंश परम्परा से उपरोक्त धूणि की पूजा लेखक के वंशज करते आ रहे हैं । उपरोक्त मूल पट्टा लेखक को वंश परम्परा विरासत में मिला है ।

प्राचीन काल में यहां धेनदासजी की छतरी बनी हुई

थी जो टूट गई बाद में चबूतरा बनाया गया है। प्रतिवर्ष भादवे के महिने यहां से निशाणा (झण्डा) रामदेवरा जाता है तथा भादवा में इस समाधि को पूजने लोग दूर-दूर से आते हैं।

लेखक के स्वयं सहित पांच भाई है। परिवार के अन्य सदस्यों का वर्णन:-

1. स्व. रामस्वरुपजीं 2. कैलाशचन्द्र 3. दुर्गादास

4. ओमप्रकाश 5. सीयाराम

1. रमेशचन्द्र अध्यापक है।

1. ब्रजमोहन 2- कु. अलका 1. अशोक

2, गणेश (अभिकर्ता) 2. श्याम 2. सुनील भाटी 2. मनीस

3. घनश्याम स्नातक पढ रहा है 3. सुनीता

4. मपावीर मिडिल में पढ रहा है

रमेशचन्द्र के 1. भरत 2. प्रवीण

1) स्व. श्री रामस्वरूप का विवाह सोकलिया की गुलाबदेवी ब्राह्मण के साथ हुआ।

2) कैलाशचन्द का विवाह गोरधनपुरा की रामेश्वरीदेवी पंवार के साथ हुआ।

3) दुर्गादास का विवाह भीलवाडा की पारवती पनवा के साथ हुआ ।

4) सीयाराम का विवाह बिलोटा की सुमित्रा बुवाल के साथ हुआ ।

5) रमेशचन्द का विवाह मकराना की सुशीलादेवी चौहान के साथ हुआ ।

6) गणेशराम का विबाह उणियारा नि. सुशीलादेबी सुरेला से हुआ ।

लेखक का विवाह ग्राम डोहरिया के श्री हीरादासजी फनवा की पुत्री ललिता देवी के साथ सन् 1980 में हुआ। विवाहोपरान्त लेखक ने स्नातक एम. काम. बी. एड. की शिक्षा ग्रहण की अध्यापक पद पर कार्य किया । रेल्वे विभाग में माल बाबू पद पर कार्य किया । वर्तमान में भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा केकडी में उच्च श्रेणी सहायक पद पर कार्यरत है । लेखक अपनी जीवन यात्रा की सफलता के पीछे अपने माता पिता के आशीर्वाद व दृढ निश्चय तथा ईश्वर प्रेरणा को मानना है ।

सांकरडा राछेटी धूणी का परिचय :-

अलख स्थान साकरडा का परिचय :-

लगभग 13 वी शताब्दी के अन्तर्गत एक सेकाजी नाम का रेबारी सेलागुडा गांव का तह. आमेट जिला राजसमन्द का रहने वाला था जिसकी सांडियां महाराष्ट्र में चराने के लिए गये थे एवं महाराष्ट्र सरकार ने सभी ऊँट जब्त करके ऊँट चराने वाले ग्वालों को वहां बन्द कर दिया था। इधर सेकाजी व पीथाजी दोनों भाइयों को पता चलने पर सेलागुडा से चलकर 12 किमी. पूर्व दिशा में साकरडा गांव के पूर्व में कालामगरा पहाड है जिसके टीले पर एक चट्टान व खरणी का वृक्ष था उस वृक्ष की छाया में विश्राम किया और अपने इष्ट से मन में संकल्प किया कि हे अलख बावा यदि मेरे ऊँट इस कालमगरा के पास आकर मुझे मिल जाये तो मैं इसी पहाड़ के इस टीले पर आपका मंदिर बनवाऊँगा ऐसा संकल्प करके वही सो गये। तत्पश्चात् स्वप्न अवस्था में एक संत ने आकर कहा हे भक्त आज के सातवें दिन इसी पहाड़ के पास आपके ऊँट मिल जायेंगे जिससे उन्होंने सातवें दिन का इन्तजार करना शुरू कर दिया इधर किसी अदृश्य शक्ति ने महाराष्ट्र सरकार को सभी ऊँटों को मय ग्वालों के सम्मान के साथ वापस छोडने को मजबूर कर दिया जिससे ठीक सातवें दिन, दिन रात चलते हुए ऊँट एवं ग्वाले सांकरडा की पहाडी के पास पहुँच गये। दोनों

भाइयों को ठीक सातवें दिन ऊँट और ग्वाले सलामत पाये जाने पर खुशी एवं आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा तत्पश्चात् उसी स्थान पर उन्होंने अलखजी महाराज का मन्दिर बनवा कर अलखजी महाराज के चरण स्थापना करवायी। उस मन्दिर की पूजा करने के लिए पास के गांव राछेटी जहां पर सुजानदासजी नाम के कामड़ सन्त रहते थे जो कि मारवाड़ के सारण मठ के चंचलवनजी के अनुयायी थे। सुजानदास के दो गुरु भाई थे जिसमें एक छोटे भाई तुलसीदासजी को सांकरडा मन्दिर की पूजा करने के लिए सांकरडा लाये गये। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा में उदयपुर के महाराजा श्री सरूपसिंहजी ने 7 बीघा जमीन डोली के रूप में दी जो आज भी इसी स्थान के पास स्थित है। कई वर्षो तक सांकरड़ा पूजा करते रहे उनके दाद मुगलों के शासन काल में व शासकों को वहुत परेशान किया गया और मशानियां योगियों से पीछा करवाया गया जिससे परेशान होकर सांकरडा राछेटी छोडकर भ्रमण करने निकल गये कई वर्षो तक घूमने के बाद रामदेवरा होते हुए जलवाणा नामक गांव में आकर रहने लगे जहां पर आकर ग्रहस्थी बन गये जलवाणा गांव में रहने से ये जलवाणियां नाम से जाना जाने लगे जो आगे चलकर जलवाणियां गौत्र से प्रसिद्ध हुए तत्पश्चात्

कई वर्षों वाद उदयपुर जिले में सांकरडा आये जहां पर इनके पूर्वजों की धरोहर की अलखजी के मंदिर को भी वापस संभाला व गांव बाबा रामदेवजी का मन्दिर निर्माण किया और 60 गांवों के मेघवंशियों को उनके गुरुद्वारे के रूप में अपना महन्त आचार्य माना। इसके पश्चात् दोनों गुरुभाइयों ने श्री सुजानदासजी व श्री तुलसीदासजी सांकरडा के अलख बाबा के मन्दिर सामने जीवित समाधि ली। वो आज भी अपनी जीर्ण शीर्ण अवस्था में स्थित है। तुलसीदासजी के दो पुत्र भैरदासजी व बख्तदासजी थे और दासजी को राछेटी की धुणी सम्भलायी और उस धूणी के साथ गांव के उत्तर दिशा में डोली की जमीन आज भी मौजूद है।

कुछ समय बाद भैरदासजी ने अपना शरीर छोड दिया जिनके कोई पुत्र पुत्री नहीं थी भैरदास का छोटा भाई बख्तदासजी थे जिनके दो पुत्र प्रेमदासजी रामदासजी थे बड़े भाई प्रेमदास को भैरदासजी के गोद रख दिया गया प्रेमदास के दो पुत्र हुए मोडदासजी व हीरादासजी एवं मोडदासजी के तीन पुत्र हुए माधवदासजी, गोपीदासजी व कबीरदासजी जिसमें माधवदासजी के जय विजयदासजी व ज्ञानदासजी दो पुत्र हुए कबीरदासजी के भी दो पुत्र थे चेतनदासजी व पूरणदासजी। सांकरडा के

बख्तदासजी के दो पुत्रों में रामदासजी के चार पुत्र थे। 1. गेरूदासजी 2. बंशीदासजी 3. रोडदासजी सोहन-दासजी गेरूदासजी वर्तमान में कोसीथल गांव में अलखजी का पुराना स्थान, डोली व बाबा रामदेवजी के मन्दिर की पूजा करते हैं जिनके पुत्र भूरदासजी वर्तमान में मौजूद है एवं छोटे पुत्र बंशीदासजी उर्फ बोधानन्दजी वि.सं. 2017 भादवा सुदी 2 को 25 वर्ष की आयु में आध्यात्मिक साधना करने से वैराग्य में साकरछा छोडकर चित्तौड जिले में रेगरों का सांवता नामक ग्राम में अलखनामी बोधान्नद आश्रम की स्थापना करके आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार प्रसार करने हेतु राजस्थान के विभिन्न जिलों में भ्रमण करते हुए दो पुस्तकों की अपने अनुभवों से रचना की 1. बंशीदास भजन प्रकाश 2. बोधानन्द वाणी विलास। गुरु दीक्षा संत श्री प्यारदासजी आरजिया निवासी से प्राप्त करके उदयपुर जिले के नाथूवास (नाथद्वारा) के अम्बालालजी उर्फ अद्वैतानन्दजी डूजर को अपना शिष्य बनाकर वेदान्त के प्रचार प्रसार हेतु वेदान्त प्रचार मण्डल की शाखा स्थापित की। जिनके चद्धरधारी अनुयायी श्री माधवानन्दजी, रामानन्दजी एवं कई शिष्यों को सद्मार्ग पर लाये। बोधानन्दजी के दूसरे शिष्य छोगारामजी उर्फ केवजानन्दजी कीर निवासी

राशमी की खेडिया केतल आश्रम नामक वेदान्त प्रचार की शाखा स्थापित की एवं कई जिलों में भजन प्रमचन द्वारा जन जागृति का कार्य करते हैं। तीसरा शिष्य मोहनसिंह उर्फ हरिओमानन्द निवासी उदयपुर जो कि थानाधिकारी के पद पर कार्यरत होते हुए भी उदयपुर सेक्टर नं. 5 में हरिओम आश्रम शिव भवन के नाम से वेदान्त के प्रेमी जनों को भक्ति मार्ग में लगाते हुए जिनके शिष्य रूपलालजी उर्फ सरूपानन्दजी प्रजापत निवासी टीडी को भी आतम ज्ञान का अनुभव करवा कर भक्ति मार्ग में लगाया। श्री बोधान्नदजी के चौथे श्रद्धरधारी शिष्य नाथूरामजी उर्फ निगमानन्दजी गर्ग ब्राह्मण निवासी उपरेडा जिला चित्तौड जो कि सनातन धर्म के प्रचारक हैं जिन्होंने कई शिष्यों को सद्मार्ग पर लगाया। इसके अलावा बोधानन्दजी के सभी समाजों में शिष्य पर शिष्य हैं। बंशीदासजी उर्फ बोधानन्दजी के दो पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं जिनके नाम प्रेमदासजी, गणपतदासजी शान्तादेवी एवं मधु हैं प्रेमदासजी के दो पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं जिनके नाम मदनदासजी विष्णुदासजी मनोहर-कुमारी एवं राधाकुमारी है। गणपतदासजी के एक पुत्री दुर्गाकुमारी है। प्रेमदासजी व गणपतदास एवं पूरा परि-वार सभी प्रकार के दुर्व्यसनों से दूर रहते हुए जनजागरण

के कार्य में संलग्न हैं। साकरडा के रामदासजी के तीसरे पुत्र श्री रोडदासजी के दो पुत्र कैलाशदासजी व पूरण-दासजी हैं जो देवरिया गांव में बाबा रामदेवजी मन्दिर की पूजा करते हैं। रामदासजी के चौथे पुत्र सोहनदासजी के तीन पुत्र प्रभुदासजी मिठूदासजी प्रकाशजी हैं जो साकरडा की धूणी व शेखावत जाति के रेबारियों के मन्दिर की पूजा करते हैं।

उपर्युक्त लेख पूर्व बुजुर्गो की जानकारी एवं परम्परा से प्राप्त जानकारी के अनुसार बोधानन्दजी के सुपुत्र श्री प्रेमदासजी निवासी सांवता ने दिया।

ह. प्रेमदास

अलखजी का अडाणा की धूणी का परिचय :-

गांव अडाणा (अलखजी का खेड़ा) तहसील राशमी जिला चित्तौडगढ लगभग 15 पीढी पहले वि. सं. 1881 में श्री गिरधारीदासजी महान् सन्त व सिद्ध पुरुष हुए जिन्होंने उदयपुर महाराणा स्वरूपसिंहजी दरबार को चमत्कार दिखाया। उनके सैनिक सूखे पीपल के पेड को काटने के लिए आए महात्माजी ने सिद्धि द्वारा हरा कर

दिया। महाराणा ने जांच करने के लिए महात्मा को उदयपुर बुलाया। वहां दशहरे के दिन हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे एक हाथी को शराव पीलाकर महात्माजी पर छोड़ा गया। महात्मा ने गुरु मंत्र पढ़कर जल का छीटा देने से हाथी का नशा उतर गया तथा हाथी ने सूंड से प्रणाम कर अपने उपर महात्मा को बिठाया उस वक्त महाराणा का चारण खड़ा था उसने कविता बनाई:-

"अडाणा अलख प्रकट्या सोमी गांव जात सवाई,
सूखा पीपल हरिया किया धन्य गिरधारीदास कामड़
थारी कमाई।
दिन दशरावे देखे घणा लाखा मनख लव लीदी
घन गिरधारीदास थारी सिद्धि को हाथी सून्ड से
सदा जी कीदी।

इस प्रकार महाराणा प्रभावित होकर स्वागतपूर्वक वापस पहुंचते हुये 51 बीघा जमीन मावली में 5 बीघा सोमी 24 बीघा अडाणा में 12 बीघा जमीन भेंट कर ताम्र पत्र दिया उसी स्थान पर मन्दिर अलखजी का आज

भी मौजूद है तथा सेवा पूजा का कार्य कामड़ समाज के नवलदासजी व हीरदासजी कर रहे हैं तथा समस्त जातियां इन्हें मानती हैं व महात्मा की जीवित समाधि व धूणी का चमत्कार व मेला भादवा सुदी 10 रात्रि जागरण व रोट पूजा ग्यारस को मेला लगता है ।

ह. नवलदास

सर्वेकर्ता–बंशीदास कामड़

कुचोली की धूणी का परिचय :–

बताया जाता है कि गांव कुचोली तहसील मावली जिला उदयपुर लगभग 8 पीढ़ी पहले श्री बगतदासजी महान् सिद्ध पुरुष हो गये जिन्होंने उदयपुर मेवाड महाराणा श्री विजयसिंहली को चमत्कार दिखाया श्री महाराणा एक बार सैर करने को जगमन्दिर में जाते थे उस समय महाराज बगतदासजी धोली बावडी उदयपुर में ठहरे हुए थे आप भी रवाना हो गये राणाजी नाव में बैठकर जा रहे थे उस समय महाराज के जल में चादर बिछाई और बोले तू भी चल । नाव के साथ अन्य भी रवाना हुए यह चमत्कार देख कर दरबार ने हाथ जोड़कर विनती की कहा कि आपकी क्या सेवा करू महात्मा ने

कहा कि मैं कुचोली गांव में यज्ञ करना चाहता हूं तब महाराणा ने कुछ रोकडी उनको दी महाराणा बगदासजी ने कुचोली में बारवाल गौत्र के गूजरों के नोहरे में यज्ञ किया बडा भारी मेला रहा अतः पीने के पानी की कमी आ गई जन समुदाय के महाराज से विनती की सभी जनसमूह के साथ गांव की प्राचीन बावडी पर गये। गूगल धूप किया व खनाव किया जिससे तीन पेडी पानी चढा महाराज ने कहा कोई औरतें पानी में नहीं नहायेगी तो यह पानी ज्यों का त्यों भरा रहेगा। एक बार यज्ञ करते घी की कमी आ गई महाराज ने पानी के डिब्बे भरकर बावडी से मंगबाये पानी का घी हो गया इससे सैंकडों मन मानपुए निकलवाकर सब को जीमाया। यह बावडी आज भी है जिसने हरे में यज्ञ किया उलके आज भी महाराज के कहे अनुसार किवाड नहीं लगते हैं तथा किसी प्रकार की हानि या नुकसान नहीं होता है श्री बगतदासजी आजीवन ब्रह्मचारी थे उनके शिष्य गागदासजी के पुत्र कानदासजी के पुत्र नन्दरामजी के हरलालदासजी इनके छः पुत्र– भैरूनाथजी, नवलदासजी, मानदासजी, बगत-दासजी, शिवदासजी, और नारायणदासजी इस प्रकार यह वंश परम्परा चल रही है।

(बड़े बुजुर्गो के मतोनुसार) ह. रूपदास कामड़

सर्वेकर्ता– बन्शीदास कामड़ मु. पो. शाकरवा

श्री रामदेवजी का चन्देरिया इतिहास :–

आज से करीब 600 वर्ष पहले गांव रूणेचा में श्री रामदेवजी महाराज ने अवतार लिया तव उस समय श्री रामदेवजी ने 24 परचे दिये । ये बात चित्तौड़गढ दरबार महाराजा मोकलसिंहजी ने सुनी, उनके पुत्र नहीं था वो बांझ थे तब उवके मन में विचार आया कि क्यों न हम श्री रामदेवजी को चित्तौड़गढ बुलाकर पुत्र प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करें । तब महाराणा ने अपने सैनिक भेजे । तब श्री रामदेवजी ने अपने काकाजी श्री धनराज पीर को वचन सिद्ध का वरदान देकर सैनिकों के साथ भेज दिया । श्री धनराज पीर चित्तौडगढ दुर्ग पर सातवें द्वार रामपोल के सामने धुणी डालकर वहीं बैठ गये । (जहां वर्तमान में श्री रामदेवजजी का मन्दिर है ।) तब श्री धनराज पीर ने महाराणा को कहा आप अपनी राणी को यहां धूणी पर ले आओ मैं उनकी गोद भर दूंगा । तब महाराणा ने अहंकार वश पीरजी को मना कर दिया कि मेरी राणी परदे में रहती है यहां नहीं आयेगी आप नारियल मेरे को दे दो मैं उनकी गोद में भर दूंगा । तब पीरजी ने कहा मेरे को गोद भरने का वरदान है न कि आपको देने का । तब पीरजी रूठ कर वहां से चल दिये । जब ये बात राणीजी को मालूम हुयी तो उन्होंने सैनिकों

को भेजा और कहा कि पीरजी जहां पर भी मिले उनको वहीं रोक लेना। मैं अपनी दासियों के साथ आ रही हूं। सैनिकों ने पीरजी को चन्देरिया में रोक लिया और कहा कि राणीजी स्वयं आपसे मिलने पधार रही है। आप यही रूक जावें। तब पीरजी ने चन्देरिया में धूणी डाल दी। तब वहां पर राणीजी पयार गई। जब ये बात मोकल राणा को मालूम हुई तो नंगी तलवार लेकर पीरजी के पास पहुंचे जहां राणी पीरजी के सामने हाथ जोडकर बैठी थी। यह देखकर मोकल राणा ने पीरजी को कहा आप मुझे अभी औलाद दे तो जानू। नहीं तो आप और राणी का सिर यहीं पर काट दूंगा। ये देखकर पीरजी घबरा गये। तब उन्होंने मन में श्री रामदेवजी का स्मरण किया कि हे देव आपने मुझे कहां फँसा दिया है राणा तो नुगरा है। ये अभी का अभी बच्चा मांगता है और यह सम्भव नहीं है क्योंकि पुत्र प्राप्ति तो नौ माह बाद होती है। तब श्री रामदेवजी ने उनको दर्शन देकर कहा कि आप चिन्ता न करें मैं जैसा कहता हूं वैसा ही करना। तब पीरजी ने एक कलश मिट्टी का मंगाकर धूणी पर स्थापन किया। राणा और राणी को सामने विठा दिया फिर रामदेवजी की आराधना की तब तत्काल कलश फुट गया और उसमें से एक सुन्दर बालक प्रकट

हुआ इसी बालक को पीरजी ने उठाकर राणी की गोद में रख दिया तब राणा खुश हुआ तलवार दूर फैंक कर पीरजी के पांव पकड़ लिये। तब उस बालक का नाम-करण वहीं हुआ। और उनका नाम कुम्भाराणा हुआ। तब उसी समय मोकल राणा ने चन्देरिया में एक श्री रामदेवजी का सुन्दर मन्दिर बनवाया और 5 बीघा जमीन दान में दी जिसका ताम्र पत्र आज मौजूद है। वर्तमान में श्री शिवदास कामड़ इस मन्दिर के पुजारी हैं। तब से इस गांव का नाम श्री रामदेवजी का चन्देरिया हुआ। वर्तमान में इस मन्दिर पर बैसाख सुदी 9 को रात्रि जागरण होती है तथा बैसाख सुदी 2 को मेला लगता है जिसमें श्री रामदेवजी का चमत्कार आज भी जनता देखती है और प्रसन्न होती है।

इति श्री हस्ता. शिवदास कामड़

ताम्र पत्र विवरण सरवडिया की खेडी की धूणी :—

श्री हीरदासजी पुत्र श्री मोतीदासजी गांव सरवडिया की खेडी त. रेलमगरा जिला राजसमन्द (राज.)

सम्वत् 1892 में महाराणा जवानसिंहजी ने एक ताम्र पत्र पीर होने पर दिया गया था यह धूणी वर्तमान में भी है जो समसाणी के नाम से जानी जाती है। यहां

से निसान रामदेवरा भेजा जाता है जिसे रामदेवरा चढा कर पुनः वापस लौटाया जाता है। कुछ व्यक्तियों को चमत्कार दिखाने पर महाराणा ने इस ताम्र पत्र द्वारा सात बीघा जमीन दी गई जिसका उपयोग अभी भी महाराज श्री होरदासजी कर रहे है। विशेष विवरण के सम्बन्ध में शोध किया जा रहा हे।

हस्ता. होरादास

सर्वेकर्ता :-
हस्ता. 16-8-92
(माधवलाल कामड़)
उपाध्यक्ष (के.)
रा. का. स. स.

केलवा धूणी का परिचय :-

लगभग 125 वर्ष पूर्व केलवा के बावा रामदेव मंदिर की पूजा हेतु सनवाड से महाराज चनरदासजी को लाये थे। चतरदासजी के पिता श्री रामदासजो एवं रामदासजी के पिता श्यामदासजी श्यामदास के पिता का नाम छीतरदासजी था जो कि ग्राम देपर तह. मावली जिला उदयपुर के निवासी थे एवं इनकी गौत्र गहलोद है।

श्री चतरदासजी के वर्तमान में केलवा की धूणी पर उनके पुत्र संत श्री पन्नादासजी, सेवादासजी, छगनदासजी,

है जिनके परिवार में पीरूदासजो, भैरूदासजी, पृथ्वी-दासजो, लठुदासजी, मीठूदासजी, बाबूदासजी, बंशीदासजी, प्रेमदासजी, कालूदासजी, भूरदासजी. प्रभूदासजी, राजू-दासजी एबं ओमप्रकाशजी हैं। उपरोक्त जानकारी श्री लटूदास जो कि श्री पन्नादासजी के सुपुत्र है जिन्होंने दी।

सगरेब की धूणी :–

लगभग 700 वर्ष पूर्व चतरदासजी गूजर जिनकी गौत्र हदवा निवासी टोकरा तह. आसीन्द के रहने वाले थे जो बचपन से भक्तिभाव में लगे हुए थे जो कि लादूवास आसजी महाराज से भगवान् धारण करके लादूवास में आश्रम के कामदार बन गये। कुछ समय पश्चात् छोटी जातियों के साथ में सत्संग करना व अछूतोद्धार का कार्य करने लगे तो आसजी ने आश्रम से निकाल दिया। चतर-दास का इससे हृदय आघात हुआ एवं योग साधना में लग गये। साधना में अन्ततः संकल्प सिद्ध हुए जहां से चलकर गांव गोराणा आये और वहां धूणी की स्थापना की। जहां पर 44 गांव मेघबंशियों के उनकी सेवा में लग गये इसके बाद अपनी साधना के तपोबल से देवगढ रावजी के कोढ मिटाया जिससे रावजी ने प्रसन्न हो भचेडिया गांव में 24 बीघा जमीन डोली के रूप में दी

एवं धूणी की स्थापना करवायी। यहां से घूमते हुए केवला गांव पहुंचे तो ऐसे चमत्कारी संत को देख केलवा ठाकुर साहब ने सन्त चसुरदास के सामने पुत्र कामना जाहिर की ठाकुर की सेवा भावना देख उनकी दोनों रानियों को वरदान दिया जिससे दोनों के एक एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिनका नाम मोकमसिंह व उम्मेदसिंह था। मोकमसिंह के नाम पर केलवा के पास मोकमपुरा व उम्मेदसिंहजी के नाम से उम्मेदपुरा बसाया व 51 बीघा डोली के रूप जमीन दी। इसके बाद केलवा से आटा-बाडा होते हुए सगरेव की धूणी की स्थापना की। सगरेव में गागोला तालाब की पाल पर अलखजी के पगल्या मंदिर व धूणी की स्थापना की एवं 10 गांव मेघवंशियों के धनराज पीर की मियाण जाकर धूणी की स्थापना की जिससे देवगढ रावजी 12 बीघा जमीन डोली के रूप में दी। तत्पश्चात् वृद्धावस्था के कारण हंसदासजी को अपना शिष्य बनाया और अपने गुरुद्वारे लादवास जाकर जीवित समाधि ले ली जो कि आज भी चतरा बाबा की समाधि के नाम से प्रसिद्ध है जिसकी प्रेरणादायक मिट्टी व जलती हुई जोत लाकर गांव सगरेव में रामदेवरा नामक दूसरा मन्दिर जिसकी डोली के खेत में समाधि बनायी जो आज भी मौजूद है।

चतरदासजी के शिष्य हरसवदासजी जिनके शिष्य देवादासजी एवं देबादासजी के शिष्य सेवादासजी सेवादासजी के शिष्य अमरदासजी अमरदासजी के शिष्य कालूदासजी, कालूदासजी के शिष्य हनुमानदास जो कि गांव डेलाना से कालूदास कामड के लडके को लाकर अपनी धूणी पर गोद लिया, हनुमानदासजी के शिष्य मोतीदासजी गूजर भडाना गौत्र का जिसकी गांव साकरडा के किशनदासजी पुत्री धापू बाई के साथ शादी कर दी। 444 गांव मेववंशियों के सगरेव की धूणी के साथ मोतीदासजी को भेंट कर दिया।

मोतीदास के चार पुत्र हुए :-

1) हरदालदासजी 2) पन्नादासजी
3) धन्नादासजी 4) रूपदासजी आदि।

हरलालदासजी के शंकरदासजी लादूदासजी एवं शंकरदासजी के प्रेमदासजी, लादूदासजी के नाहरूदासजी एवं पदूदासजी व ओमप्रकाश पन्नादासजी के सन्तान अभाव के कारण धन्नादासजी के लड़के भवरूदासजी को गोद लिया। धन्नादासजी के रतनदास, भंवरदास रूपदासजी के मांगूदास, श्यामदास दो पुत्र हैं। ये जानकारी संस्था को धन्नादासजी ने दी। दिनांक 3-10-98 को

दिनांक 10-4-98 पलाना कला (तह. मावली, जिला उदयपुर) के वयोवृद्ध कामड़ संत विशनदासजी व भगवानदासजी (रामदेवाणी धूणी से साक्षात्कार-शोधार्थी चम्पादास कामड़ "फव्वारा"

सिद्ध राजूसिंहजी तँवर पलाना कला के कामड़ सन्तों की प्रमुख धूणी रामदेवरा मानी जाती है पलाना कला के कामड़ संत अपने को तंवर वंशीय भगवान् रामदेवजी के बंशज मानते हैं।

रामदेवजी तंवर के वंशज राजूजी तंवर रामदेवरा से प्रस्थान कर तलादरी ग्राम (कुम्भलगढ़, जिला राजसमन्द) आये वहां पर सिसोदिया राजपूतों के निर्मित रामदेवजी के मंदिर की पूजा प्रारम्भ की। मेवाड़ परगने में सभी जातियों से यदाकदा भेंट हेतु आया करते थे।

आज से करीब 340 वर्ष पूव राजूसिंहजी तंवर तलादरी से मय परिवार पालना कला पर पधारे व धूणी स्थापित की जहां पर वर्तमान में रामदेव मंदिर स्थित है। वहां पर कठोर तप करके सिद्धि को प्राप्ति की। वचन सिद्ध महात्मा के रूप में पूजित हुए, अध्यात्म ज्योति प्रज्जवलित की व गृहस्थ होते हुए भी संन्यास के परमोत्कर्ष पद पर पहुंचे। उनके दो पुत्र थे।

1705 ई. में राजूजी अपने परिवार को पलाना कला धूणी पर छोड़कर मावली के पास (नामरी ग्राम के पास) चारणों की भीमल में पधारे वहां पर गांव वालों ने भोजन हेतु निवेदन किया परन्तु उन्होंने भोजन नहीं किया और वहीं पर समाधि लेने की इच्छा जाहिर की तथा पंचों से कहा कि मेरे दोनों बच्चों को जो कि पलाना कला धूणी पर हैं का पालन पोषण कर कामड़ पंथ में ही दीक्षित किया जावे यही मेरी इच्छा है। तत्पश्चात् राजूजी तंवर 1705 ई. में चारणों की भीमल में जीवित समाधि ली।

समाधि लेने के दो दिन पश्चात् चारणों की भीमल के लोगों सेवा की राजूजी ने समाधि तो ले ली है। परन्तु समाधि की पूजा अर्चना यथा समय कौन करेगा ? क्योंकि इनकी पत्नी व दोनों बच्चे पलाना कला की धूणी पर है। अतः सभी लोगों ने दूसरे ही दिन राजूसिंहजी की समाधि पुनः खोदी राजू पीर ने खोदने वालों को शाप दिया कि तुम भीमल के लोग सदा दुःखी ही रहोगे "यहां आया रहेगा पर जाया वहीं" क्योंकि तुमने मेरी समाधि खोदकर महा पाप किया है अतः आज भी भीमल के लोग दुःखी और निर्धन स्थिति में है। समाधि से राजूजी पीर जीवित निकल कर लोगों के साथ पलाना कला व पलाना खुर्द के बीच गढोई नामक तलाईया की पाल पर पुनः

समाधि खुदवा कर समाधि ली समाधि लेते हुए उन्होंने वहां पर स्थित लोगों को कहा कि मेरी समाधि के आस-पास के इलाके की फसल पर कभी भी दाह नहीं पड़ेगा व फसलों को कोई हानि नहीं होगी अतः आज भी उनका सिद्ध वचन शत प्रतिशत फलित हुआ है ।

राजूजी की धूणी पर एक भव्य रामदेवजी के मंदिर का निर्माण करवाया । 1818 ई. में मंदिर निर्माण हो गया तथा मंदिर का परिणय भी 1818 ई. में करवाया राजूजी के दोनों पुत्रों ने कामड़ पंथ ग्रहण कर मंदिर पूजा व अलख चरण की पूजा प्रारम्भ की । उसके बदले में मेघवाल समाज पंचों द्वारा महाराज के लिए लाग बाग निश्चित की जिसमें हर छः मास में (फसल पर) पांच शेर अनाज व ब्याह शादी पर भी भेंट पूजा देनी निश्चित की तथा मेघवाल लोगों के सभी संस्कारों को भी सम्पन्न कराते समय भी लाग निश्चित थी ।

इस प्रकार क्षेत्रिय वंशीय राजूसिंहजी ने राजपूत होते हुए भी कामड़ संत परम्परा को समृद्ध व सम्पन्न बनाने में एक योगी के रूप में अपनी पृष्ठ भूमि निभाई, वे आजीवन समाधि लेने तक भगवा बाने में ही रहे, मानव से सिद्ध होने की प्रेरणा मेवाड़ क्षेत्र को दी । गडोई की पाल पर राजू पीर की समाधि भारतीय संस्कृति के अध्यात्म व

सिद्ध परम्परा की जीति जागृति प्रतियां हैं ।

राजूसिंह के चमत्कार का प्रभाव व आदिवासी समुदाय में कामड़ पंथ का प्रसार :-

सिद्ध राजूसिंहजी जब पलाना कला धूणी पर तपरत थे तब इसी गांव के धन्नाजी भील व उनकी धर्म पत्नी नानी बाई या नानक बाई नामक दम्पती तालाब में गेहूं व चने की फसल की रखवाली कर रहे थे । एक गाय तालाव में स्थित फसल को चरने लगी तो दोनों पति पत्नी ने गाय पर पत्थर फेंके ताकि गाय खेत से भाग जाये परन्तु दुर्भाग्य से पत्थर गाय के सिर पर लगा, तत्काल गाय मर गई, गांव वाले गो हत्या के अपराध में धन्ना व उनकी पत्नी को मारने के लिए उनके पीछे दौड़े तो दोनों भागते हुए प्राजरक्षा के लिए सिद्ध राजूजी की धूणी पर आ गये तथा रक्षा को प्रार्थना की तथा अपने जाने अनजाने में हुई गो हत्या के वृतान्त को निवेदन किया ।

राजूजी ने अपनी भगवी चादर फाड़कर दो टुकड़े कर दोनों को भगवा प्रदान किया तथा गांव वालों से इन्हैं न मारने हेतु कहा कि ये दोनों तो साधु हो गये हैं । भगवा-धारी को मारना गौ हत्या से भी ज्यादा अपराध माना जाता है । व राजूजी ने मृतक गाय के पास जाकर सम्पूर्ण

ग्राम के समक्ष मंत्रोचारण कर कमण्डल से जल गाय पर छिड़का तथा गाय को पुनर्जीवित कर लव को अपनी सिद्धाई से चमत्कृत कर दिया।

तब से धन्नाजी भील व नानी बाई उनके शिष्य तथा भक्त बन गये कामड़ संस्कृति का आदिवासी क्षेत्र में कामड़िया पंथ के रूप में प्रसार किया जिससे मेवाड़ के आदिवासी इलाकों में कामडिया पंथ के रूप में कामड पंथ काफी पनपा जो आज भी झाडोल फलासिया से लेकर भरणाजी के आगे मारवाड़ क्षेत्र तक फैला।

सिद्ध राजूसिंहजी को जीवित समाधि लेने के बाद 1715 के आसपास धन्नाजी भील व नानक बाई ने भी तपरत होकर सिद्धत्व को प्राप्त किया तथा उन्होंने भी (दम्पती ने) जीवित समाधि लेकर कामड़ पंथ में अपना नाम अमिट कर विया। वर्तमान में पलाना कला आदिवासियों का भव्य रामदेव मंदिर है तथा दोनों (पीर व पीराणा) की समाधियों की छतरियां स्मारक, मंदिर के द्वारा प्रविष्ट करते ही वायीं ओर निर्मित है। इस मंदिर व छतरियों की अर्चना धन्ना नामक गमेती वर्तमान में कर रहे हैं।

रामदेवाणी धूणी पलाना कला के चंगेडी निवासी स्व. संत भैरूदासजी कामड़ राजू पीर के विषय में अपनी

भावाभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों द्वारा दी :-

अगति कर भगति करणी, जग ने सिखलाई ।
राजूपीर भगवा री कीमत ने लाज ओलखाई ।।
मरी गऊ रे छांटो दे, जीवन दान दियो ।
थन्ना नानी रो दुःखडों, पीरजी दूर कियो ।।

चंगेडी निवासी किशनदासजी ने राजू पीर के सन्दर्भ जे अपने विचार कविता के माध्यम से यूँ दिये :-

मेवाड परगणां मायने, कला पलाणों ग्राम ।
सिद्धा तणे धूणी धके, चाखे भारी धाम ।।
चाले भारी धाम, तीरथा रो महा तीरथ अटे ।
रजपूती ने छोड भाण भगति रो उगो अठे ।।
"किशनदास" अणी भोमका में सत गणो ।
वण सको तो सिद्धाईकर, राजूपीर वणो ।।

चंगेडी के ही श्री रतनदास कामड़ निम्न दोहे से राजू पीर का गौरव निखारा है :-

भक्ति गंगा का संगम जहां पर, बहता प्रेम का नीर ।
'रतगदास' पलाणा कला पावन किया, योगी राजू पीर ।।

शोधार्थी
चम्पादास कामड "फव्वारा"
31-8-98

कवि– चम्पादास "फव्वारा" के मतानुसार राजूपीर के विषय में काव्याभिव्यक्ति इस प्रकार है :–

राजूपीर (मनहरण कवित्त– छन्द

राजूपीर रणुचाँ के वासी, यौवन में भये संन्यासी ।
तलादरी ग्राम आय, अखाडा जमाया है ।।
किया अलख आरोध, तब हुआ आत्मबोध ।
तंवर वंशी भूषण, पांव पलना धराया है ।।
बड़े हुए तपधारी सिद्ध और चमत्कारी ।
वचन फलित हुआ आपका फरमाया है ।।
सतरासो पांच, समाधि बैठे योगी राज ।
"फव्वारा" भीमल पलाना पावन कराया है ।।

(कवि– चम्पादास "फव्वारा")

कटालिया की धूणी का परिचय :–

हमारे कामड़ समाज में ऐसे ऐसे महापुरुष ज्ञानी व भविष्य वेता हुये हैं जिन्होंने मृत्यु का समय छः महिने पूर्व ही दिन माह ब समय तक बताया । ऐसे ही महापुरुष गांव वोपारी जिला पाली में स्व. श्री रावतदासजी पुत्र तेजदासजी हुये उनको अपने मृत्यु का आभास छः महिने पूर्व हो गया था । जिसको उन्होंने ग्रामवासी स्व. श्री माणकचन्द जैन, स्व. अकाराम चौधरी, स्व. भीकसिंह पुरोहित, स्व. खरतारामजी प्रजापत व बुद्धाराम, भूराराम

नेनाराम व पूराराम जलवानिया (जो अभी साक्ष्य के रूप में जीवित हैं) को अपना मृत्यु समय छः महिने पूर्व बता दिया था इनमें चारों जो अभी जीवित है ने महाराज की मृत्यु दो दिन पूर्व पुष्कर जा रहे थे तो उन्होंने सोचा कि पुष्कर जाने से पूर्व एक बार बावसी रावतदासजी से इजाजत ले ले क्योंकि आपने कार्तिक पूर्णिमा का समय बताया था तो ये लोग उनसे मिलने गये तथा पूछा कि हमको पुष्कर जाने की इजाजत होगी तो उन्होने कहा कि लाओ तो मैं मना तो नहीं करता लेकिन आपका यह मेरे से अन्तिम जय गुरू महाराज की मानना और आप मेरी समाधि में शामिल नहीं हो सकोगे तो उनके मन में शंका हुई तथा उन्होंने पुष्कर जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया तथा महाराज ने कार्तिक पूर्णिमा को घर पर ग्रामवासियों को बुलाया था व उनमें ये लोग भी आये तथा महाराज ने ग्रामवासियों को अपनी समाधि के स्थान के लिये कहा कि मेरी समाधि मन्दिर के पास बड़ गुन्दे के पेड़ के नीचे समाधि देना उसके बाद सारे परिवार को जो कि अन्य शहर व गांवों में रहते थे उन्हें बुला लिया उसके पश्चात् रात को उन्होंने अपने तीनों बेटों में सबसे छोटे सुपुत्र श्री अचलदासजी से समय पूछा तो उन्होंने कुछ समय गलत बताया तब उन्होंने कहा कि मेरे पास गुरूमहाराज की

घडी है तथा उन्होंने स्वयं ही समय बताया व कहा कि अब मुझे अन्तिम बार तलारा पिलन दो मेरा बुलावा आ गया है। अब मुझे जाना पडेगा। तथा उन्होंने वो तजारा लिया व सभी ग्रामवासियों से गुरू महाराज किया व ॐ शब्द के साथ ही उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। तथा उनकी समाधि आज भी रामदेवजी की डोली में मन्दिर के पास स्थित है जहां पूर्ण अर्चना की जाती है तथा हर कार्तिक पूर्णिमा को यहां पर सत्संग का आयोजन किया जाता है।

अध्याय– 8

कामड़ सन्त प्रेरणा खण्ड

पिछले सात अध्यायों में प्राचीन काल के कामड़ संतों के संगठन उनका विस्तार, उनके आदर्श कार्य एवं जीवन परिचय से अवगत कराया गया है। इस अध्याय में वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में कामड़ समाज की समुन्नति हेतु प्रयासरत कार्यकर्ताओं एवं संगठनों के बारे में किये जा रहे।

कामड़ समाज की उन्नति व समृद्धि के प्रयासों के लिए समर्पित युग पुरुष बाबा मूलदास जिन्हें सम्पूर्ण राजस्थान में तो लोग व्यक्तिगत रूप से जानते ही हैं इसके अलावा म. प्र. हरियाणा, यू. पी. गुजरात, पंजाब, दिल्ली

तक घूम घूम कर कामड़ सन्तों में जागृत की लहर पैदा की। आपने समाज की उन्नति हेतु संगठन बनाकर कार्य करने व सामूहिक प्रयासों से ही समाज की उन्नति हेतु संगठन बनाकर कार्य करने व सामूहिक प्रयासों से ही समाज की उन्नति के मार्ग में विश्वास किया है। आप लेखक से सन् 1983 में अजमेर से पालबिचला में बाबा रामदेवजी के मन्दिर में लेखक से लेखक पिताजी के माध्यम से मिला। पिताजी की सलाह व इनके आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित हो लेखक ने इन्हें गुरु धारण किया तब से निरन्तर 15 वर्षों से आपका सत्संग लाभ मिल रहा हे तथा लेखक ने अपने परिवार के सदस्यों व अपने रिश्देदारों को भी इनका शिष्यत्व प्रदान कराया जिससे सात्विकता एवं आध्यात्मिकता का विस्तार हुआ है।

सन् 1990 में जब लेखक भारतीय जीवन बीमा निगम में भी भीलवाड़ा कार्यरत था तब दिनांक 1 जुलाई 1990 को बाबा मूलदासजी की अध्यक्षता में समाज की उन्नति हेतु एक संस्थान की गठन राजस्थान कामड़ समाज संस्थान के नाम से जवाहर नगर भीलवाड़ा में श्री धर्मेन्द्रदासजी के निवास स्थान पर किया गया। इस संस्थान के उपाध्यक्ष श्री माधवलालजी सहायक प्रबन्धक भा.

अभ्रक व्यापार निगम भीलवाड़ा व श्री सन्तोषदासजी कैशियर मण्डल कार्यालय प. रेल्वे अजमेर को बनाया गया संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कामड़ को बनाया गया । संस्थान के सचिव श्री धमेन्द्रदासजी निवासी जवाहरनगर व सदस्य श्री देवीलालजी, धर्मीचन्दजी, भंवरलालजी, नारायणदासजी, शिवलाल ।

उपरोक्त कार्यकारिणी दो वर्ष के लिए गठित कर संस्थान का सरकार से पंजीकरण क्र. 90 भीलवाड़ा 90-91 दिनांक 23-10-90 को रजिस्ट्रार महोदय भीलवाडा से कराया गया ।

संस्थान के उद्देश्य :–

1) कामड़ साहित्य का प्रचार प्रसार
2) योग्य छात्रों को शिक्षा में सहायता/प्रबन्ध
3) नियोजन में सहायता
4) छूआछूत निवारण
5) अनाश्रितों की सेवा
6) मानव समाज एकीकरण
7) सामाजिक कुरीतियों पर रोक
8) विकलागों के कल्याण में सहायता व योगदान

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रथम चरण में यह कामड समाज का इतिहास व साहित्य नाम की पुस्तक

छपने जा रही है। मौखिक व लुप्त साहित्य को संग्रह करने हेतु कोलायत जिला बीकानेर के श्री मोहनदासजी गिरदावर साहब ने 800 रुपये के संस्थान के सदस्यता व सर्वेक्षण सम्बन्धी फार्म छपवाकर भेंट किये। इन फार्मो की सहायता से मारवाड मेवाड अजमेर की सर्वेक्षण कर महत्वपूर्ण साहित्य का संग्रह संस्थान के कई कर्मठ कार्यकर्ताओं के सहयोग से किया गया।

मेवाड क्षेत्र में जिला चित्तोडगढ के श्री बंशीदासजी के इस संगठन से सन् 1992 में जुड जाने से तो इसमें चार चाँद लग गये क्योंकि आप वेदान्त से प्रखर प्रवक्ता एवं सामाजिक समर्पित कार्यकर्त्ता हैं। आपके प्रयासों से मेवाड के उदयपुर राजसमन्द चित्तोडघढ में संस्था की जिला शाखाऐं खुली व निरन्तर कार्यरत हैं। आपके दृढ लगन एवं कर्मठता के परिणाम स्वरुप सन् 1996 में संस्थान के द्विवार्षिक चुनाव में आपको अध्यक्ष व बाबा मूलदासजी तथा डॉ. पूर्णानन्द पूर्ण पन्थी को इस संस्थान का संरक्षक बनाटा गया।

डॉ. पूर्णानन्दजी कामड़ समाज में महान् ख्याति एवं आदर्श है आपको रामदेवरा में सन् 1997 में कामड़ समाज के जगद्गुरु व महामण्डलेश्दर की उपाधि से सम्मानित किया गया है। रामदेवरा के गुसाईजी श्री

रामचन्द्रदासजी के कामड़ समाज की उन्नति की निष्ठा में प्रतिवर्ष भादवे में कामड समाज की मिटिंग होती है ।

संस्थान के गठन के पूर्व में कामड़ साधु समाज के लोग यहां एक सीमित क्षेत्र या जिला तक ही आते जाते थे इसके बाद कई राज्य स्तरीय सम्मेलन हुए जिनमें कई जिलों के लोगों ने भाग लिया जिससे एक दूसरे क्षेत्र के लोगों को समझने का अवसर मिला । इन सम्मेलनों में बर, जिला पाली कल्याणीपुरा अजमेर पाचुण्डाकला वाया सोजत जिला पाली बड़गांव व देराठू जिला अजमेर, मातृ-कुण्डिया व सांवता जिला चित्तोडगढ बीजल आश्रम जोधपुर के सम्मेलन जिन लोगों ने भाग लिया अपने अनुभव व आनन्द को नहीं भूल पायेंगे ।

शाखा जिला भीलवाडा, अजमेर, पाली, जोधपुर व नागोर के अनेक कार्यकर्ताओं का इस सस्थान की उन्नति में सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता हैं । श्री रामचन्द्रजी नि. रास, श्री कानदास देराठू, श्री ओमप्रकाश लेब असिस्टेण्ड, झडवासा, श्री प्रहलादजी दिलवाड़ा, श्री रामचन्द्र जी बडगांव, श्री भंवरलालजी अध्यापक मकराना जिला नागोर श्री भंवरलालजी गांगल तारघर नागौर श्री अचलदासजी पाली श्री बाबूदासजी सरपंच पीपलिया कला जिला पाली, श्री भवानीदासजी हरणी महादेव, श्री

कृष्णानन्दजी बस्सी मादाजी की श्री जवानानाथजी, श्री नृसिंहदासजी नि. पाचुण्डाकला श्री चन्द्रदासजी नि. मम्माणा जिला जयपुर श्री अचलदासजी ब्यावर, श्री बंशीदासजी सुरपुरा जोधपुर, श्री नवलदासजी नि. अलख जी का अडाणा, डॉ. पूर्णानन्दजी जोधपुर, श्री बस्तीरामजी जोधपुर, श्री उम्मेददासजी नि. पाली श्री परमानन्दजी नि. मुसालिया मारवाड श्री नेमीचन्दजी पूनिया निवासी पाली, श्री मेवादासजी नि. लस्साणी श्री भोलदासजी नि. मुसालिया इनके असीम सहयोग से यह साहित्यका कार्य सम्पन्न हो पाया है इनके योगदान त्याग की भावना से समाज के साहित्य के प्रकाशन व उपलब्ध हो जाने पर समाज को एक नई दिशा मिलेगी ।

संगठन में ही शक्ति है इस विशाल संगठन से जुड़कर कामड समाज का हर कोई सदस्य निःस्वार्थ सेवा की भावना से अपना व अपने परिवार का उत्थान कर सकता है । अपने विकास के लिए संस्थान के माध्यम से एक अवसर उपलब्ध होता है । आप भी सोच व दायरे का विस्तार कर उन्नत समाज की संरचना में अपना महत्व-पूर्ण योगदान देवें ।

कामड समाज के प्रचलित रश्मे रिवाज :–

कामड़ समाज में जो बालक उत्पन्न होता है जन्म के

बाद ॐ शब्द सुना कर घी या शहद से बालक की जीभ पर ॐ शब्द लिखते हैं तथा ज्योतिष के अनुसार नाम संस्कार किया जाता है ।

2) बालक को स्कूल की शिक्षा के साथ साथ भजन कीर्तन वाद्य बजाना व पूजा पाठ की शिक्षा दी जाती है ।

3) किशोर होने पर बालक को चरित्रवान् बनाने हेतु किसी समर्थ गुरु से दीक्षा दिलाई जाती है ।

4) युवास्था में दुर्व्यसनों से बचने के लिए अच्छे विद्वानों की सत्संगत व संत साहित्य का अध्ययन कराया जाता है ।

5) विवाह संस्कार तीन गौत्र टालकर स्वजाति की लड़कियों से वैदिक परम्परा से विवाह कराया जाता इन गौत्रों में मां दादी ब स्वयं की गौत्र टालते हैं ।

6) गृहस्थ जीवन की कुशलता के लिए अच्छे रोजगार के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा सहायता की जाती है ।

7) प्रोढावस्था में तीर्थाटन सन्ध्या भजन उपदेश आदि किया जाता है ।

8) मरणोपरान्त मृतक शरीर को सिद्धासन में बिठा देते हैं । स्नान करा कर नये भगवे कपड़े पहना कर

बैकुण्ठी बनाकर बैठाकर धूप आरती जोत के साथ कीर्तन करते हुए भजन मण्डली के साथ समाधि स्थल तक खे जाया जाता है। धरती में 6 फीट गहरी 3 फीट चौड़ी समाधि खोदकर अन्दर बैठाने के लिए एक अलमारी की तरह जगह बनाते हैं मृतक शरीर का मुँह उत्तर की ओर रखते हैं समाधि गायत्री मंत्र पढते हुए समाधि दी जाती है।

समाधि गायत्री :–

(1) ब्रह्मा पुत्री धरतरी खण्ड खण्डये जीव कमाया मान से अभिमान लाया, अर्ज करु गुरुजी तोय समाधि खुदावु किती पिण्ड प्राण आतम सेती साढा तीन हाथ धरतरी ब्राह्मा पावडा विष्णु कुदाली ईश्वर गौरा मिट्टी डाली अर्ज करू गुरुजी तोय इक्कीसवे ब्रह्माण्ड फोड निकालो मोय इति समाधि गायत्री जाप सम्पूर्ण सही कुमे ऋषि आप अलख से कही (2) म्हारी काया म्हो समाणी म्हासे राखती मेल एक दिन जीव जासी काया नहीं जासी थारे म्हारे व्हेसी खेरवाण। काया पूछे जीव ने रहो आज की रेण रेण रहया नहीं सरे थारा सरी सी घडसी फेर म्हासू जोरी मत करें म्हाने होवे देर म्हासे थाने जावता म्हारो काई हवाल के देसी अग्नि में जाल पानी मो राल माटी में डाल के भकसीसियाल। चारों ही

बाना नहीं मिले तो भी अनात्म का गल गल होसीगार समाधि जवाब सम्पूर्ण सही शिव सदा महादेवजी कही ।

मरणोपरान्त 12 दिन या 17 दिन रोजाना भजन कीर्तन गीता पाठ का कार्य करें । तत्पश्चात् हिंगलाज का पूजन कर तीर्थ स्नान को भेजे । 17 वें या 12 वें पर भण्डारा होता है जिसमें प्रथम दिन रात्रि को सत्संग जागरण होता है दूसरे दिन मृतक व्यक्ति के नाम की चरण (पगल्या) का जुलूस निकाल कर पूरा कामड़ समाज समाधि पर जाकर पूजन करता है व पगल्या प्रतिष्ठा की जाती है । भण्डारे में आये हुए सन्तों की पूर्ण सेवा के साथ साथ पात्र पूजा व कलश पूजा व पगडी व चदर संस्कार किया जाता है ।

सवा महिने व छमाही की सांत निकालने के बाद वार्षियां मनाई जाती है । इस प्रकार पितृ पूजा के संस्कार कामड़ सन्तों के परिवार में सामाजिक व्यवहार के रूप में बचपन से देखने व सीखने को मिल जाता है जो कि हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण संस्कार है । कहावत है कि एक बादशाह को उसके युवा पुत्र ने कैद में डालकर शासन प्राप्त कर लिया तब उस बादशाह ने कहा कि हिन्दू तो अप मृत पितरों को भी जला देते है तू मुझे जिन्दे पर रहम कर पानी पिला दें ।

कामड़ सन्तों के परिवार मन्दिर पूजा भजन कीर्तन आदि कर जीवनयापन करते हैं जिससे आध्यात्मिक संस्कार बचपन से ही प्राप्त हो जाते हैं।

कामड़ समाज के अध्यापक श्री बोरमदासजी

ब्रह्माण्या का समाज के नाम संदेश :–

शिक्षा :–

शिक्षा के क्षेत्र में हमारा समाज बहुत पिछड़ा है। हालांकि धर्म गुरु हैं हमारी जाति उपदेशक जातियों में आती है हमारे पास में वाक्चातुर्य है हम अपने कहे अनुसार कई लोगों को ढाल सकते हैं वैसे किसी बात को समझाना या उस पर तर्क देना हम से ज्यादा कोई नहीं जानता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारा पारस्परिक धन्धा ही नासझे को, समझ देना, नुगरों को उपदेश देना, पथ भ्रष्ट को सन्मार्ग दिखाना, भजन कीर्तन करना उसे विस्तारपूर्वक समझाना, सत्संगों का आयोजन करना और उसके बदले गुरुदक्षिणा ग्रहण करना। हमारी यादवास्ते को दाद देनी पड़ेगी लम्बे सम्पूर्ण रात्रि चलने वाले एक ही भजन को पुनः सुनाना और विभिन्न प्रकार के उदाहरण एवं दृष्टान्तों से लोगों का मनोरंजन करना यही हमारी जोदिकोपार्जन का धन्धा मात्र था। विभिन्न

कलाओं को प्रदर्शित कर लोगों को आकर्षित करना भी हमारा काम था । ये सभी कार्य दक्षता, निपुणता एवं निः संकोच लोगों के सामने प्रस्तुत करना हमारे रक्त में मौजूद है । हमारे सामने 10-20 तो कुछ लगते ही नहीं हजारों की संख्या में श्रोता और दर्शक उपस्थित हो तो हमारी जाति का कोई व्यक्ति उनके समक्ष बिना किसी हिच-किचाहट से अपना प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत कर देता है ।

मेरा कहने का मात्र इतना ही उद्देश्य है कि इन सभी गुणों के होते हुए आधुनिक शिक्षा में हमारा प्रतिशत नहीं के तुल्य है । मेरी आपसे अपील है कि आप अपने बच्चों को अवश्य शिक्षा के क्षेत्र में आगे लाएँ । इनमें वे सभी प्रतिभाएँ छिपी हुयी हैं मात्र इन पर पड़ी रंज को हटाना है बस आइना एकदम साफ हो जायेगा । आप बच्चों को पढ़ाकर केवल अपना ही नहीं अपने देश का भी भला कर रहे हैं । आप अपनी मेहनत एवं गाढे पसीने की कमाई से एक सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत नागरिक तैयार कर देश को सौंपते हैं । यही बच्चे कल के भावी भारत के नागरिक होंगे, देश आप का अहसानमंद रहेगा । साथ ही आपके भावी परिवारों को संस्कारित जीवन शैली मिलेगी । आपके आने जाने वाले लोगों को, इस परिपाठी

को निभाने में ज्यादा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा ।

एक बात और जैसे आपने अपने खून पसीने की कमाई से एक पक्का मकान बनाया – आप समझेंगें मेरे बच्चे अच्छी तरह रहेंगे उन्हें अपना मकान मिलेगा और सुख चैन से जीवन यापन करेंगे । सोचा तो केवल आपने अपना ही स्वार्थ परन्तु इसमें और भी कुछ है जो सम्भवतया आपको मालूम नहीं – वह कि आपने एक पक्का मकान बना कर अपने राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है । वह कि इससे आपके अन्य परिजनों को ही नहीं बल्कि समूचे समाज या अन्य मित्र बांधवों को भी फायदा हुआ है । वे भी यह चाहेंगे कि फलाँ व्यक्ति के यहीं रूकेंगे या वहां जायेंगे तो सुख पायेंगे और वे सुख सुविधाएँ उन्हें भी मिलेगी और उनकी आत्मा और मन की शान्ति मिलेगी । यह कि फलाँ व्यक्ति ने मकान बनाया, उसने अपने बेटे को योग्य बनाया वाकई प्रशंसा के पात्र हैं आप फायदा आपका और सराहना दूसरों से स्वतः ही मिल रही है ।

इन सब में बच्चियों को शिक्षा देना वो और भी ज्यादा मायने रखता है क्योंकि आदमी पढ़ा लिखा है तो

अपना काम अच्छी तरह चला लेगा और औरत पढ़ी लिखी है तो समूचे परिवार को शिक्षित बना कर आदर्श परिबार बना सकेगी और उसका पूरा परिवार आने वाली पीढ़ी के लिए मार्ग दर्शक बन जायेगा। शिक्षा हमारे जीवन को विकास के मार्ग प्रदान करती है। शिक्षा ही है जिसने बड़े-बड़े विद्वानों को जन्म दिया वे भी नासमझ रहे थे ज्योंहि शिक्षा ने उनके जीवन में प्रवेश किया उन्होंने अपने साथ अन्यों को भी उच्च स्तरीय जीवन जीने के लिए प्रेरित किया और आज हम उन्हें सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करते हैं और उनके पद चिह्नों पर चलकर गौरव अनुभव करते हैं। अगर सुरक्षित व सदाचारी व्यक्ति का निर्माण आप द्वारा होता है तो हो सकता है आपका खून पसीना मेहनत व सोच भारत को विश्व में उच्च स्थान दिलाने में काम आय। आज विश्व में वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में तरक्की कर रहे हैं विभिन्न चमत्कार दिखा रहे हैं चन्द्रमा की यात्राऐं कर रहे हैं। अन्तरिक्ष की साहसिक अद्भुत यात्राऐं कर रहे हैं। पृथ्वी पर बैठे-बैठे मंगल ग्रह पर हो रहे विभिन्न क्रिया कलापों का जायजा ले रहे हैं। यह शिक्षा ही है जो आपको छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्य, अनहोनी तक को होनी करके दिखा रही है। यह शिक्षा ही है जो आपको इस तरह के संगठन

बनाने को उत्तेजित कर रही है। यह शिक्षा ही है जो मुझे यह सब लिखने को प्रेरित कर रही है। शिक्षा के बल पर हम कानून जान पाए हैं। इसी के सहारे हमारा नैतिक जागरण हुआ है यह जागृति ही हमें अपना इतिहास लिखने को, सोये को जागने को प्रेरित कर रही है। हम अपनी भावनाओं को बोलकर ज्यादा नहीं समझ पाये इसके लिए शिक्षा ही वह साधन बनी है कि कुछ ज्यादा लिखकर अभिव्यक्त कर सकें।

शिक्षा का दुरुपयोग नहीं करें। शिक्षा को प्रगति के लिए उपयोग करें अवनति के लिए इसका उपयोग दुराचर के लिए नहीं सदाचार के लिए होना चाहिये। शिक्षा में अहम नहीं नम्रता लाने की प्रबलता होनी चाहिए। शिक्षा के संगठन की भावना को जागृत करें विघटन को स्थान न दें। शिक्षा से जीवन शैली सुधारें, बिगाड़े नहीं। शिक्षा केवल आगे बढ़ाने या ऊपर उठाने वाले कामों में ही उपयोग ली जाये न कि पीछे चलने के लिए। शिक्षा केवल साक्षरता में ही नहीं, आँकी जाय इसका इस्तेमाल व्यवहारिकता से जुड़ा होना चाहिए शिक्षा संवैधानिक जीवन यापन हेतु है असंवैधानिकतरीकों का समावेश नहीं होने देती अतः व्यक्ति का नैतिक मूल्यांकन शिक्षा से ही होना चाहिये।

उपदेश मैं नहीं देना चाहता-शिक्षा में क्या गुण है और अपन कितना बखान कर सकते हैं मैं इसे असम्भव मानता हूँ गिनती नहीं की जा सकती न ही इसका अन्त है। इसलिए सुशिक्षा के गुण अनन्त हैं इतनी बात कहकर मैं लिखना समाप्त करता हूँ। इसमें अगर किसी प्रकार का समावेश प्रसंगानुसार हो सके तो करना है। मेरा कहने का अंदाज और हो सकता है। समझना भी शिक्षा है। हर व्यक्ति अपनी शैली में अलग से बखान कर सकता है। मैंने अगर कुछ कम कहा है तो कृपया उसमें सम्मिलित कर चार चांद लगाने का प्रयत्न करें। वैसे पूर्णता की और तो हम जा ही नहीं सकते क्यों कि शिक्षा के सद्गुणों का बखान जितना भी किया जाय वह कम ही है तो ज्यादा लिख पाना मेरे बस में नहीं है। वैसे तो यह कहना भी गलत है पर मैं इसे समाप्त करना चाहता हूँ इसलिए कृपया इसे ही सब कुछ नहीं माने अपने विचार और जोड़े और इसको सार्थक शिक्षा बनाने में सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत करें।

कामड़ समाज-महासमुद्र

पूर्व में बर में बाबा मूलदास के यहाँ सतसंग एवं समाज का महाअधिवेशन विधिवत् सम्पन्न हुआ। हालांकि

उसमें भी आंशिक विघ्न उत्पन्न हुए परन्तु सभी उपस्थित महानुभावों की सहमति एवं विभिन्न प्रमाण प्रस्तुत करने पर यह प्रस्ताव पारित हुआ कि निश्चित रूप से हमारा समाज "कामड़" सम्बोधन से ही सर्वमान्य है ।

मैं पूर्व में भी सहमत था और सहमत क्या इसी नाम से अपनी जीवन की गाड़ी निर्विघ्न चला रहा हूँ । जातीय प्रमाण पत्र अत्यन्त सुगमता से प्राप्त हुआ । किसी कठिनाई का समना नहीं हुआ और नहीं मैंने कभी अपनी जाति को छुपाया ।

मैं इस समाज को अथाह एवं विशाल क्षमता वाला महासागर मानता हूँ । विभिन्नस्थानों गाँवों के एवं दूर-दूर से मिले प्रमाणों से यह स्वतः ही प्रमाणित हो जाता है कि इस विशाल समुद्र में जिस तरह विभिन्न क्षेत्रों से नदी नाले आकार इस तरह समा जाते हैं जिस तरह कि पानी में नमक, और पता ही नहीं चलता कि आने वाले कोई गैर है । हमारे समाज के विशाल हृदय का यह प्रमाण है कि विभिन्न जाति या धर्मो के लोग जो पूर्व के उनके जाति धर्म से ठुकराए हुए या प्रताड़ित होते हैं उन्हें हम सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं और उन्हें गले लगाकर ससम्मान सम्मिलित कर लेते हैं अगर सभी लोगों के

पूर्वजों के दस्तावेज जो राव एवं भाट की बहियों में प्रमाण सहित मिलते हैं–टटोला जाय तो यह पता चलेगा कि कोई ब्राह्मण और यह सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। यह अभी भी जारी है। इसका एक कारण यह भी बना कि कहीं हम "पीर" कहलाए कहीं "नाथ" और कहीं "बाबाजी" लेकिन अधिक कामड़ ही कहलाए। विभिन्न प्रकार की गणनाओं और सरकारी अवश्यकताओं में सूचीबद्ध करने हेतु हमारी जाति कामड़ ही मानी गई और कालान्तर में विभिन्न जातियों को सूची में हमें कामड़ दर्शाया गया न कि अन्य कोई नाम हमें जाति प्रमाण पत्र कामड़ जाति के अलावा किसी अन्य उपाधि या जाति ने नहीं मिल सकता। जाति प्रमाण पत्र की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में महसूस होती है। हम में कुछ इस जाति के नाम से हेय समझते हैं। यह उनकी अनावश्यक भूल है और इसका कोई विकल्प नहीं है। पूर्व में और हाल ही में हो रहे विभिन्न महाअधिवेशनों से हमारे समाज के लोगों को जो अन्य नामों से पुकारे जाते हैं-महसूस हुआ कि प्रमाणिक एवं मान्य नाम यहीं कामड़ है। इस सम्बन्ध में इस संस्था द्वारा किये गये प्रयास सराहनीय है। एवं प्रयासरत सभी जन धन्यवाद एवं बधाई के पात्र हैं। इस और देर से सही लेकिन समय

रहते जो जागृति आई हैं यह निश्चित रूप से उत्साही एवं गर्व की अनुमति हैं ।

बड़े ही खेद एवं दुःख का विषय है कि कुछ व्यक्ति इसे "कामड़" नाम को बदल कर अन्य किसी नाम से पुकारे जाने के इच्छुक हैं । यह उनकी नासमझी और भूल ही कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी पूर्व में कही गई विशाल हृदयता की बात को ठेस पहूंचा रहे हैं । उनसे चन्द प्रश्न हैं और इनसे वे निरन्तर ही रहेंगे । जैसे कालबेलिया अपने आपको "नाथ" कहते हैं और बकायदा अपना नाम नाथ से ही समाप्त करते हैं – क्या ऐसा करने से वे नाथ या गोस्वामी बन गये । मात्र नाथ कहने से क्या उनके सगाई सम्बन्ध नाथ गोस्वामियों में हो जायेंगे । क्या हम कामड़ की बजाय अन्य जाति का नाम लेंगे तो क्या उस समाज के लोग हमें अपना लेंगे या हमें उनमें रिश्ते नाते करने की अनुमति प्रदान कर लेंगे । क्या वे हमारे साथ खाना पीना या अन्य सामाजिक व्यवहार सरलता से कर लेंगे ।

डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपन्थी – जीवन परिचय

जन्म : डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपन्थी का जन्म नागौर जिले की जायल तहसील के कचरास नामक ग्राम में

पड़ियार गोत्र में हुआ आपका जन्म कामड़ साधु घराने में हुआ पिता श्री गिरधारीदास व माता श्रीमती पदमादेवी के गर्भ से सं. 2012 तदनुसार 30 सितम्बर 1955 को हुआ ।

दीक्षा : जोधपुर नागौरी गेट स्थित बीजल आश्रम के महन्त श्री श्री 108 माधोराम से 1970 में दीक्षा ली ।

शिक्षा श्री सार्दुल आचार्य संस्कृत विद्यापीठ बीकानेर से सन् 1979 में शास्त्री 1981 में व्याकरण आचार्य जोधपुर विश्वविद्यालय से 1989 में एम. ए. दर्शन ग्रुप, 1990 में एम. फिल. 1991 में नेट पास (यू. जी. सी.) 1995 में पी.एच.डी.

प्रकाशन : डॉ. पी. पी. पंथी के द्वारा लिखित एक 328 स्वरचित वाणियों का ग्रन्थ दो बार प्रकाशित हों चुका है ।

संशोधन : लगभग 15 सन्त महात्माओं की वाणी के ग्रन्थ संशोथन कर छपवा चुके हैं ।

प्रचारण : आकाशवाणी से कई निबन्ध भी प्रकाशित हुये हैं ।

सम्प्रति : जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के संस्कृत विभाग में असिस्टेन्ट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं ।

सम्पर्क सूत्र : 1) बीजल आश्रम नागौरी गेट के बाहर, कागा रोड, जोधपुर, फोन 548241

2) रामचन्द्र गुसाई बाबा भली करें संस्था रामदेवरा, फोन एस.टी.डी. 02996 (नि.) 37017 (आ.) 37018 ।

कामड़ समाज के घरों/गांवों की गोत्रवार सूची (जिला–नागौर)

1) परिहार- चौसली, खारड़या, पावा, कचरास भिया हथारा, खाटू ।
2) कडैला- निम्बोला, कालू, बोरून्दा, गुडला, बस्त्या ।
3) पंवार- जुन्जाला, रूपाथल, खीवताणा, साडिला, गगराणा ।
4) मार्कंड- ईनाणा, रास, बूटाटो ।
5) चौहान- मकराना ।
6) गागल- चूआ (नागौर) लोहरवाडा, राजोसी ।
7) मेहरडा- मिध्यान्ह, गेडामोडी, सरनावडा, कुराडा, भूताया ।
8) कटारिया- खिन्दाखोर, पीसांगन ।

9) बिरंट- खुडी, दुगोर, सुजानगढ, पडवाला, कटा ।

10) लूना- दुस्तावु, इन्दौर ।

11) हिंगडा- रिडमलसर, पूनास ।

12) इन्दावत- भियावा, बोरावड, चावण्डया, तोषीणा, (बोरावड), मीठडी ।

13) बाण्या- जाणी, भिचावा ।

14) हेनू- उबासी, पिण्ढया ।

15) सगरवा- गिण्टया, सारंडा, रेण ।

16) रडोदपा, रडोद ।

17) गुडसर की मूलर

18) रोहलण कीटया में गाँव

19) पडियार- लोरोली चौसली

पीर 1 भूतावा 2 चूआ 3 चौसली

लिछमणदास जी रिडमलसर के बागांव में जीवित समाधी ली ।

20] तंवर- दावडया 21[सोलंकी- भावस्या

22] बडजात्या- हिराणी 23] जैपाल- डेगाणा

24] ब्राह्मण- रोईसा

25] बोराणा- करा पिंडवाड़ा, सूर्यास, मंगलाना ।

जीवित समाधियां :–

1 ओमदास कामड भूतावा तह. डेगाना बच्छीपुर धेंनदासजी ।

2 लिछमणदास जी समाधी बाप ।

3 बीठवल्ल्या में ।

4 खुडी [विवरण आना शेष है] ।

ब्राह्मण्या गौत्र जिला पाली की गौत्रवार सूची

1 कटालिया 2 बोपारी 3 चिरपटिया 4 सारंगवास 5 म. प्र. ।

2 मकवाणा- पाचुण्डा बडा

3 टॉक- पाचुण्डा छोटा ।

4 गहलोत- मुसाचिया शेखवास होराव ।

5 पूनड- पाली सरियारी बस्सी मांदाजों की लस्साणी, चेलानास, गुढास्वरूपजी [आऊवा] ।

6 चौहान- सारण चौकडी, देवली कलां, बायड़, दुशाल-पुरा, बोयल, बेनण ।

7 गन्डेर- देवली, [आऊवा], नीमली. राणावास नीजाजी का गुढा, गुढा बडा ।

8 काला- बई, कर्मावश–पाली ।

9 गोयल- झाक, निम्बोल ।

10 पंवार- राणिवाल, आसरडाई, पीपलिया, बीसलपुर सोजत ।

11 पूनीया- पाली जैतारण ।

12 डांगी- बिलाडा ।

13 जाम- भटन्डा पिचियाग छदलाई खुटीया ।

14 पड़ियार- पीपलियां खुर्द, भटिण्डा ।

कामड़ सन्त उदाजी गांगल की धूणी चुआ जिला नागौर का परिचय

विक्रम संवत् 1700 के लगभग ग्राम चौमू चिरायी जिला जोधपुर से रायका [रेबारी] परिवार का एक लड़का घर से नाराज होकर निकल कर जोधपुर आ गया । जोधपुर दरबार के सिपाहियों ने उसको पकड़ कर महाराजा के पास प्रस्तुत किया । महाराजा ने उसकी जाति पूछ कर ऊँट चराने के कार्य के योग्य समझ कर अपने पास रख लिया । राजा के ऊँट जहां अभी रायकों का बाग स्थान है वहाँ बैठते थे इसलिए यह जगह इस नाम से प्रसिद्ध हुई । जब वह लड़का होशियार हो गया तब राजा रायका जाति के लोगों की लड़की से उसकी शादी कराई । उसी के वंश का गिरधारी जी नामक रायका गांव रामस्या जिला नागौर बसाया । रामस्या में गिरधारी जी के लड़के उदाराम जी को लगभग 300 वर्ष पूर्व

रामदेवजी के दर्शन हुए। वह उस समय ऊँटों का टोला चराने गया था। एक सांड का टोरडा [बच्चा[मर जाने से वह उदारामजी के साथ ही रहती थी। दोपहर के समय उदारामजी खेजडी की छाया में सोये हुए थे। साँड पास में बैठी हुई थी। उस समय रामदेवजी वहां पधारे तो घोड़े को देख सांड चिमक गई। आगे की कथा पद्य के रूप में परम्परा से चली आ रही है। जो इस प्रकार है :- बाबा रामदेवजी द्वारा उदाराम को कामड़ भेख लेने के लिए विवश कर देने की यह कथा मारवाड़ के जन-जन को मौलिक याद है आज भी जम्मा जागरण में इस कथा को गाया जाता है अर्थावणी द्वारा हूबहू घटना का रोचक वर्णन किया जाता है। बाबा रामदेवजी का ड संत सम्प्रदाय के सम्बन्ध पर प्रकाश डालने वाली यह कथा व इसके तथ्य प्रमाणिक हैं। उदाजी रेबारी का कामड़ समाज में सम्मिलित होकर बाबा रामदेवजी के आदेश पालन व काम: सम्प्रदाय का अछूतोद्धार में योगदान व तत्कालीन समय का इसमें विवेचन किया गया है।

पद्य :—

बैठी सांड भड़क दे उठी, लीले घोड़े वीरा कुण असवार
रामदेवजी कहते हैं :—

उदा छोड़ दे रे सांड सम्हाल हर की सेवा
दाखल हो जावो अलख की लार ।।1।।
अजमल सुतन रामदेजी मिलिया,
पीर जी मिलिया भुजा रे पसार
मिलियों पीर मना कुण कर सी,
जुग पूजे सारो संसार ।।2।।

उदा कहता है :--

भेख लेबु म्हारो वंश लाजवे हंसी होवे भायाँ के माय
अजमल सुत न रामदेजी मिलिया ..... ।।3।।
घटना-रू रूवाली सूयां का घोबा
ईगन लगाई देही के माय
अब थारो भेख लेवु अन्नदाता
चुग खावु बाना की लार ।।4।।

अर्थावणी– रामदेवजी के घोड़े से चिमक कर जब सांड उठी तो उदे राम केवे, महाराज आप कुण हो कुण कोनी हो म्हे जाणु कोनी रामदेवजी केवे तूं काय नी जाणे म्हाने सारी दुनिरां जाणे। उदाराम केवे म्हे भोलो हूँ महाराज आप बतावो जरा ठा पड़ें। रामदेवजी महाराज कहवे रूणिचो गांव हे रामदेव नाम हैं थने भेष देने वास्ते आयो हूँ। उदाराम कहवे महाराज भेख लेबासु लोग म्हाने वुरा कहसी भाई बन्ध हँसी करसी आ बात म्हारे

जचे कोने रामदेजी कहवे थारे जचे काई कोनी बार जचा देस्यूं । महाराज कँवार करङी नजर सू झांकिया । उदाजी के देह में सूयां का घोबा चालबा लाग्या । । पूरा शरीर में आग लाग, ज्यान महसूस होवे जद उदो रेबारी महाराज कँवार के पगा पड़ र माफी मांगी । अब म्हने ठीक करो मैं थारो भेख लेस्यू । रामदेवजी ठण्डी नजर करा वीने ठीक कर अन्तर ध्यान हो गया । उदाराम मन में सोच्यो कोई घडो पुल बरती जगी है आपा रामदेवजी को स्थान देख र नारेल बधार देवा । बाबा अब नहीं आवेगा यान सात बरस बीतग्या । रामदेजी ने ध्यान लगाया कि उदाराम भेख लिया या नहीं । रामदेजी हरभूजी से कहवे कि म्हे उदाराम सू भेख लेबा कि कहयों पर वो लिया नहीं रामदेवजी रूणिचा सू रामस्या आग्या सम्म की टेम ही उदारामजी भूरी सांड पर बैठकर सब साँडिया को इकठ्ठी करी । उन टेम रामदेजी आके उदाजी को बताया कहने लगा–

गायन :- भूरी भूरी सांड लसरकाऊ चाले
हींस करे घोडो सांडया के माय
कठे म्हारी सेवा कठे म्हारी पूजा वचन चूक
होयो विष्ठाल

टूटी नाङ जीव दुख पावे उदल पड़या धारण
पर आय
ज्याके घर जपाया महाराज कुंवार (5)
अजमल सुत ने ....

अर्थावणी– साम की टेम ही गांब का लोग खेता सू घर आबा लाग्या उदारामजी घरङू जूत्योड़ा रास्ता म पड़या म्हाराज रो घोडो चारो मेर फिर पर दुनिया न दीख कोन, गाँव का लोग उदाराम का पिता गिरधरजी न घर जार कहया के उदरामजी क घरङू जूत्योङा है ।

उदाजी खत्म हो जाय व्याने घर लावो उदयरामजी के चार भाई हा । हीरो, डूंगो जैसो और लालो, उदयरामजी समेत पांच भाई हा चारो भाई माचो लेर गिया माचे में सुवाण घर ल्याया घर ल्यार झूपड़े में सुवाण दियो वीण टेम म गांव का ठाकुर मोतीसिंहजी हा वे आइगा मोतीसिंहजी कियो काई बात हुई गिरधारीजी कहयो सांड पर सूं पड़गो घरङू जूतगा जद ठाकुर मोतीसिंहजी कहयो कि पांच पीरां री फेट में आया है तो पांच बकरा ऊपर वार और चोढ दो । पाँच बकरया चढा दिया चढा दिया चढाने से घरङू ज्यादा जूतग्या । मोतीसिंहजी गिरथारी सूं कहयो पाबूजी रो बकरयो चोढयो नही । पाबूजी चोढो तो ठीक होव, जद रामदेवजी सौच्यो ए तो

बकरया रा कण्ठ काट्या जासी यांक, तो पूरो रेवड़ है ए तो माताजी न, भैरू जी न, मनाव आपां खुद चाल दर्शन देवा । रामदेवजी बालीनाथ को भैख कर्‌यो उदयरामजी के घर गया ।

गायन : पगल्या पावडी माथे पर टोपीदर्शन भलके
कानां के माही
भीक्षा घदय की माता संग चल्यो द्वारका न जाय
अजमल सुत न रामदेवजी मिलिया ।।6।।

अर्थावणी– जार अलख जगाई जद मोतीसिंह जी कहयो अठ भीक्षा कोई नहीं घाल बस्ती में जावो माया वाया भीक्षा घाली रामदेवजी कहयो मैं खाली नहीं जाऊँ ठाकुर कहयो खाली तो कोनी जाओ पण अठ एक लड़को खत्म हो जाय मैं बिन लेर बार जावां । रामदेवजी कहवे मैं सूणी न्यारो हूँ और बैद्य न्यारो हूँ सरगां की टूट जावे तो भी दो घड़ी जेज लगा दयू जराँ मोतीसिंहजी और गिरधारी जी कहयो कि महाराज झाड़ो झपटो आप भी देवो, उदाराम झोपड़े में सोता हा व्हांकी माचे के सहारे पिण्डो ढाल दियो । रामदेवजी पिण्डे पर नहीं बैठा । पावडी खोल पावडी पर ही बैठगा । उदरामजी ने केव–

गायन :– उदा सूतो नींद लहर किबुं लेवे
सूतो पड़यो ढोलिया के माही
आगलोडी भक्ति सम्हालो रायका
नहीं छोडेला थाने म्हाराज कँवार
लंका कोट चढया भगवन्ता, जद हो तू दल के म्हाय
रावण सामा बाण बावया राजो हुया मैं दीनदयाल
दरवासो को चेलो कहोजे जन्म लियो है
रायका में आय
ऊँच नीच को नहीं आंतरो भक्तां को
सीरी महाराज कँवार

अर्थावणीत्र भाई तू जुगांजुगां को भक्त हैं थान छोड़ू कोन थाने भेख लेनो पड़ो । उदेरामजी कहेव मैं भैख ले लेवा म्हाने ठीक कर दयो, जद कियो तू आगे ही केवे हो न कि म्हाराज मैं अब्र जरूर भेख ले लेस्यू । रामदेवजी हाथ फैरयो है एकदम शरीर कंचन को होयग्यो रामदेवजी पवन भेला होयग्या, झोपड़ी में बड़ता देख्या निकलता नहीं देखया उदयरामजी बार निकल रामदेवजी की जय बोली-जय बोलते ही वे पाँच बकरिया का माथा जुडगा, वे जिन्दा होग्या ठाकुर मोतीसिंहजी गिरधारीजी सुकहवे वो आदमी कुण हो कुण नी हो उदेरामजी कहवे वो रूणिचा वाला रामदेवजी हा म्हते कहवे तू लख ले ले मैं भेख

लीयो कोनी म्हारे म या हालत करायी। ठाकुर मोती-सिंहजी और पिता गिरधारी जी कहेवे थारे पाछे राम-देवजी का दर्शन मैं भी करया। अब तू भेख ले ले मैं बड़ा राजी हाँ। उदारामजी बीज के दिन भगवां लिया।

गायत :-- से बीज का करिया भगवां पिण्डत करया
म्हाने महाराज कँवार,
अजमत सुत से रामदेत्र मिलिया ।।8।।

अर्थावगी :– उदेरामजी भेख लेकर ऊँवो जाति सू आटो ल्याव व खाव रामस्यो छोड़कर जूनपुरा में रहने लगे खात्यां कुम्हारां के घर रोटी बनावे मेघवाला के घर जावे कोनी। रामदेवजी सोच्या दोपहर की टेम उदेराम जी सूता हा। रामदेबजी कहयो सूतो है क जाग है, कि म्हाराज जागू हूँ। म्हाराज आप क्यांन पधारया महाराज म्हे आपको भेख ले लियो आपको कहयो कर लियो राम-देवजी कहयो खामी है उदेरामजी कहगे कांई खामी है। रामदेवजी कहवे मेघवालों की रोटी जीमो। उदेरामजी कहेव याँकी रोटी मैं नहों खावां पेट में जरे कोन। राम-देवजी कहव म्हांक तो छतीस कौम की जरे हैं उदेराम कहेवे आपके जरे है पर म्हार जरे कोनी। रामदेवजी कोप कर कहयो मैं अभी जरा देवू–

गायन :– कोप्या कँवर करी ऊपर किरपा हरकोप्या है
महाराज कंवर
फोडनांकी आँख्या करदीनों कोड़यो रक्त झरे
देही के माय
अब थारी रोटी जीमूं महाराजा चुग खाऊ
बाना की लार
अजमल सुत न रामदेव मिलिया ।।9।।

अर्थावणी– रामदेवजी उदेरामजी न ठीक कर दियो उदेरामजी वहाँ मे रवाना होग्या दूदाराम दूधरया मेघवाल के घर जायके कहयो म्हाने रोटी जल्दी से जल्दी खुवावो दूदाराम कहयो म्हाराज थे माकी रोटी क्यां जीमो म्हे नीची जाति का हां उदेरामजी कहेव ऊंची नीच की कोई बात नहीं, थे म्हाने भोजन करावो । दूदाराम के घर रोटी जीमनी चालू कर दी । उदाराम को भतीजो बकरयाँ उरण गुमग्या हा ज्यांन सोदण वास्त आयो हो खाती कुम्हारा क पूछयो उदाराम काकाजी कठ हैं, वे बोल्या वे तो अब मेघवाला क घर रोटी जीम हे । उदाराम को भतीजो जार वांन देख्या और व्यान कहयो थे भ्रष्ट हो गया हो गांव रामसे में जायके काका बाबा ने कहयो कि उदेराम काकोजी मेघवालां की रोटी जीम

काका बाबा कहयो, हाका मत कर, बात मत सुणावे, आधी रात को चालके माथो काट र बोरा में बूर देस्यू, रात की एक बजे चारो भाई मारने को तैयार हुया। उधर रामदेवजी रूणिचा सू रवाना होग्या म्हारा भगत न मार तो मन ही जाणो पड़सी।

गायन :– सगा भाया दगो बिचारियो, उदा पिण्डत न
मारण ने जाय
आगे दुष्टी लारे म्हाराजा, जाता काढी
भच तलवार
हींस्या घोड पड़या मुख आगें धरती के चेप्या
महाराज कुंवार
अजमत सुत ने रामदेव मिलिया पीरजीं
मिलिया भुजा पसार ।।10।।

अर्थावणी– उदारामजी नींद में सूता हाँ रामदेवजी जार जगाया। उदराम थन मारण न थारा भाई आया उदराम कहेवे महाराज या म्हारी भूण्डी कोन थारी भूण्डी लागी थार नामस्यू म्हे माँगे हो और खावे हो जद रामदेवजी कहैंव उदयराम थारा भायाँ ने सम्हाल। उदरामजी उठ र देख तो सब क घरडू जूत्या हैं थडपडाहट कर रया है बडा भाई डूंगोजी तलवार सिया ही उबा हाँ हाथ नीचे नहीं आवे। रामदेवजी कहेवे थारा भायाँ न

ठीक कर दे घर जावे । उदेरामजी कहेव आ विधि म्हार-कन कोनी रामदेवजी कहेव मैं सिला फेर भी कमी । राम-देवजी चन्दन का पगल्या काढ र दिया यान खोल र झाट बरतावो ठीक हो जासी तो उदरामजी इन विधि सू भाया न ठोक किया । डूगोजी का हाथ ठीक नहीं हुवा बाकी भाई ठीक होगा । घर चले गिया उदरामजी का पिताजी गिरधारीजी वान आ ठा कोनी ही कि ये उदयरामजी न मारण गिया हैं तो गिरधारीजी उदयरामजी को मनाने आवे है ।

गायन :– ढोल नगारा सहेलिटा मंगल गावे उदा
पिण्डत न मनाबा जाय ।
धीनथारो भाग मिल्यो परमेश्वर आशीष देवो
बंश के माय ।।
अजमल सुत ने रामदेव मिलिया ।।11।।

अर्थावणी-- उदरामी केहवे मैं आशीष जाणू कोनी पिता कहवे कि रामदेवजी न वुला, भाई रामदेवजी आयगा कियो मने क्यो याद करयो पिता आशीष मांग है । रामदेवजी कहवे थार मूण्डा सू जो वचन घोडसी वे सही होसी :--

गायन :-- अमर बेल सिंघोडा फल ज्यो वचन फलावे
महाराज कंवार
अजमल सुत ने रामदेव मिलिया ।।12।।

अर्थावणी– उदयरामजी केवे फलज्यो फूलज्यो पर गांगल गौत्र का रेबारी गांव रामसी में मत रीजो गांगल गौत्र रेबारी रामसी छोड दियो केई हबचर गांव आयगा केई नीम्बी, जोधा, लंगोड जाय बस्या। रामदेवजी ने उदेरामजी कहेवे कि महाराज म्हे भजन जानूं नहीं ज्ञान जाणू नहीं दुनिया पूछ सी माथे पर भगवा भेष है म्हाने ज्ञान सुणावो।

गायन :-- सुआ पोर शारदा भेजू ज्ञान गुष्ट की कमी
न कई।
डग भोपाल दिगम्बर दीस सोई पडेला पगां
में आय ।।13।।

अर्थावणी– उदयरामजी कहेवे म्हाराज म्हान आसीस दयो महाराज केहवे थारा अकेला वास्त ले सी या पीढिया लग लेसी। उदेयरामजी कहेवे पीढियां लग देवो।

गायन :-- सातो पीढी सवाई ने जाणजे बचन फलावे
महाराज कंबार।
गांव रामसे को जात रायको उदो गावे
भेख की लार।।
अजमल सुत ने रामदेव मिलिया पीरजी
मिलिया भुजा पसार।।

मिलियो पीर सतां कुण करसी धणी ने
पूजे जुग संसार ।।14।।

अर्थः-- इस प्रकार उदेरामजी रामसे गांव छोडकर चूहा गाँव में आ रहे इनकी आगे की पीढी में चलकर संत हुये ।

1) उदयरामजी 2) मानदास
3) गोरमदास 4) बीजलदास
5) मुकन्ददास 6) कानदास के तीन पुत्र हुए ।
7) भंवरलालजी गांगल जो अभी तारघर नागौर में कार्यरत है ।

चन्दन का पगल्या जो रामदेवजी दिया इनके भाई बन्धु ग्राम राजोसी में रहते हैं जिनके पास अभी भी मौजूद है । रामस्या गांव में रामदेवजी आये वहां पर खेजड़ा लगी हुयी है जो इस घटना की साक्षी बतायी जाती है । महाराज कँवार के घोडो के चार पाँव और एक भक्त के नाम पर पांच खेजडी लगी है । जहाँ अभी भी चमत्कार होता है ।

कतोरिया वंश ग्राम बड़गांव जिला अजमेर का परिचय :-

11 वीं शताब्दी में ग्राम बड़ल्या (अजमेर) के रावत श्री जोधासिंह संन्यास लेकर कामड़ जोगी बने इनके वंशज जोधाजी के लखमदास इनके अणेलदास के मणेलदास के पेडुदास के भींयादास के सवाईदास के जसराज के उदादास के डूंगादास के जगास के टीकूदास के नेतादास के खेड़ादास के पन्नादास के खेतुदास के मोहनदास के श्रवणदास के मानदास के दो पुत्र हुए :-

1) भावुदास, 2) वक्षादास

दिलवाड़ा बसाया:- किशनदास, अलाबक्षदास, गुलाबदास जवानदास, गिरधारीदास, रीडदास, किशनदासजी गोद आये चन्द्रदास, बलवन्ता बसासा:- पन्नादास, घीसादास, प्रहलाददास, मदन, आत्माराम, प्रेमचन्द शैतान जोशी वर्तमान (बड़लिया बसाया) - बक्षादास, अर्जुनदास, दूधादास, लखमदास, नारायणदास, लादूदास, जोगीदास, मोहनदास, मुकेश, राजु, (नागोला बसाया) :- बखतादास, पन्ना, रामदास, उदयदास, मांगुदास, रामचन्द्रदास,मदनदास महावीर ।

किशनदासजी बड़गांव गांव में धुणी चेतायी उनके गुलाबदास उनके रोड़दास इनकेपुत्र चन्द्रास व पुत्री

दरियाव बाई (लेखक की माताजी) हुई। चन्द्रास ने धूणी की जगह बाबा रामदेव का मन्दिर बनवा कर पगल्या स्थापना करवाई। मकान व कुआ बनवाकर बगीचा लगवाया। चन्द्रदासजी के बड़े पुत्र जोधपुर में भा. जीवन बीमा निगम में सर्विस में है तथा जोधपुर में ही पक्का मकान बनवाया है। इनके एक पुत्र राजाराम हैं। छोटा पुत्र प्रेमचन्द के पुत्र कन्हैयालाल है। इनके एक पुत्री कमला बाई है।

चन्द्रदासजी के पिताजी का देहान्त बचपन में ही हो जाने से खुद अपनी मेहनत व समाज लेवा में समाज में दूर दूर तक घूम कर इतिहास व साहित्य की सामग्री इकठ्ठी की है तथा हिंगलाज खण्ड की लालू जसराज की कथा लिखवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कामड समाज जिला शाखा अजमेर के विगत 7 वर्षो से अध्यक्ष का कार्य भी कर रहे हैं। तथा अपने निवास पर सामाजिक सम्मेलन भी करवा चुके हैं। सामाजिक कार्य के लिए मध्यप्रददेश के नागदा पीपल्या, नीमच, जावद सहित कोटा, दिल्ली, जयपुर, भीलवाड़ा, जोधपुर, बर में भी भाग लिया है।

सोढा वंश सिरोंज (गेहलपुर) अजमेर का परिचय :-

कामड समाज को नाथ सम्प्रदाय के 350 आसणों के मुख्यपीठ गेहलपुर (किशनगढ) का प्राचीन पट्टा संवत् 1888 का सिरोंज के कामड परिवार को जारी किया गया वह अभी मूल रूप में मौजूद है जिसमें लिखा है कि गहला रावलजी आयसजी को नाथ समाज के अखिल भारत के 350 आसण मानते है व पूजते हैं। उन सभी 350 आसणों में नाथ समाज में मुख्य आयसजी के साथ ही साथ कामड को भेंट पूजा भी मिलती रहेगी तथा इनमें सोरत का (शिवरात्री) का जागरण का अधिकार कामड का होगा यह पट्टा फतेह रावलजी द्वारा जारी किया गया तथा इसमें फतेह रावलजी से पूर्व आयसजी श्री बखत रावलजी महाराज द्वारा कामड रामदास व ज्ञानदास का पूर्व में भी इसका पट्टा जारी होने का लिणा गया है।

जैसा कि अध्याय तीन में हिंगुला खण्ड में हिंगलाज देवी की विस्तृत जानकारी दी है परन्तु सिरोंज ग्राम पंचायत का गांव गहलपुर जहां 200 फुट ऊँची पहाड़ी पर 500 बर्ष पुराना ऐतिहासिक हिंगलाज मातेश्वरी का मन्दिर बना हुआ है तथा नाथ सम्प्रदाय की मुख्य पीठ हैं व कामड जाति के सिरोंज के सोढा परिवार के पा

इनके द्वारा जारी पट्टा देखकर लेखक स्वयं सर्वेक्षण हेतु वहां गया व 70 वर्षीय श्री रतननाथजी जोगी पंवार, हजारीनाथ जी भाटी व सुखदेवनाथजी से इस सम्बन्ध में ओर जानकारी प्राप्त की। इन्होंने बताया सन् 1315 ई. में अलाउद्दीन खिलजी से युद्ध से युद्ध के समय रानी रंगादेवी अपने अबोध बालक को एक महात्मा को सौपकर प्राण न्योछावर कर गई। यह बालक महात्मा के साथ इस स्थान पर आ पहुंचा जहाँ नाग पहाड़ी के सुनसाग जंगल में बालक को गोरखनाथजी के दर्शन हुए। दर्शन पाकर बालक घबरा गया। घबराने से बालक का नाम गेला रावल रख दिया, जिन्होंने बाद में गेलेश्वर नाथ योगी के नाम से खूब प्रसिद्धि पाई। गेलेश्वर नाथ ने गोरखनाथ का उपदेश पाकर 200 फुट ऊँची नाग पहाडी की चोटी पर हिंगलाज मातेश्वरी के मन्दिर निर्माण करने की ठान ली। गेलेश्वरनाथ गुरु के आदेश को सर्वोपरी मान कर हिंगलाज देवी को लेने पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रान्त में मकरान क्षेत्र में हिंगलाज के स्थान को पहुंचे। वहाँ बुढिया के रूप में देवी माँ ने दर्शन दिये व अपना असली रूप दिखाया। गेलेश्वर नाथ ने वहां से लौटकर इस पहाडी पर माँ का भव्य मन्दिर बनाया। जैसा कि

अध्याय तीन में बताया गया है कि त्रेतायुग में लालु जसराज कापड़ी (कामड़ योगी) ने राजा रामचन्द्रजी को हिंगलाज धाम पुरषवाई थी, तथा कामड योगी सम्राट अकबर के समय तक तेरहताली के नाम से अकबरनामा से प्राप्त जानकारी के अनुसार दूर दूर तक घूम कर माता हिंमलाज देवी की उपासना का प्रचार प्रसार करते थे। कामड़ जाति के कुछ परिवार परम्परानुसार आज तक नाथ व गोसाई समाज में सोरत का जागरण करते हैं व उनसे भेंट पूजा लेते हैं। इस प्रकार हिंगलाज देवी के दूत यानि कामड़ की प्रमाणिकता ऐसी घटनाओं व पट्टों से प्रमाण सिद्ध है।

माह मई सन् 1567 ई. में अकबर अपनी सेना के साथ चित्तौड़ जा रहा था कि तब रात्रि विश्राम करने के उद्देश्य से सेना सहित इस पहाड़ी पर डेरा डाजने पहुंच गया और वहाँ विराजमान एक संत से पानी पीने की ईच्छा जताई। संत ने अपने कमण्डल से पूरी से ा को पानी पिला दिया। यह चमत्कार देख अकबर काफी प्रभावित हुआ। उसने अपना कीमती दुशाला महात्मा को भेंट किया। महात्मा को महंगे दुशाले से क्या काम चिमटे से पकड़ क र धूणे में डाल दिया तब मन्त्री ने बाद-

शाह को भड़काया बादशाह ने क्रोध किया तब महात्मा ने धूणे से चिमटे से पकड़ कर वैसे ही बहुत दुशालों का ढेर लगा दिया तथा कहा तुम्हारा पहचान कर हाथ लगाना नहीं तो स्वयं भस्म हो जायेगा। तब बादशाह घबराया व इस चमत्कार की स्मृति में इस स्थान का नाम श्री आसण खास हिंगलाज मातेश्वरी रखा गया। तथा इस पहाड़ी के समीप दो बावड़ियां (कुए) का निर्माण करवा कर लोगों को पीने के पानी की व्यवस्था करवाई तथा मंदिर व्यवस्था व पूजा पाठ के लिए ताबा पत्र लिखकर दिया।

पहाडी के ऊपरी तल में हिंगलाज मातेश्वरी का मंदिर व उसके ठीक नीचे 16 समाधियाँ बनी हुई है जो आयसजी गद्दी नसीन होकर मृत्यु हो गई उनकी है। रतननाथजी ने अपनी स्मृति से इनमें से 9 आयसजी के नाम इस प्रकार बताये हैं-

1 शिव रावल	1 शिव रावल	निहंग गादी
2 बखत रावल	2 बखत रावल	,,
3 सूरज रावल	3 फूल रावल	,,
4 फतेह रावल	4 फतेह रावल	,,
5 फूल रावल	5 सूरज राचल	,,
6 बादर रावल	6 फूल रावल	,,

7 सवाई रावल 7 बादर रावल "
8 किशन रावल 8 सवाई रावल "
9 किशनरावल वर्तमान संवत् 2025 से

गेहलेश्वरजी के सात चेला जीवित समाधियां ली:-

1 लाखा रावल 2 जसा रावल [अरांई से]
3 चन्द्रा रावल छोटा लाम्बा में
4 चन्द्रावल गेहलपुर
5 हरड़ा रावल 6 हीरा रावल
7 सोम रावल

हीरा रावल पानी की पखाल भर कर पहाडी पर चढ जाता था। आयसजी के श्राप से वह भैंसा हो गया जिसके खुर व घटना के चिह्न पहाड़ी पर अभी भी मौजूद है। सिरोज के सोढा गौत्र के ज्ञानदासजी कामड आयस जी बखतरावल जी के सम काल में नाथ सम्प्रदाय के 350 आसणों व गेहलेश्वर आसण में हिंगलाज देवी का जमा जागरण करते रहे बाद में फतेह रावलजी के समय रामदास कामड़ व इनके छः पीढी बाद गणेशदासजी के लादुदास व कंवरीदास, लादुदासजी के रामरिखदास,

सूरजमलदास, बाबूदास, रामेश्वरदास व मदनदास चर्तमान है ।

सूरजमलदासजी वर्तमान में सिरोंज में रहते हैं अन्य भाइयों ने किशनगढ मकान बना लिए हैं । सूरजमलदास जी की धर्म पत्नी गीतादेवी (लेखक की बहिन है) इनके कान्ता व पुष्पा दो पुत्रियां व बिजेन्द्र एक पुत्र है । स्वतन्त्रता के बाद हुए सामाजिक परिवर्तनों से जमा जागरण के मूल कार्य को जैसा कि अनेक कामड़ लोगों ने छोड़ दिया है अतः धीरे धीरे यह परम्परा लुप्त हो रही है । व हमारी सांस्कृतिक धार्मिक व ऐतिहासिक पहचान मिट रही है । इन लोगों ने भी अन्य आसणों व मुख्य आसण में जाना लगभग छोड दिया है । फिर भी बुजुर्ग लोग व पट्ठे ताम्र पत्र इसके साक्षी हैं ।

ग्राम देरांठू ब्राह्मण्या वंश परिचय :–

कामड़ जाति के सामाजिक कार्यकर्ता श्री कानदास ब्राह्मण्या का जन्म माता राधादेवी के गर्भ से हुआ । पिता पिता श्री उगमदासजी है काका श्री सूरजम जिनके वंश में आत्माराम व उनका पुत्र गोपाल वर्तमान है ।

कानदासजी मिलटरी इन्जिनियर्स सेवा में सरकारी कर्मचारी हैं 56 वर्ष की उम्र में भी समाज के कार्य के

लिए कहीं भी दूर दूर तक जाने के लिए सदैव तन, मन, धन से तैयार रहते हैं तथा बाहर के लोगों को अपने यहाँ बुलाने हेतु अपने निवास पर सम्मेलन भी रखते हैं ये समाज के ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता हैं चारों दिशा के कामड जाति के लोग इन से वर्षो से परिचित है। इनकी धर्म पत्नी का नाम मोहनीदेवी व इनके चार पुत्र हैं :-

1] कैलाशदास कोटा में एम. ई. एस. में नौकरी में है। इनको धर्म पत्नी कौशल्यादेवी व पुत्र भीकुदास है।

2] गोपालदास इनकी धर्म पत्नी गीतादेवी।

3] धनराज धर्म पत्नि रेखादेवी।

4] ओमप्रकाश धर्म पत्नी पुष्पादेवी एक पुत्री ध्यानादेवी सिरोंज ब्याही है।

कानदासजी के ग्राम देरांठू में 12 बीघा जमीन दो पक्के मकान खेतीबाडी व रामदेवजी की पूजा अर्चना कर सरकारी सर्बिस सहित प्रतिष्ठित जीवन यापन कर रहे हैं।

कोलायत जिला बीकानेर निवासी श्री मोहनदासजी का जीवन परिचय :-

आपका जन्म दि. 5-10-1938 को कोलायत में हुआ। पिताजी का नाम श्री नारायणदासजी

गौत्र-जाम, शिक्षा-मैट्रिक पास
धर्म पत्नी श्रमती उम्मीदेवी, शिक्षा-पाँचवी

आप सरकारी सेवा गिरदावर पद से रिटायर्ड है तथा कामड जाति के इतिहास व शौध में इनका महत्व-पूर्ण योगदान है। अखिल राजस्थान में कामड जाति का सर्वेक्षण करवाने हेतु 800 रुपये खर्च करके 1000 फार्म छपवाकर इन्होने संस्थान को सवंत् 1991 में दिये। जिसके द्वारा कई महत्वपूर्ण जानकारियों का संग्रह हो सका। तथा भीलवाडा व मेवाड मात्रकुण्डिया द अजमेर के कामड जाति के सम्मेलन में आप व्यक्तिगत उपस्थित हुए। वर्तमान में कोलायत में 80 बीघा जमीन ट्यूबवेल ट्रेक्टर सहित कृषि कार्य द्वारा अपना प्रतिष्ठित जीवन-यापन कर रहे हैं।

जुंजाला चौकी का वर्णन :-

जुन्जाला में ऐतिहासिक भव्य गुसांईजी का मन्दिर है। जहां एक चरण की पूजा होती है। हिन्दु इसे गुसांई जी महाराज व मुसलमान इसे कदम रसूल कहते हैं। यहां प्रतिवर्ष नवरात्रा में चैत्र सुदी 1 व 2 को व आसोज सुदी 1 व 2 को परम्परानुसार मेला लगता है। जिसमें दूर दूर राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश,

उत्तर प्रदेश आदि से अन्य यात्रियों के साथ ही साथ कामड़ लोग आते हैं। मंदिर के विशाल प्रांगण में सैंकड़ों कामड़ लोगों के अलग अलग समूह अलख धणी गुसांईजी व रामदेवजी की बाणियां गाते हैं लेखक भी वर्तमान चैत्र सुदी 1 संवत् 2956 को राज कामड समाज संस्थान के अध्यक्ष बाबा बंशीदासजी व अन्य 8 सहयोगियों के साथ जुन्जाला गये तथा वहाँ दूर दूर पंजाव, चुरू, जुन्झुनु, नागौर आदि जिलों के कामड समाज के लोगों के साथ वार्ता कर एक सभा का आयोजन किया। जुन्जाला चौकी के 130 गाँवों के कार्यकर्ताओं ने हमारे सदस्य दल का माल्यार्पण कर स्वागत किया व समाज के इतिहास को लिखने हेतु तन, मन, धन से सहयोग दिया तत्पश्चात् इस चौकी के कई कार्यकर्ता दि. 3-4-99 को बर जिला पाली में आयोजित सम्मेलन में उपस्थित हुए। सम्मेलन में श्री बंशीदासजी नि. खिवताणा वाया रूपाथल जिला नागौर ने बताया। प्राचीन काल में गुसांईजी के मन्दिर की पूजा कामड़ ही करते थे। गोकुलदासजी ने भी मेघवंश इतिहास में लिखा है कि समस ऋषि एक चरण को लेकर जुन्जाला की सीमा पर आये तब उन्हें लघु शंका की इच्छा हुई पर जहाँ से यह चरण लेकर समस पीर निकला

तब यह कोल वचन किया था कि इसे जमीन पर नहीं रखूंगा अतः उस गांव में एक कामड़ मल था उसने समस पीर से चरण अपने हाथ में लिया व जब तक समस पीर भोजन आराम आदि कार्य से निवृत हुआ तब तक वह लेकर खड़ा रहा। गांव के अन्य कई मजबूत व्यक्ति आये पर उस चरण को झेल नहीं पाये इस स्मृति में वहां एक चरण की पूजा हुई वहाँ से चलकर समस पीर जैतगढ आया यहां भी उस चरण को कोई अन्य व्यक्ति झेल नहीं सका यहां भी वही कामड़ भक्त आकर समस ऋषि को आराम कराया। यहाँ से कड़ेल मजेवला भी ऐसी ही घटनाएँ हुई जिनकी स्मृति में मंदिर आज भी बने हुए हैं तथा इन सब जगहों पर कामड साध ही पूजा करते आये हैं। जुन्जाला मन्दिर की पूजा भी मोहनदासजी तक कामड साध ही करते थे बाद में शासन व सत्ता के परिवर्तन के साथ यह पूजा कुछ समय मुसलमानों ने भी की तथा अभी नाथ जोगी इसकी पूजा कर रहे हैं। एक किवदन्ती यह भी है कि खिवजी गरबा गौत्र का मेघवाल जो समस ऋषि का शिष्य था उसकी समाधि पर यह मंदिर बना है। गुसांईजी के भजन में भी आया है कि जागो म्हारा गरबा देव गुसांई भीड पड़या भगता ने उबारो संकट मेटो सांई। घर धारु रे जमो जमायो बाई रूपादे

आई, कोप कियो मेवा का राजा थाली में बाग लगाई।
पांचू पांडव माता कुन्ती, गुरु दुर्वासा आई
भूना आम लगाया बारने, निवत जिमाया सांई
राजा बलि के आप पधारया, भूमि नापने ताई
पीठ नापके देह को बढाया तीन पावण्डा ताई
टिटोडी का बच्चा उबारया रण भारत के माई।
सांच पकड़ लिखे माली, लिखमो डगमग डोले नाही,
जागो गरबा देव गुसांई ।।
एक पद्य में आया है, क्रोड़ कामड़ थारे धूणे तापे
दुर्बल ने कांई ठोड़ नहीं।

लिखमाजी माली के एक भजन में आता है :—

कलश थरप नर जमा जगावे जद कामड़ होकर बैठ गया झालर शंख पच्याणमे बाजे आप अलख म्हारो सांचरिया जोग उपंता जोग उपाया ज्ञान ध्यान गोरखजी खत्या गुरु प्रताप लिखे माली लिखमो दूजा मोडा ने रामा कुण घड़या।

यह मन्दिर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना है बाबा रामदेनजी के परिवार वाले भी यहां जात जड़ूला चढाने आया करते थे यहाँ मन्दिर में एक पुरानी जाल का

पेड है जिसके नीचे बाबा रामदेवजी का जडूला उतरा हुआ है अतः जो लोग रामदेवरा जाते हैं यहां आने पर ही यात्रा पूर्ण मानी जाती है जिससे भादवा व माघ में भी मेला जैसा रहता है ।

यहाँ कामड जाति की एक धर्मशाला भी बनी हुई है जिसमें एक कमरा व बरामदा हैं । जहाँ पर मेले के समय सामाजिक पंचायत आदि कार्य होते हैं । कामड़ लोगों की अनेकों मण्डलिया मन्दिर के मुख्य प्रांगण मुख्य द्वारा आदि अपनी निश्चित जगहों पर बैठकर बाबा की वाणियाँ गाते हैं भक्त लोग भेंट चढाते हैं जिससे इनको आमद होती हैं ।

जुन्जाला में मोहनदासजी के बाद उनके पुत्र दयालदास उनके खींयादास उनके भींयादास उनके हरनारायणदास उनके बनादास व शंकरदास दो भाई हुए, बनदासजी के शिवनाथदास उनके चैनदास व बंशीदास दो भाई हुए चैनदासजी के छोटुदास, गणेशदास, कैलाश, मदन, बजरंग बंशीदासजी के लादुदास व प्रभुदास ऊपर शंकरदासजी के हनुमानदास व सुगनदास इनके दुर्गादास दादुदास ।

कड़ेल अलखजी के धूणी का परिचय:-

तहसील पुष्कर के कड़ेल गांव में अलखजी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक मंदिर है जहां एक चरण की पूजा की जाती है जिसके वर्तमान पुजारी श्री बीरमदासजी गौत्र चौपड़ा S/o श्री भेरुदासजी है दूसरे ओमदासजी S/o श्री जोशी दासजी गौत्र चौपड़ा मोतीदासजी, प्रभूदासजी, लक्ष्मण दासजीं नोरतदासजी निकायड़ हकदार है ।

बीरमदासजी का जन्म हीरादेवी के गर्भ से संवत् 1990 माघ माह मे हुआ । आपके पिताजी का नाम श्री नारायणदास है आप पंडित भेरदासजी के गोद गये हैं । पंडित भेरदासजी के लोग उनके उज्जवल आचरण व सामाजिक कार्यो के लिए आज भी याद करते हैं संवत् 1990 मे पुष्कर मे रामदेवजी के बलाई समाज के मंदिर की स्थापना भेरुदासजी के हाथ से की गयी तब से इनका परिवार पुष्कर मंदिर की पूजा करता आ रहा है । आपके पुत्र बाबुदास भगवानदास है । पोत्र श्री किशन, रवि, दशरथ, सुनीता पोत्री सुनिता है ।

बीरमदासजी कामड़ समाज के पंडा वर्ग 36 गांव के वर्तमान में अध्यक्ष है तथा पिछले 16 वर्षो से सामजिक

कार्य करते हुए पुष्कर मे समाज की धर्मशाला इनके नेतृत्व में स्थापना संवत् 2040 मे की गई। कड़ेल में भी इनका रामदेवजी का नीजी मंदिर है।

श्री ओम प्रकाश पंवार नि. झड़वासा जि. अजमेर की जीवन परीचय-

मेरा जन्म 9 जुलाई 1965 को हुआ। पिताजी श्री नन्दादासजी पंवार व माताजी श्रीमती नन्दूदेवी और दादाजी श्री मांगूदासजी पंवार। दादाजी स्यार (फतहगढ) से आकर डींडवाड़ा (किशनगढ) आकर बसे। बाद में पिताजी ग्राम-दाँता (श्रीनगर) जिला-अजमेर आकर रहे। यहीं मेरा बचपन बीता व शिक्षा प्राप्त की। परिवार अत्यन्त गरीब था फिर भी जैसे-तैसे मुझे पढाया। नियमित छात्र के रूप में हायर सैकण्डरी (विज्ञान वर्ग) नसीराबाद से उत्तीर्ण की तथा बी. कॉम (द्वितीय वर्ष) कक्षा दयानन्द कालेज, अजमेर से उत्तीर्ण की। माताजी व पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था। उनके आशीर्वाद से वर्ष 1987 में मेरी नियुक्ति माध्यमिक विद्यालय, कुचील (अजमेर) में प्रयोग शाला सहायक पद पर हुई। वर्तमान में मैं ग्राम झड़वासा (अजमेर) में निवास कर रहा हूं

तथा उ. प्रा. वि. भटियानी (अजमेर) में अध्यापक पद पर कार्यरत हूं। मेरा सुसराल ग्राम-खोरियाँ (अजमेर) में है। श्वसुरजी श्री सोहनदासजी मकवाणा व दादा श्वसुरजी श्री नेनुदासजी मकवाणां है। धर्मपत्नी का नाम कंचनदेवी है तथा तथा तीन पुत्र राकेश, चन्द्रेश, व मनीष है। बड़े पुत्र का विवाह श्री कानदासजी बामण्यां निवासी सोकलिया (अजमेर) की सुपुत्री श्रीमती मंजुदेवी से हुआ। दो बड़े भाई श्री श्रवणदासजी व लक्ष्मणदासजी परबतसर में रहते हैं। श्री श्रवणदासजी के तीन पुत्र दुर्गादास, चरणदास व चेतनदास है। दुर्गादास पेन्टर का कार्य करता है। एक पुत्री पारसमणि है जिसका विवाह दयालदासजी निवासी बहेड़ा के सुपुत्र श्री रामस्वरुप से हुआ। लक्ष्मणदासजी के दो पुत्र अशोक व दिनेश तथा पुत्रियाँ सुमित्रा, कान्ता ममता, व सुनिता है। छोटा भाई सम्पतदास किशनगढ में कारीगरी (भवन निर्माण) का कार्य करता है। तथा इसकी धर्म पत्नी श्रीमति बिमलादेवी, श्री कानदासजी बामण्यां निवासी-सोकलिया की ज्येष्ठ पुत्रो है। मेरे से बड़ी एक बहिन श्रीमति चान्ददेवी है जिसका विवाह स्व.

लादूदासजी निवासी सिरोन के सुपुत्र श्री बाबूदास सोढा से हुआ। मेरे सभी भाई बहिन साक्षर है।

प्रषक

ओमप्रकाश पंवार, अध्यापक

मु. पो.-झडवासा (अजमेर)

श्री बाबूदासजी सरपंच नि. पिपलिया कला जिला-पाली का जीवन परिचय-

श्री पाबूदास उर्फ बाबूदास पिता किशनदासजी पनड़ माता सिणगारी गौत्र गंडेर, निवासी-गाँव बोपारी, तहसील सोजत जिला-पाली, हाल निवासी पिपलिया कलाँ, तहसील -रायपुर जिला-पाली [राजस्थान]

धर्म पत्नि मोहीनीदेवी पुत्री राजूरासजी पंवार पिहर-गाँव-गुन्दोज जिला-पाली इनके एक पुत्री है ममतादेवी, इनके परिवार में सभी साक्षर हैं।

पिपलिया कलाँ में महाराज मानदासजी रामस्नेही पंथ के अनुयाई थे जिनके कोई पुत्र पुत्री नही थे। इनको सेवार्थ पाबुदासजी पिपलिया में आकर रहे, श्री मानदासजी महाराज इनके सामाजिक रिस्ते से मामा ससुर लगते थे।

जिनकी सेवा माता-पिता की तरह करते थे । वह महाराज मानदासजी इनको धर्म पुत्र कहा करते थे पिपलिया कलाँ में यह आतकखजी महाराज मंदीर पुजा पाठ व किराणा दुकान व्यापार व्यवसाय करते हैं । सन् 31-12-94-95 पंचायत राज चुनाव में भाग लिया जिसमें भारी बहुमत से सरपंच पद पर निर्वाचित हुए जो अपने सम्पूर्ण कार्य-काल तक सरपंच पद का कार्य भार सम्भालते हुए जन सेवा कर रहे है ।

-: समाज के नाम सन्देश :-

प्रिय पाठकों सामाजिक मूल्य समाज का आदर्श है । समाज की दृष्टि में क्या अच्छा है, कैसा व्यवहार वांछनीय है, वह किन कार्यों को अपनी स्वीकृति प्रदान करता है- ये ही विचार सामाजिक मूल्यों को निष्पादित करते हैं । सबके लिए अवसर की समानता एक सर्वमान्य सामाजिक मूल्य है । प्रत्येक समाज इस बात के लिए प्रयत्नशील रहता है कि उसके सभी सदस्यों को उनकी इच्छानुसार शिक्षा प्राप्त करने तथा जीवन निर्वाह हेतु वृति का चुनाव करने के समान अवसर प्राप्त हो । व्यक्तिगत मूल्यों का लाभ केवल व्यक्ति तक सीमित रहता है । व्यक्ति धन-सम्पति मान-प्रतिष्ठा, शक्ति-सत्ता सभ कुछ समाज से

प्राप्त करता हो, पर ये उसके व्यक्तिगत मूल्य हैं । सामाजिक मूल्य नही हैं । सामाजिक मूल्यों का उद्गम है दूसरों की कल्याण भावना । समाज द्वारा कैसा व्यवहार अपेक्षित अथवा प्रशक्षित है, यह अपनी इस समाज पर निर्भर करता है । नैतिक मान्यताओं एंव सास्कृतिक परम्पराओं का योग होने के कारण सामाजिक मूल्य जीवन सार्थक एंव उदेश्यपूर्ण बनाते हैं । तथा व्यक्ति में रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं । अब यहां आपका ध्यान धर्म की और करना चाहता हुँ । मै पाठकों को आदेश या निर्देश नही देता यह मात्र मेरा आपसे अनुरोध है । धर्म मानव जीवन एवं व्यवहार का अविच्छेद अंग है अतः सामाजिक मूल्यों को सार्वभौमिकता प्रदान करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हैं । धर्म सामाजिक मूल्य किसी समाज की प्रगति के सीमा चिन्ह एवं उसके विकास की अवस्था के प्रमाण होते है । हमारी कामड़ समाज अपने सदस्यों से नियमित नैतिक एंव अनुशासित व्यवहार की अपेक्षा रखते है । क्योंकि कामड़ समाज अनादी गेरुए वस्त्र भेरव धारी है इसका उल्लेख इतिहास में हमारे सोध कर्त्ताओं ने दिया व कई पौराणिक ग्रन्थों से मिला है । कामड़ समाज सन्तरूप सामूहिक कल्याण आत्म-त्याग-इन्द्रिय निग्रह, अनासकि

भाव मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न तथा परलोक चिंतन पर विशेष बल दिया गया है । वर्तमान की अपेक्षा नहीं की वरन् धर्म, अर्थ, काम मोक्ष को जीवन का पुरुषार्थ करते हुए अनेक आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ-साथ शिक्षा को उच्चतम स्थान देते हुए में सदेव समाज से आशा करता हूँ कि उच्च-वचन, मृदुवाणी, उत्तम भोजन शुद्ध पानी को अग्रगय स्थान देते हुए समाज में अकुरित होते अंतर विकासों को मिटाकर शिक्षा को उच्चतम स्थान देते हुए हमें गुरु को ईश्वर से अधिक सम्मान देना है हमे इसका अधिकारी माना है ज्ञान की पूजा की है और ज्ञानियों का आदर किया है, वह करना है । इससे सरल निश्छल एवं धर्मपरायण जीवन को अपना लक्ष्य स्वीकार कर धर्मफल, परलोक और ईश्वर के भय से उद्धार, दानी सच्चरित्र, दयालु समाज सेवी एंव सत्यप्रेमी बने जिससे समाज का स्तर ऊपर उठा सकें ।

हमारी कामड़ समाज का अलग-अलग आप भाव रहन-सहन व आचार विचार श्रम साधनों कि वजह से वीखड़त है, कई राज्य व जिलों में भिन्न-भिन्न सरनम या उपजाति जैसे पडा, पंडित, गुसाई नाध आदि लगाने से

हमारी कामड समाज की पहचान न के बराबर है । आप व हम इस पर गहराई में जाये यह सब भाँति-भाति जाती उपजाति बना जाने से हमें कौनसा दर्जा मिल गया है । समाज को दर्जा या जगह तभी मिल सकेगी जब हमारा सशक्त संगठन हो व समाज की पूर्ण पहचान हों । सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन समाज के विकास की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है हमें मिलजुल कर इससे कुठित अथवा हतोत्साहित होने की आवश्यकता नही समाज उधान के लिए हमें एक जुट होकर सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हुए नई पीढ़ी में उत्तम मानव गुण विकसित करने है ।

समाजिक कुरीतियों, मृत्यु भोज, बाल-विवाह, दहेज प्रथा मादण्क द्रव्य सेवन की प्रवति पर रोक लगाने के लिए अपने ज्ञान अनुभव एवं प्रभाव का प्रयोग कर अंकुश लगाने में योगदान कर सामाजिक न्याय की कल्पना साकार कर सकेगें । अपने लिए समाजिक सुरक्षा एंव सम्भान सुनिश्चित कर सकते हैं और समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान के अधिकारी बनें ।

इसी आशा के साथ

आपका अपना शुभेच्छु, सरपंच (पिपलियां कला)

बाबूदास

निम्बोल निवासी सन्तो की वंशावली सेवादास की जीवन समाधी है गोयल राजपुत है ।
सेवादासजी, कमदासजी, मोडदासजी, मूकदासजी
गुणेशदासजी, बालूदासजी, नारायणदासजी, दीनेशदासजी

भेला हुवा इतरे माहि उगवसी काबडिया तू पूछियो अठे वाल्ही हुती सक कठे छे ? ताहरा एकै काबडियें जाय खबर दीवी । कहयो बाई उगवासी आया छे । रुपादें कहयौ-वीरा आथण नू हरभात करि आयसि ।

[3]

रूपा दै रो सौक मालेजी-रा कान भरिया । कहयों आ ढेढा रे जावे छे आ सउ छोत करें । रावजी रावजी कहयो-आप आखिया देखू तो माने । रात पडो तद रुपदे काबल लोठड़ो लै-अर पाँवा लागी । ताहरा सौका मालेजी नू कहयों । उठो देखो डेढा रे गयो छै । ताहरा रावलजी तरवार ले उपर लारै हुआ । जाय देखे ती उगमसी जी बैठा । मुहड़े आगे रूपादेजी बैठी छै । काबडिया गावै छै ।

मालैजी देख, चाकरा कन्हा रूपा दै-री जूती चोरायी अर आप देखे छे तितरे काबडिये हेकणि कहयो-बाई न

सीख देवो । बाई रीया ठोंड़ नहीं छै । ताहरा थान आगे चढायो हंतो । प्रसाल थाली माहे घाल रूपा दै नू दीनिहो अर कहयो जा बाई थारो भलो होवे रूपादै आगे जावे तो जूती नहीं ताहरा सारा ही कांडिया उठिया देखन लागा पण जूती नहीं लहरा उगवासी कहयो साधा साहिब सू अरदास करो । साईब जूति इर्यरी दौडी आवे थारा उसडो बीजो जूति अरस सू आयी । रूपा दै पहरी घरा नू चाली ।

बीच रावल माले राह रोकियों आवती न आडा आप फिरिया । कहो कौन छै 2 कहो जी रावली हिजदासी छै कहयो कठे गई हूति लहरा रूपा दे कहो फूला नू गई हुति कहो म्हारी बायर ने फूलां नू जावै । वाहरा रूपा दै कहो राज हारिया सो सोका रे आदमी छै सू ले आवे म्हारे आणण वालो कोई नहीं तेहीज कारण गयी । रावलजी कहो देखा फूल 2 रूपा दै कहो कासू जोयो सा पिण रावलजो कपडो दूरि कियो थारी उरही लीवी । थाली महाय देखे तो विधि विधि रा फूल छैं महवे माहै एक ही बाग नहीं ये फूल कठा रा छैं । तीके फूल दीठा अर महेवे माही एक ही फल नहीं । तीके फल दीठा । थाली म्हाये धातियों हतो सू माले जी दीठो हुतो । ताहरा मालोजी

रूपा दैरेपग लागण लाग्या थारा रूपादै हाथ पकडियों ।

[4]

मालोजी कहै रूपादे जी इये पथ म्हाये थे छो थे म्हाये मानू हो धातो रूपादे कहो राज पंथ पोहरो छै । ताहरा पाछा उगवासी जी पासै गया । मालोजी पण पगा लगा । रूपा दे कहयो राज सु पंथ में धातो ।

सन्तवाणी के अनुसार

श्री किसनदास धाणका पाल विचला अजमेर से संकलित लिखमाजी माली की वाणी के अनुसार कामड साधो की उत्पत्ति–

।। आरोदी ।।

धवन धवंता धवन उपाया, पवना ही से पाणी किया ।
पाणी उपर पाज बाँधदी, पाज बाँध संसार किया ।1।
या भेरवा धणी म्हारो राचिया, महारा साँचा धणी थाने ओलकिया ।टेर।
नौ सौ नदी नवासौ नाला, मेट मेट कई बार किया ।
नौ कुली नाग पाताला मेलिया, जद सर बासक पर छत्र धरवा ।2।

सात समद पाणी का भरिया, अटकुली परबत बलै किया ।
असंग जुगा पैली श्रृष्टि ऊपाई, जद आप अलख म्हारो खेवटिया ।3।
झालर शंख पचावण बाजे, आप अलख म्हारो साँवरिया ।
कलस थरम नर जमा जगावे जप कामड होकर बैठ गया 4
ब्रह्म रुप ब्रह्मा को दिना, नौ औतारां में कृष्ण हुया ।
कृष्ण होय कंसासुर मारया, जद जा मथुरा में जन्म लिया 5
जोग उपंता जोग उपाया ज्ञान ध्यान गोरखजी कत्या ।
गुरु प्रताप लिखे माली लिखमो या दूजा मोडाने रामा कौन घड़या ।6।

लेखक श्री गोकुलदास ने लिखा है कि मेघवंश इतिहास के पेज सं. 100 के अनुसार-

इस समाज में आचार्य [साधु] कई तरह के होते हैं जैसे-पंडित, पीर, पराना, कामड़ आदि जो इतके कुल गुरू भी कहलाते हैं । विवाह के अवसर पर वर कन्या को 'बेल' नामक अगूँठी पहिनाते है । जमा जगाते हैं मरने पर मृत व्यक्ति की क्रिया कर्म भी यही करते हैं ।

स्व. महात्मा गोकुलदासजी महराज की पुस्तक जमा जागरण की विधि के पेज नं. 10 के अनुसार श्री रामदेव जी महाराज का जमला की विधि में लिखा है ।

ताल मजीरा और चौतारा, साधू भजन करे एक सारा
निर्भय होके कथा सुनावे समय समय आरोधी गावे
'दसमी दूज' ऊजाली आवे, साधू कामड़ जम्मो जगावे

महात्मा प्रतापदास अनामी ने संवत् 2023 में "कामद शब्द प्रमाण" नामक पुस्तक छपवाई जिसमें कामद सन्तों का विशद वर्णन किया गया है।

।। सदा आदि ।।

: भूमिका :

कामद शब्द प्रमाण उन भाइयों के सामने प्रस्तुत है जिन्होंने अपना वास्तविक इष्ट भुला दिया है और अवनति की अन्तिम पराकाष्ठा को पहुँच चुके हैं। इस घोर कलयुग में सब ही धर्मों में जबकि उनमें सामर्थ्य गुरु नहीं रहे, अभ्यासी बहुत कम रहे, हीनता आ गई है। उनको वापिस अपने इष्ट व धर्म की याद दिलाने हेतु जो कुछ अन्तर से अनुभव हुआ, लिखा है। प्रेमी भाई इससे लाभ उठायेगें।

कामद सम्प्रदाय संत मत है। यह आज तक गुप्त रहा। संसारी जन इसके भेद को नहीं जान सके।

इस मत में जो भी संत काया कल्प पारा या उच्च रस भक्षण करके तथा अभ्यास द्वारा अन्तर का अमृत

पीकर अपने आपको सिद्ध गति तक पहुँचाते हैं। उन्हें कामद उपाधि से विभूषित किया जाता है।

इस सम्प्रदाय में बिना गृहस्थ के त्यागे, जोड़े के साथ अभ्यास मय प्रेमा भक्ति के, करने पर जोर दिया जाता है।

इस मत के सतसंगी जब एक दूसरे से परस्पर मिलते हैं। तब "सदा आदि" अपने मुख से उच्चारण करते हैं और यह अपना इष्ट सदा आदि अलख अनामी है, मानते हैं।

कामद शब्द का अर्थ महान् गहन है। सूक्ष्म रूप में "काम" कामना को कहते है। "दा" देने वाला अर्थात् मनोवाँछित फल का देने वाला है संत भाषा में कामद, जितनी मन की इच्छा है। आन्तरिक और बाह्य सबको दमन करके अमने आप में स्थिर रहने वालों को कहते हैं।

यह कामद शब्द प्रमाण की संक्षिप्त भूमिका लिखी गई है संत, सिद्ध, साध, योगी, विद्वान् और सज्जन जनों से प्रार्थना है कि यदि इस प्रमाण में कोई त्रुटि हो शुद्ध करके पढ़ें।

और वास्तव में कोई अनुभवी कामद हो उनके ध्यान

में कोई त्रुटि दृष्टि आये तो दास को अवगत कराने की दया करें ताकि भविष्य मे उसका संशोधन कर दिया जाय ।

जो इस सम्प्रदाय में हों उनसे प्रार्थना है कि वे अपना भोजन, भाजन, भजन और संग शुद्ध करके वास्तविक कामद बनें ।

नीचे प्रमाण में आये कुछ शब्दों की व्याख्या की गई हैं जिससे जिज्ञासु और प्रेमी भाइयों को शब्दों की वास्तविकता समझने में सहायता मिलेगी ।

"कामद" के पर्यायवाची शब्द व अर्थ जैसे–

सिद्धिवान, चेतनस्वरूप, वीतराग, अकामी शब्द भेदी पारायणी, प्रमाणी, क्षयवासना, चेतनपुरुष काया कल्पी, स्थिर पारा ब्रह्मचारी, निजारी और सचियार आदि ।

'कामद-कामनी' शब्द सुरत ।

कबीर-काया का वीर अर्थात् सत्त्व जिसने अपनी देह के सत्त्व को सत्य पुरुष में मिलाया है वह कबीर है ।

गोरख-इन्द्रियों की रक्षा करने वाला मन जिसने अपने मन को त्रिकुटी सुन्न आदि स्थानों में पहुँचा कर स्थिर कर लिया है वही गोरख है ।

नाथ-जिसने अपने मन को नाथ लिया है अर्थात् गुरु मुख बन कर गुरु में ही रत है उसको नाथ कहते है ।

। दोहा ।

पिता गुरु ओटदासजी, माता सुगनी जान ।
गांव लसानी जानिये, तहसील ब्यावर मान ।1।
अजमेर जिला सुप्रसिद्ध, मध्ये राजस्थान ।
देव भरत खंड है सही, यह निश्चय कर मान ।2।
कामद घर उत्पन्न भया, संवत बहतर जान ।
तिथि चैत्र बदी प्रथमा, बार सोम ही मान ।3।
नाम प्रताप है सही, यमुना लक्ष्मी मान ।
मेवा अनामी पुत्र है, हंस तीसरा जान ।4।
प्रेम दयाल दो पुत्रिया, है विद्या की खान ।
इस तरह यहाँ घर बना, भव सागर मे आन ।5।
गुरु 'साहब' अति दया की, घट प्रगटाया भान ।
नहिं तो भव में डूबता, जम करता हैरान ।6।
गुरु भाई पन्नासिंहजी, महाज्ञान की खान ।
इसकी क्या महिमा करुँ, है संतन प्रधान ।7।
इनका संग शुद्ध मिला, अति समझाया ज्ञान ।
तब ही कुछ सोझी पड़ी, नहिं तो बहता खान ।8।
गुरु 'साहब' कृपा की, लीना चरनन ओट ।
भेद दिया धुर धाम का, संत डंके की चोट ।9।

शिव व शक्ति की अराधना व तपस्या कर सिद्धि प्राप्त की थी ।

एक बार 84 सिद्धों में यह चर्चा चली कि सबसे बड़ा कौन ? तब यह निर्णय हुआ कि जो सिद्ध मारवाड़ के रेगिस्तान में अपनी सिद्धि के बल पर वर्षा करवा देगा उसे बड़ा माना जाय तब कर्दम ऋषि ने अपनी तपस्या के बल पर वहाँ बारिस करवाई । वह स्थान बीकानेर जिले का कोलायत है पहले इसे श्री कपिलायत नाम से पुकारा जाता था । वर्षा के पानी से वहाँ झील का निर्माण हुआ ।

कर्दम ऋषि के पुत्र कपिल मुनि जो विष्णु भगवान् के अवतार भी माने जाते हैं के वहाँ तपस्या करने व श्री कपिलायत की प्रसिद्धि फैलाने से अन्य सिद्धों के मन में द्वेष हुआ उन्होंने योजना बनाकर जहाँ कपिल मुनि आँखे बन्द कर तपस्या कर रहे थे उनके पास जाल का पेड़ था उसमें एक मरे हुए हिरण को फंसा कर यह प्रचार कर दिया कि यह सन्त हिरणों को मारकर खाता है । इस घटना से अप्रसन्न होकर कपिल मुनि कोलायत से गंगा-सागर चले गये । इधर मृतक हिरण की आत्मा ने श्री गंगानगर में एक महाजन के यहाँ जन्म लिया । जो जन्म

से अन्धा था । कोलायत क्षेत्र के किसान अपने खेतों की उपज मूंग मोठ आदि बेचने गंगा नगर जाया करते थे वहाँ उस अन्धे महाजन पुत्र ने मूंग मोठ आदि हाथ में लेकर यह कहा कि ऐसे मूंग मोठ मैंने बहुत खाये हैं मुझे इस क्षेंत्र में ले चलो जहाँ से ये लेकर आये हो तब उस महाजन पुत्र को वहाँ लाया गया उसने कपिल मुनि के बारे में पूछा यह जानकर कि मृत हिरण के कारण कपिल मुनि कोलायत छोड़कर चले गये हैं । उस महाजन पुत्र के प्राण पखेरु वहां उड़ गये जिस पंर कालान्तर में किसी राजा ने छतरी भी बनाई है ।

कर्दम ऋषि के प्रीति, क्षमी नाम पत्नियों से हजारों पुत्र नाति हुए जिनसे कामड़ सम्प्रदाय का विस्तार हुआ ।

कामड़ साधुओं का नाथ गोसाई सम्प्रदाय के मुख्य मठों से भी सम्बन्ध रहा है हिंगुआमठ गेहलपुर, हारणमठ बिलाड़ा, राजपुर लादवास, डीसा, उज्जैन तथा पाकिस्तान नगर ठेठा तक के प्राचीन पट्टा व ताम्र पत्र सर्वेक्षण से प्राप्त हुए हैं जिसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई है ।

सरक्षरदासजी, केसरदासजी, मानदासजी, सबलदासजी नेतीदासजी, केनदासदी, मुकनदासजी, धनदासजी, हीर-

दासजी, खीवदासजी, विरमदासजी, बीजलदासजी, नेन-दासजी, ततुदासजी, मोडदासजी, मांगूदासजी, बाबूदासजी बगतदासजी, भूण्डादास, कालूदास, चतुरदासजी, तुलसी-दासजी, पुनमदासजी, भोलदासजी, किशोरदास, परमा-नन्द, लक्ष्मणदास, अनन्तदेव, मांगूदास, नेमीदास, कैलाश लक्ष्मण, कुलदीप, हेमन्त, किशोर, चेतनदास, देवीदास ईश्वरदास, सबलदासजी, हेमदासजी, मदरूपदासजी नाथूदासजी, वीरमदासजी, टीकमदासजी

बाबो भली करे

श्री गुसांई आश्रम समिति के संस्थापक रामचन्द्रदास लूणा कामड़ आदि निवासी गाँव बिलंगा त. सूजानगढ जिला-चूरु राजस्थान।

आप का जन्म संवत् 1994 चेत्र वदी चौथ को श्रीमती माता भंवरीदेवी व पिता श्री चौथूदासजी लूणा के घर हुआ आप बचपन काल से ही सन्त दर्शन व सत्संग प्रेमी रहे। जन सेवा करने की जन्म से स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है। प्राथमिक विद्या अध्ययन बिलंगा के पास गाँव सारोटिया में किया।

शादी करने की इच्छा न होने पर भी पिताजी ने संस्कार योग से बुद्धि देवी के साथ विवाह ग्यारह साल की आयु में कर दिया । विवाह पश्चात् वैराग्य के कारण घर छोड़कर चले गये थे । उस समय में सम्पूर्ण भारत, चारों धाम व तीर्थ यात्रा, देव दर्शन व सन्तो की सत्संग की । तीन साल के बाद माताजी के आदेशानुसार गृहस्थी में प्रवेश किया ।

आपने देश विदेश में सत्संग व प्रवचन द्वारा मानव जीवनोत्थान किया तथा निस्वार्थ सेवा की ।

आपका बचपन से ही रामदेवरा में आना-जाना रहा । संवत् 2021 में रामदेवरा के रामसरोवर पाल वर आप ने सत्संग करके शयन किया । श्री रामदेवजी बाबा ने दर्शन दिये और जगाया और कहा कि अब तुम यहाँ रह करके जन सेवा करो । मैं तेरे को किसी प्रकार की कमी नही रहने दूँगा । जितने तू लगायेगा उससे दुगुना आयेगा फिर भी वे नींद में सो गये । इतने में हरजीभाटी ने आवाज लगाई कि बाबो भली करे उन्होंने कहा कि क्या भली करे तब हरजीभाटी ने कहा कि बाबो रेख में मेख मार गया उन्होंने कहा कहाँ ? आपके मुख में बाये पांच नम्बर दाँत में देखो ऐसा कहते ही उन्होंने सामने देखा तो

तो हरजीभाटी अदृश्य हो गये । रामसागर में स्नान करके बाहर निकले तथा बाबें की समाधि का दर्शन किया उस समय मन्दिर में मोती महाराज छंगाणी पूजारी थे उन्होंने कहा कि सभी लोग सामने चूंप लगाते हैं । आपने छिपे हुए दाँत में चूंप कैसे लगाई । उन्होंने आईने में देखा तो पांच सम्बर दाँत में सोने की मेख लगी है । उसी दिन से श्री रामदेवजी के वंशज श्री गादीपती राव रिड़मलसिंह के दर्शन किये और प्रार्थना कि अब में यहाँ आपके रामदेवरा में ही रहना चाहता हूँ । रावजी साह ने फरमाया कि बहुत अच्छी बात है । सेवा करते रहो । फिर रावजी की आज्ञा पाकर राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश उड़ीसा, बंगाल, आसाम एवं नेपाल यात्रा की । तथा रामदेवरा में संवत् 2025 मे जब रावजीसा सरपंच थे तब रावजी से जमीन लेकर जगह-जगह प्याऊँए लगाई फिर आप कलकत्ते गये वहाँ श्री सत्यनारायणजी अग्रवाल भूत तुला पट्टी 115 कलकत्ता 7 में सेठजी से भेट हुई तथा रामदेवजी का भजन सुनकर सेठजी बहुत ही प्रभावित हुए और कहा कि आप रामदेवरा में श्री श्री रामदेव धर्मशाला सम्भालो । वे इस धर्मशाला की कई वर्षो तक व्यवस्था करते रहे । सेठजी सज्जन एवं सत्संगी थे उन्होंने हरे राम हरे राम राम राम हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण

कृष्ण कृष्ण हरे हरे । इसका आप प्रचार करे । इस मंत्र को धर्मशाला के चारों और लिखवा दिया । फिर आपने धर्मशाला के सामने एक प्लोट खरीदा । जिसमें श्री भोखमचन्दजी सिंघवी डीडवाना वालों ने न्याऊँ व बाबो भली करे धर्मशाला का निर्माण करवाया । संवत् 2040 में श्री सोहनदासजी कामड़ ने कर्माबाई को गाँव में सत्संग करवाई जिस में डॉ. पूर्णानन्द पूर्ण पंथी का सत्संग किया मैं जाति का तो कामड़ हूँ परन्तु गुसाई जी के मन्दिर का पूजारी हो नेके नाते मुझे गुसाई कहते हैं । इसलिए उन्होंने गुसांई पदवी दी । इस कारण में अपने नाम के आगे गुसांई शब्द का प्रयोग करता हूँ । सम्वत् 2046 में डॉ. पूर्णानन्दजी ने रामदेवरा में भादवा सुदी एकादशी को सत्संग की जिसमे सभी कामड़ समाज के सन्त आये थे । उसके बाद गुसाईजी कामड़ समाज का सम्मेलन किया । जिसमें सभी कामड़ समाज ने डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपंथी को कामड़ समाज के जगत् गुरु का प्रशंसा पत्र दिया । डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपंथी ने कहा कि आपका जल सेवा तो सराहनीय है परन्तु यहाँ स्थाई अन्नक्षेत्र होना चाहिये । रामचन्द्रजी ने तुरन्त हां कर लिया और हमेशा के लिए भोजन सेवा प्रारंभ कर दी । उसके बाद श्री भंवरलालजी सुराणा नागौर से बाबा के दर्शनार्थ आये तथा गुसाईजी ने

प्रेरणा की तो भोजनशाला का राम रसोवड़ा बना के तैयार कर दिया उसके बाद फिर डॉ. पूर्णानन्द का सत्संग हुआ तो 7 श्री हरिओम अन्नक्षेत्र सोसायटी जोधपुर एवं रामदेवरा में स्थापना की । जो वर्तमान में भी हजारों साधु सन्त एवं भगत अतिथि पहले भजन व भोजन करते हैं । वर्तमान में राजस्थान में 24 प्याएँ दो जगह अन्नक्षेत्र तथा तीन धर्मशालाएँ रामदेवरा में विद्यमान हैं ।

पुस्तक प्रकाशन मे दान दाताओ की सूची

1 5001 श्रीमान रामचन्द्र गूसांई, रामदेवरा रुणिचा जि. जैसलमेर

2 5151 श्रीमान डॉ. पूर्णानन्द पूर्णपन्थी, बीजल आश्रम जोधपुर

3 5000 श्रीमान मूलदास कल्याणी नि. बर जिला-पाली

4 1151 श्रीमान राजूदासजी नि. सांगवा (जवाहर-नगर भीलवाड़)

5 1101 श्रीमान ओमप्रकाश पंवार नि. झडवासा जि. अजमेर

6 1000 श्रीमान कानदास ब्रह्मण्या नि. देरांठ जि. अजमेर

7 1000 श्रीमान ओमप्रकाश कामड़ नि. केकडी जि. अजमेर

8 1000 श्रीमान कृष्णानन्दजी नि. बस्सीमादाजी जि. राजसमन्द

9 1051 श्रीमान बस्तीरामजी नि. राम मौहल्ला जोधपुर

10 1001 श्रीमान परमानन्दजी नि. मुसालिया जिला पाली

11 1001 श्रीमान शिवदासजी नि. चन्देरिया रामदेवजी का जि. चित्तौडगढ

12 1100 श्रीमति जसौदादेवी नि. आसोप जि. जोधपुर

13 1000 श्रीमाह मेवादासजी नि. लस्साणी जिला अजमेर

14 1000 श्रीमान भंवरलालजी गांरल S/o कानदास नि. चुवा जिला नागौर

15 561 श्रीमान पृथ्वीदास नि. केलवा जि. राजसमन्द

16 551 श्री माधवदास नि. खेड़ी मौहल्ला नीमच

17 551 श्री भूरदासजी नि. बाली जिला पाली

18 550 श्री बीरमदासजी नि. पुष्कर जिला अजमेर

19 551 श्री बालदासजी नि. निम्बोल तह. जैतारर जिला पाली

20 550 श्री शंकरदासजी नि. रूपाथल जिला-नागौर
21 551 श्री चन्द्रदासजी नि. बोरावड़ जिला-नागौर
22 551 श्री भंवरदासजी नि. मोडी जिला-नागौर
23 550 श्री भभूतदासजी नि. गन्टिया जिला-नागौर
24 551 श्री चैनदासजी नि. जुन्जाला जिला-नागौर
25 501 श्री सूरजमलजी सोढा नि. सिरोज जि. अजमेर
26 501 श्री प्रभूदासजी नि. बायला जिला चुरु
27 501 श्री चन्द्रदास नि. बड़गांव जिला अजमेर
28 551 श्री भोलदास नि. मुसालिया जिला पाली
29 501 श्री नेमीचन्द नि. पाली
30 501 श्री अचलदासजी A-172 सर्वोदय नगर पाली
31 501 श्री बाबूदासजी नि. पिपलिया कला जि. पाली
32 500 श्री नवलदासजी नि. अलखजी का अडाणा
जि. चित्तौड़गढ
33 500 श्री बंशीदासजी नि. सांवता जि. चितौडगढ
34 551 श्री चन्द्रदासजी नि. ममाणा जिला-जयपुर
35 500 श्री भवानीदासजी नि. हरणी महादेव
जिला भीलवाड़ा
36 500 श्री नृसिंहदासजी नि. पाचुण्डा कला
जिला पाली

37 501 श्री मादुदासजी नि. बस्सी जि. चित्तौड़गढ
38 501 श्री भंवरदासजी नि. डिकेन नीमच (मप्र)
39 501 श्री मोतीदासजी नि. सरियारी वाया नीमच
40 501 श्री कल्याणजी नि. आरज्या जिला भीलवाडा
41 501 श्री भंवरदास नि. आरज्या जिला भीलवाडा
42 301 श्री उम्मेददासजी नि. पाली
43 251 श्री नवलदासजी नि. ईनाणा जिला नागौर
44 251 श्री लक्ष्मणदासजी नि. डांगावास
जिला नागौर
45 250 श्री गरीबदास नि. कचरास जिला नागौर
46 250 श्री धनदास नि. बड़ायली जिला नागौर
47 251 श्री रामचन्ददास नि. रास जिला पाली
48 251 श्री प्रेमनाथ नि. मन्दसौर खीलचीपुरा
49 251 श्री चैनदास नि. सलूम्बर जिला उदयपुर
50 200 श्री मांगुदास नि. सगतपुरा जिला भीलवाड़ा
51 201 श्री गोपीदास नि. सांवता जिला चित्तौड़गढ
52 200 श्री रुघदासजी नि. सोयला जिला जोधपुर
53 101 श्री मेवादासजी नि. लस्साणी जिला अजमेर
54 121 श्री गोरुदासजी नि. सांकरड़ा जिला राजसमन्द
55 151 श्री लटूदासजी नि. केलवा जिला राजसमन्द
56 151 श्री पीरुदासजी नि. केलवा जिला राजसमन्द

57 101 श्री उदयदास नि. हीराजी की खेड़ी
58 101 श्री ऊँकारदास नि. हमीरगढ जिला भीलवाड़ा
59 101 श्री मोहनदास नि. सरवाणिया मसाणिया नीमच
60 101 श्री बालकदास नि. अठाणा वाया जावद नीमच
61 101 श्री घीसुदासजी नि. गादोला निम्बहिड़ा
62 101 श्री लक्ष्मणनाथ नि. पोटलां भीलवाड़ा
63 101 श्री भगवानदास नि. कूंतवास उदयपुर
64 101 श्री रामदास नि. गासला खेड़ा (भादसोड़ा)
65 101 श्री शंकरदास नि. टू जिला उदयपुर
66 101 श्री चैनदास नि. डूंगला वाया चित्तोड़
67 101 श्री लक्ष्मणदास नि. कुरावड़ उदयपुर
68 101 श्री मांगुदास नि. काकरवा चित्तोड़गढ
69 101 श्री कालूदास नि. दाता चितौड़गढ
70 101 श्री मांगुदास नि. गादोला चितौड़गढ
71 101 श्री भूरदास नि. गोड़च उदयपुर
72 101 श्री हीरादास नि सरवाणिया महाराज नीमच
73 101 श्री रामनाथ नि. पोटला गंगापुर
74 51 श्री अचलदास नि. ब्यावर
75 501 श्री गिरिधारीदास नि. कचरास, जि. नागौर

75 51 श्री बंशीदास नि. सुरपुरा जोधपुर
76 51 श्री भवानीदासजी नि हरणी महादेव भीलवाड़ा
77 51 श्री मांगुदासजी नि. पालचा चित्तौड़गढ

जीवनी

श्री चेनदासजी S/o श्री शिवनाथदासजी जन्म संवत् 1983 गांव रूपाथल में हुआ तथा 2051 में गांव जुंजाला बसाया और इनके पांच लड़के क्रमश 1 छोटूदास 2 गुणेशदास 3 कैलाश 4 मदन 5 बजरंग हैं । इन्होंने सामाजिक कार्यों में जुंजाला में काफी कार्य किस तथा आजीवन समाज उत्थान हेतु जुड़े रहे ।

समाज विकास हेतु प्रेरक बातें

1 सूर्य निरन्तर चलता रहता है उसके साथ समय भी व्यतीत होता जाता है, बीता हुआ समय वापस नहीं आता हैं । जीवन में सफल होने के लिए व्यक्ति को सदैव यह सोचना चाहिए की उसे कल क्या करना है इसके लिए वह बीते हुए कल से शिक्षा ले सकता है ।

2 सम्पन्न होकर मरने की अपेक्षा सम्पन्न जीवन व्यतीत करना कही अधिक श्रेष्ठ है ।

3 मानव एक सामाजिक प्राणी है उसके कर्म केवल उसको ही प्रभावित नहीं करते बल्कि वे उस वृहद् समाज को भी प्रभावित करते हैं जिसका वह एक अंग होता है।

4 उन्नत होना और आगे बढना प्रत्येक जीवन का यही शाश्वत एवं सर्वव्यापी नियम है। पवित्र साधनों द्वारा ही पवित्र लक्ष्य की प्राप्त की जा सकती है क्यों कि क्रिया के अनुरूप प्रतिक्रिया अथवा कर्म के अनुसार फल का सिद्धान्त अमोघ है। एक प्रसिद्ध कहावत है "Thri is always room at the top" अर्थात् सबसे ऊपर चोटी पर सदैव स्थान रहता है नीचे भीड़ के कारण स्थानाभाव हो सकता है, परन्तु ऊपर तो अनन्त आकाश है दीवार कितनी भी ऊँची क्यों न हो उसको अधिक ऊँचा करने की गुन्जाइश हमेशा मौजूद रहती है। सर्वश्रेष्ट अंक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी चयन अवश्यम्भावी है। भीड कितनी भी अधिक क्यों न हो उच्चतम अधिकारी की कुर्सी के लिए स्थान निकल ही आता है। चोटी पर पहूँचने के लिए पर्वत के दुर्गम पथ को पार करना ही पड़ता है।

5 सब लोग सर्वश्रेष्ट वस्तु को देखना व पाना चाहते है स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि वर्गाकार पत्थर सड़क पर पड़ा नही रह सकता अतः अपने को सर्व-श्रेष्ट बनाने का प्रयास करे ।

6 अवसर बुद्धिमान के पक्ष मे लड़ता है और बुद्धिमान मनुष्य को जितने अवसर मिलते है उनने अधिक वह स्वयं बना लेता है अतः एसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा दरवाजा खटखटायेगा । परीक्षा के बिना किसी मनुष्य को विद्या की सिद्धि नही होती है ।

7 आपके सम्मुख यह मानदण्ड प्रतिपल रहना चाहिए कि आप जिस आसन पर बैठे हुए हैं वह आपके कारण ऊपर की ओर उठ रहा है या नही आपके कार्य से आपके पद की गरिमा बढनी चाहिए ।

8 कागा काको धन हरे कोयल काको देय
मीठी वाणी बोल के, जग अपनो कर लेय
जीभरिया लड़ बाउरी, कह गई सरग पाताल
आपुनि तो भीतर गई, जूती खात कपाल

9 कभी मत कहो कि मै मर जाऊँ उपनिषद् का यह

वाक्य भी 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् मुझे अधकार से प्रकाश की और ले चलो यही प्रेरणा देता है कि अंधकार के सामने पराजय स्वीकार मत करो' हाथ पर हाथ रखकर मत बैठो, अदृश्य प्रकाश तुम्हारी सहायता भी करेगा, तुम्हारा मार्गदर्शन भी करेगा ।

10 स्वामी विवेकानन्द ने कहा है लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो, हर समय उसी का चिन्तन करो उसी का स्वप्न देखो औप उसी के सहारे जीवित रहो ।

11 हम केवल अपने स्थूल शरीर में अपनी चेतना को केन्द्रित रखते हैं और वासनाओं की संतुष्टि के लिए भाँति भाँति के संवेदनों की भागदौड़ में जीवन व्यतीत करते हैं फलतः हमारे पास अपनी वासनाओं की संतुष्टि के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य के लिए समय ही नही रहता ।

12 मन समस्त विकारों का उत्पत्ति स्थान है और बुद्धि समस्त विकारों का बोध कराती है अतः मनुष्यों को वह आचरण करना चाहिए जो मन में कम से कम

विकार उत्पन्न होने दे और हमारी बुद्धि हमें उनके प्रति सावधान करती रहे ।

13 आत्म विश्वास बढाने का ढंग यह है कि तुम वह कार्य करो जिसे करते हुए तुम डरते हो. इस तरह ज्यों ज्यों तुम्हें सफलता मिलती जायेगी तुम्हारा आत्म विश्वास बढता जायेगा । जिस व्यक्ति में आत्म विश्वास नहीं है वह शक्तिमान होकर भी कायर है और पंडित होकर भी मूर्ख है क्यों कि आत्म विश्वास ही वह रसायन है जो मनुष्य की प्रवृतियों को उद्वेलित करती है और उनकी निकाई को निखारती है ।

14 जीवन एक लहर है जिसका निर्माण चोटियों और घाटियों द्वारा होता है, लहर का आगे बढना सुनिश्चित रहता है, जो व्यक्ति ऊँचाइयों को देख कर घबड़ा जाय और नीचाइयों को देखकर निराश हो जाय, वह लहर पर चढकर किस प्रकार आगे की और बढेगा ? हम वही और वैसे ही है जैसा और जो कुछ अपने आपको हम अपने मन मे समझते है ।

15 घुड़ दौड़ की लगी हुई थी बाजी एक दिन कोई अपनी अरबी, कोई अपमी तुर्की पर सवार था, जिसने ढील छोड़ दी, वह रह गया इधर और जिसने एड़ मार दी, वह खंदक के पार था

16 स्वार्थ नरक की सृष्टि करता है और परमार्थ अथवा पारस्परिक सहयोग स्वर्ग की सृष्टि करता है ।

17 जो व्यक्ति यह सोचता कि कोई अन्य व्यक्ति उसके लिए काम करेगा, वह अपने उद्देश्य को कभी प्राप्त नहो कर सकेगा ।

18 जनक याज्ञवल्क्य से पूछते हैं पुरुष किस ज्योति के आश्रय से उबरता है, भटकता नहीं, कर्म करता है याज्ञवल्क्य उत्तर देते है "सूर्य की ज्योति से" जनक आगे पूछते है "यदि सूर्य अस्त हो जाय तो" उत्तर मिलता है "चन्द्र की ज्योति से" जनक पूछते हैं यदि सूर्य और चन्द्र दोनो अस्त हों तो ? याज्ञवल्क्य उत्तर देते है ' अग्नि के आश्रय से" जनक फिर पूछते है "अग्नि भी शान्त हो जाय तो" अब याज्ञवल्क्य का उत्तर एकदम संकेत पूर्ण हो जाता है "तक पुरुष वाक् का आश्रय लेता है अंधकार में एक दूसरे को

पुकार कर, परन्तु यह संवाद यही समाप्त नही हो जाता है, जनक फिर प्रश्न करते हैं यदि वाक् भी शान्त हो जाय तो ? याज्ञवल्क्य आनन्दपूर्ण मुद्रा में उत्तर देते हैं "तब पुरुष आत्मा की शरण लेगा, आत्म ज्यौति के आश्रय से संकट से उबरेगा" ।

19 विचारक हैनरिक इब्सन ने कहा है 'Whats a man first daty ? The answer is brief to be himself' अर्थात् मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य क्या है ? उत्तर सीधा और संक्षिप्त है वह अपने वास्तविक रूप को मनुष्य रुप को पहचाने परन्तु वह ऐसा क्यों करे क्योकि वह प्रकृति की सर्वोतम सृष्टि है, मनुष्य को बनाने के बाद परमात्मा अपने कृतित्व की पूर्ति समझ ली थी मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने निर्माण स्तर को बनाए रखे । मनुष्य होने का दावा पूरा करे तथा कोई ऐसा कार्य न करे जिसके कारण उसको बनाने वाले को अपने कृतित्व पर लज्जित या निराश होना पड़े ।

20 चेतना विकास के सन्दर्भ मे मनोवैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि चेतना पत्थर मे सोती है, वनस्पति मे

जागती है, और मनुष्य में चिन्तन करती है अतः मनुष्य का प्रथम लक्षण चिन्तन है, जो मनन करे वह मनुष्य है अतएव प्रत्येक कार्य को सोच विचार कर करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए जो ऐसा करता है वही मनुष्य है। मनुष्य अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार बना सकने की सामर्थ्य लेकर जन्म लेता है।

21 मनुष्य की अन्तर्निहित शक्ति कहती है कि तुम परिस्थितियों के दास मत बनो, तुम परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाओ परिस्थितियाँ मनुष्य का निर्माण नहीं करती है, बल्कि मनुष्य परिस्थितियों का निर्माण करता है। एक दास भी स्वतंत्र व्यक्ति हो सकता है और एक बादशाह भी एक गुलाम हो सकता है स्वतंत्रता और दासता हमारी मानसिकता की देन होती है परिस्थितियाँ तो हमारे कृतित्व का परिणाम होती हैं हम उनको चाहे जैसा बना दें शिव अथवा अशिव भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डां. सर्व पल्ली राधाकृष्णन ने लिखा है कि मानव का दानव बन जाना उसकी पराजय है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है, और मानव का मानव होना उसकी विजय है।

22 हम यदि किसी को कोई हानि न करे तो प्रकारान्तर से हम भी समाज की सेवा कर सकते हैं तटस्थ खड़े रहने वाले व्यक्ति भी समाज की सेवा करते है क्यों-कि वे किसी के मार्ग में बाधा तो उत्पन्न नही करते हैं ।

23 प्रकृति का यह नियम है कि उसमें कही भी रिक्तता के लिए स्थान नही है आप जैसे ही कुछ देते हैं या नि अपना कोई कोना खाली करते है वैसे ही प्रकृति की सम्पति उस रिक्त स्थान को भरने के लिए सक्रिय हो जाती है कबीरदासजी कहते हैं–

ऋतु बसन्त जाचक भया, हरषि दिया द्रुम पात ।
ताते नव पल्लव भया, दिया दूर नही जात ।।

24 महात्मा गांधी ने एक बार ठीक कहा था कि कुपथ्य का उपचार हो सकता है परन्तु कुविचारो का उपचार सम्भव नही है क्योंकि वे आत्मा को दूषित कर देते हैं ।

25 श्रेष्ठ विचारों के दो स्त्रोत हैं-पुस्तके तथा सत्संग

26 ये सात कर्म पाप माने गये हैं-

जुआ, मांस, शराब, वैश्या, चोरी परधन पर दारा ।
ये सत कर्म करे अपराधी, भोगे नरक अपारा ।।

27 धर्म के दश लक्षण-

पहले तुम धीरज को धारो, दूजे सबके वचन संहारो
तीजे मन अपने को मारो, चौथे तज चौरी का पैसा
पाँचवे शुद्ध रहो हमेशा, छठे इन्द्रियां वश मे करना
सप्तम चित्त विचार मे धरना, अष्ठम विद्या मन
मे भरना
नवे सत को धारण कीजे, दशवे क्रोध सब दूर कर दीजे
जो तुम मनुज कहाते, दश चिन्ह धर्म के भाई
महाराज मनु बताते ।

28 नवधा भक्ति :-

प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा, दूजी रति मम कथा
प्रसंगा गुरु पद पंकज सेवा तीसरी भक्ति अमान
चौथी भक्ति मम गुण गान, करई कपर तज गान मंत्र
जाप मम दृढ विश्वासा, पंचम भजन जो वेद प्रकासा
छठे दम शील व्रत बहु कर्मा, निरत निरन्तर सज्जन
धर्मा सप्तम सभ मोह मय जग देखा, मोते अधिक
संत कर लेखा अष्ठम यथा लाभ संतोषा, सप्नेहु नहीं
दीखे पर दोषा नावे सरल सब वन छल हीना, मम

भरोस हिय हरष न दीना नो में एकहु जिनके होई नारी पुरुष चराचर जोई सो अतिसय प्रिय भामिन मोरे, सकल प्रकार भक्ति दृढ तोरे योगी वृद्ध गति दुलर्भ जोई सोकहु आज सुलभ भई सोई

29 मन्दिर क्यो त्यागे ओर भागे क्यों गिरिवर को हरी जी को दूर जान कल्प मत बावरे सब साधन बतायो ओर चार वेद गायो अपन को आप देख अंतर लौ लाव रे ब्रह्म ज्ञान हिय धारो बालते का खोज करो माया अज्ञान हरो, आपा बिसरावरे यह आप धाप कहां पुण्य कहां पाप कहा चरणदास तू निश्चल घर आव रे।

30 बातन से देव ओर दानव आधीन होत बातन से भूत ओर साकिनी डरात है बातन से पापी ओर निपायी होत बातन से बातन से पंडित और मूरख लखात है बातन से चतुर लोग लाखन कमा लेत है बातन के हेरफेर को सुघड़ नर जान जात है कहत है महेन्दर नाथ सुनहु सुजान नर मनुष्य के गात बीच बात ही करामात हैं।

31 मंदिर तो वही जहां देही मे तू बास करे याते उत्तम

नहीं ओर कोई दूजो ठिकानो है । आसन तो वही जो उखड़े नहीं तीनों काल सोवस जगत सपनेहु ज्यों को त्यों जमानो है माला तो वही जो गुप्त फिरे दिन और रात काठ सूत फेरबा को तो झगड़ो मन मानो है देव तो वही जाको तू कहे आत्म देव श्रुति ने भी परम देव याही को बखानो है तीर्थ तो वही जां में तेरा अर्थ सिद्ध होय गुरू के सिवाय सो तो कितहु न पायो हैं अर्थ तो वही ज्यामे माया को न लेस हो खोजत खोजत आत्मा ही जान पायो हैं गुरू तो वही जो मिथ्या भ्रम दूर करे ऐसो शब्द टेर टेर के सुनायो है शब्द तो वही जो शब्द आदि वेदन को सृष्ठि को कारण तेहि सिद्ध ठहरायो है वृत तो वही जो वृति अन्तस को सगरो मल धोय धोय निर्मल कर दीनो है मल तो वही जो काम क्रोध मद मोंह लोभ को इन्हे अनात्म से आत्म भाव कीनो है अन्तस तो वही जामे देव को प्रतिबिम्ब रहे वाको नाही शुद्ध करे सो तो मति हीनो है प्रतिबिम्ब तो वही जो बिम्ब से न न्यारो कभी निर्भय जाको सूझी तिन उपाय बहु कीनो है ।

500 रुपये श्री मनोहरदासजी पंवार नि. पलासणी

पं. रामदास नि. ब्यावर

ब्यावर शाहपुरा मौहल्ला में आपकी प्रसिद्ध दरगाह व निवास स्थान है जिसके वर्तमान उत्तराधिकारी श्री बस्तीराम उर्फ नीलकण्ठ गीरीजी है इनके पास उपलब्ध प्राचीन स्टाम्प व दस्तावेज व लिखित साहित्य से ज्ञात होता है कि संवत 1907 में गजनेर से आकर नराणा मे सन्त दरियावजी के शिष्य नन्दगुरू के आपने उपदेश लिए । अन्य तंवर गौत्र के राजपूत थे जो कि बाद कामड़ भेष का सन्यास लेकर साधु हुए । ब्यावर में माली राजपूत महाजन वर्ग के कई व्यक्ति आपके शिष्य हुए । पं. रामलालजी चमत्कारी सिद्ध पुरूष थे । इनकी झोली में में सखिया रखा हुआ था जों इनके शिष्य गणेश माली की पत्नि ने प्रसाद के भरोसे खा लिया तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने पं. रामलालजी को इस आरोप मे जेल में डाल दिया तब जेल में ही पंडितजी ने अपने अराध्य अलख धणी को याद किया तब वह स्त्री जीवित हो उटी व अपने किये की क्षमा याचना हेतु महाराज के पास आने लगी उधर जेल के ताले स्वतः टूट गये जिससे घबराकर जेलर ने भी महाराज से क्षमा याचना की व जैलर ने महाराज को जुलुस व बैण्ड बाजो के समीप ही महाराज का आसण

किशनदासजी कामड़ नि. टूंकला नागौर

नागौर जिले के टूंकला गांव में प्राचीन काल मे किशनदासजी कामड़ चमत्कारी सिद्ध पुरूष हुए इनके बारे मे एक दोहा प्रचलित है

किशनो कामड़ टूंकले खीची गूलर गांव।
आगोलाई को बाणियों तीनो एक ही नाम ।।

कहते हैं किशना नाम के तीन साथी तीन गांवो मे रहते थे टूंकला के ठाकुर साहब को पर्चा दिखाया, ठाकुर साहब ने किशनदासजी को रावले मे बुलाया तब वे अपनी बैल-गाड़ी से सतसंग करने दूसरे गांव जा रहे थे तो राजा के सिपाहियो ने बैलो को खोलकर भगा दिया तब सन्त किशनदास कामड़ ने अपने चटिये से बैलगाडी को आगे चलने का हुक्म दिया तब बैलगाडी बिना बैलों के ही चलने लगी यह देखकर सिपाही डर गये और राजा को जाकर सूचना दी। तब राजा ने सन्त से क्षमा याचना की व वहां पर इनकी दरगाह बनवाई।

जिनमें सन्त किशनदास कामड़ का इतना प्रभाव बढा कि लोग टूँकला गाँव का परिचय किशना कामड़ के साथ बताने लगे जिससे वहाँ के ठाकुर को ईर्ष्या हुई।

सन्त भगवानदासजी ग्राम दांतरी पोस्ट बोराड़ा

ग्राम दांतरी पोस्ट बोराड़ा जिला अजमेर में कामड़ सम्प्रदाय के रोहलण गौत्र में महान सन्त हुए । ये विष विद्या के सिद्ध सन्त थे । किसी भी प्रकार का जहरीला सांप काटने पर लोग दूर दूर से इनके पास आते थे जिनको ये बचा लेते थे । बाद में वैष्णव साधु ने इनसे यह विद्या सीख कर इनका बहुत मान बढाया । भवान दासजी गृहस्थी होते हुए भी रमते योगी थे । इनकी समाधि बून्दी के बड़े बाग मे बतायी जाती है । इनके वंश मे धूलदासजी हुए उनको लोग नरसी भगत कहते थे ये अपने चूल्हे चाकी कपड़े बर्तन तक प्रतिवर्ष पुष्कर सतसंग में सन्तो को भेंट कर तेदे थे ।

श्री चेतनदासजी कटारिया नि. पीसांगण (अजमेर)

वर्तमान मे तंत्र विद्या मे मशहूर कामड़ समाज के महाराज चेतनदासजी के पास दूर दूर से लोग प्रेत बाधा के निवारण हेतु आते हैं । दैवीय सिद्धी से हजारों लोगो को इन्होंने प्रेत बाधा से मुक्ति दिलाई है । इनके स्थान पर मंगलवार व शनिवार को दूर दूराज के यात्री आकर पीड़ा से मुक्ति पाते हैं । आपके सुपुत्र मांगीलालजी

चित्रकारी मे राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त है आपके हाथ की बनी हुई सुन्दर पेन्टिग देश विदेशों मे बिकती हैं।

इनके जाग (भाट) से प्राप्त जानकारीनुसार इनका वंश वृक्ष नख तंवर, क्षत्रिय वंश सांगाराणा का पुत्र सुरतसिंह उलके करणसिंह के जालमसिंह के बख्तसिंह के करणसिंह को रामदेवजा ने नाथा की मण्डी जिला नागौर में पर्चा दियो और कामड़ सन्त बनने को प्रेरित किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शिव पुराण, मनुस्मृति, स्कन्द पुराण, श्रीमद् भागवत
नाथ सम्प्रदाय ले. पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी
गोरखनाथ व कनफटा योगी ले. ब्रिग्स
भूली बिसरी परम्परा के पुजारी कामड़ ले. डा. डोमिनीक्यू शीलाखान जनगणना रिपोर्ट 1961
Cast end Tribes of Rajasthan ले. Dr S.S. Gehlot
शौध पत्रिका राज. साहित्य शौध संस्थान उदयपुर
बाबा रामदेव का इतिहास व साहित्य डा. मोनाराम
विश्नोई राजस्थान के लोक नृत्य डा. शकुन्तला बाफना
दैनिक नवज्योति दि. 25-1-87
राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन डा. सोहनदान चारण निवेदन पत्र उग्रास निवासी गणेशदास

भवानीदास कामद शब्द प्रमाण-ले. प्रतापदास
राजस्थानी सन्त शिरोमणी राणी रुपादे और मल्लीनाथ
ले. डा. डी. बी. क्षोर सागर
रामचरचा ले. सन्त रामचन्द्रजी आरज्या
बंशीदास भजन प्रकाश ले. बंशीदासजी नि. सांवता
वेदान्त दर्शन ले. डा. पूर्णानन्द पूर्णपन्थी
रामदेव लीला ले. रामचन्द्र गुसाई
मेघवंश इतिहास ले. स्वामी गोकुलदासजी
ताम्रपत्र मारवाड मुसालिया संवत 1314
ताम्रपत्र चन्देरिया चितौड़ सं. 1888
पट्टा नीमेड़ा जयपुर संवत 1914
पट्टा गेहलपुर किशनगढ संवत्
पिंगल व अध्यात्म ले. गुलाबनन्दजी जैतारण
विचार प्रबोध नाटक अर्थात् पिंगलसार ले. श्री बलरामजी
श्री बीजलदासजी
रामदेव अवतार चरित ले. किशनदास राही रतलाम
रामदेव का ब्यावला ले. मागुदासजी नि. नागोलाव
कामद ज्योति ले. बाबा मूलदास कल्याणी
कामड़ समाज प्रातीय सम्मेलन बर जुन्जाला, जोधपुर
मातृकुण्डिया पाचुण्डाकला से संग्रहीत कामड़ सन्तो से
व्यक्तिगत वार्ताएँ

युग क्रान्तिकारी कामड़ सन्त
प्रेरक बाबा मूलदास कल्याणी

भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विकास में यहाँ के ऋषि मुनियों व तपस्वियों की जो देन है उसके प्रति आज भी पूरा देश ही नहीं विश्व भी नत मस्तक होता है। अंधकार को मिटाने के लिए जैसे दीपक स्वयं जलकर रोशनी देता है ऐसे ही कुछ आत्माएँ संसार के दुःख मिटाने के लिए अज्ञान रूपी अन्धेरे के निवारण के लिए ही अवतरित होती है। बाबा मूलदास कल्याणी का जन्म भी कामड़ सन्त समुदाय में ऐसे समय में हुआ जब कामड़ सन्त समुदाय का अस्तित्व नष्ट हो रहा था। इसी समय कामड़ साहित्य विस्मरण के कगार पर खड़ा था व विपुल साहित्य लुप्त हो रहा था।

फ्रांस देश के शोधार्थी महिला डा. डोमिनीक्यू शीला खान ने अपने कामड़ समुदाय के शोध ग्रन्थ का नामकरण "भूली बिसरी परम्पराओं के पुजारी राजस्थान के कामड़"

तब महात्मा पिता उदयदासजी व माता खीमीदेवी के गर्भ से वि. सं. माह तिथि वार

के दिन अजमेर जिले के लस्साणी दोयम गांव में बाबाजी का जन्म हुआ । बाल्यकाल से ही पिताजी के साथ सत्संगों में जाया करते थे, जिससे कुछ सीखने की जिज्ञासा बनी रही । महात्मा उदयदासजी की लोग ज्ञान चर्चा में भगवान् का रुप मानते थे व उनको दूर दूर तक लोग सत्संगों में ले जाते थे । नाथ गोस्वामियों के बड़े मठों में शिवरात्री का जागरण भी परम्परा से कामड़ लोग करते थे । अतः हारण मठ में जम्मा जगाते थे । बाबा मूलदासजी ने भी बचपन में ही तन्दूरे पर गाने व नृत्य करने का प्रशिक्षण लोक कला मण्डल उदयपुर से ले लिया था जिसे देखकर लोग हँस हँसकर लोट पोट हो जाते थे ।

पिता उदयदासजी के परलोक गमन के बाद एक सत्संग में कुछ बुजुर्ग लोगों ने पूछा कि यह भजन किसने गाया है उत्तर मिला वो भगवान् उदयदास का लड़का मूलदास है । उसे बुलावो उन बुजुर्ग रावत लोगों ने कहा तेरापितातो भगवान् था तू तो कुछ भी नही हैं । तब मूलदास को ये शब्द लगे । मुझे जीवन में कुछ ज्ञान सीखना है । मनोरंजन तो मदारी व मसखरे भी कर देते हैं सन्तों की शोभा तो ज्ञान से है । अतः ज्ञान प्राप्ति के

लिए दृढ़ वैराग्य धारण कर सद्गुरु की खोज में घर से निकल पड़े। वर्षों तक चारधाम व देश के कोने कोने में भटकते रहे व दूर-दूर की यात्राएँ की, अन्त में गांव कोटड़ा (ब्यावर) में बाबा ज्ञाननाथजी के दर्शन हुए जो शरार से महाजन थे पर संन्यासी व सिद्ध पुरुष थे मूलदासजी को भी बाबा ज्ञाननाथजी के उपदेश से ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हुई जिससे आप वेदान्त हिंगलाज पूजा व ज्यौतिष के महान् ज्ञाता है व आपकी कई भविष्य वाणियाँ सत्य हुई है। बाबा मूलदासजी ने भी अपनी माता के आदेशानुसार 14 वर्ष की आयु में ग्राम ऊटड़ा के श्रीनाथ दास चौहान की पुत्री श्रीमति फूलीदेवी के साथ विवाह किया जिनके दो पुत्र व दो पुत्रियां हुई। जिनमें से वर्तमान में एक पुत्र श्री देवेन्द्रदास कल्याणी रेल्वे विभाग में कार्यरत है जिनका विवाह श्रीमती नर्बदादेवी के साथ हुआ जिनके हेमन्तदास व गिरीशदास दो पुत्र हुए स्वामी श्री हेमन्तदासजी का विवाह सेखावास के मांगूदासजी गहलोत की पुत्री के साथ हुआ। पुत्री दरियाव का विवाह ब्यावर निवासी बस्तीरामजी उर्फ निलकण्ठ गिरीजी के साथ हुआ एवं दूसरी पुत्री पुष्पा का विवाह पाचुण्डा कला के मिट्ठूदासजी के साथ हुआ है।

कामड़ सन्त समुदाय में बाबा मूलदासजी ब्रह्मनिष्ठ

ब्रह्म श्रोत्रिय महात्मा है आपका अपने सद्गुरु में दृढ़ विश्वास है इसी कारण से कामड़ सन्त समुदाय की एकता व जागृति जैसा अति कठिन कार्य आपके सकल्प से सम्पन्न हो पाया है आपने सन् 1990 में भीलवाड़ा में राजस्थान कामड़ समाज संस्थान का संगठन कर अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए समाज हित में अनेक कार्य किये जहां पण्डा, कामड़, साधु आदि वर्ग भेद होने के कारण समाज में एकता का अभाव था बाबा ने विभिन्न राज्य स्तरीय सम्मेलन करवा कर इन्हें एक मंच पर लाने, एक दूसरे को समझने व एक साथ उठने बैठने का प्रयास कर सफलता अर्जित की। व कामड़ सन्त समुदाय की आम सहमति से 15 वर्षो के अथक परिश्रम से अपने शिष्य ओमप्रकाश कामड़ द्वारा कामड़ जाति का इतिहास लेखन कार्य सम्पन्न करवाया। बाबा ने विविध सम्भागीय सम्मेलनों में कामड़ सन्त समुदाय के लोगों को प्रेरणा देकर आम सहमति व सहयोग लिया।

बाबा प्रति वर्ष अपने सदगुरु की पुण्य तिथि बैशाख बदी 2 को विशाल अध्यात्मिक सत्संग का ग्राम बर मे आयोजन करते हैं। जिसमें देश के कोने-कोने से विविध जातियों के भक्त व शिष्यगण, कामड़ समुदाय के सन्तगण इसमें शामिल होते हैं।

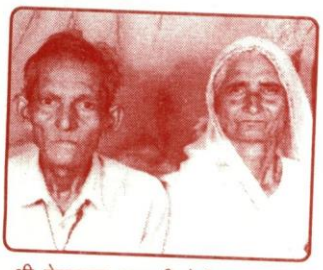

श्री मेवादास, कस्तूरी देवी लस्सानी

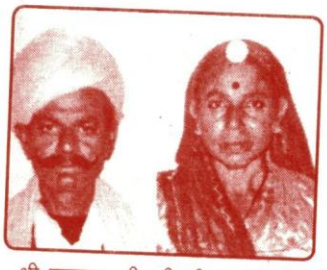

श्री कानदासजी, श्रीमती सुन्दर देवी

श्री गिरिधारीदास

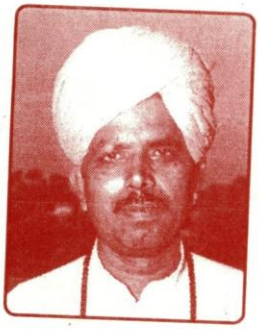

श्री शिवदासजी

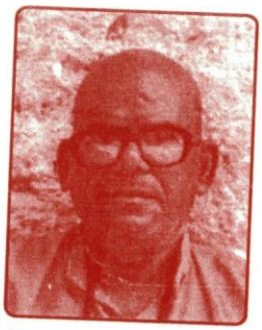

श्री मूलदासजी कल्याणी बर

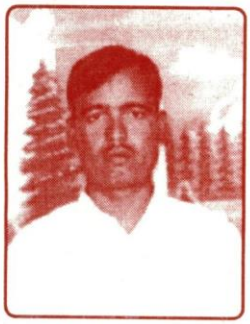

श्री ओमप्रकाश पंवार

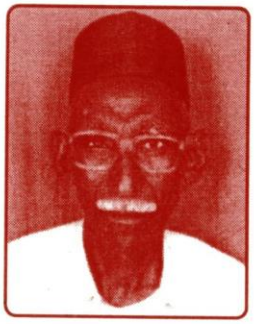

श्री बस्तीराम जोया, जोधपुर

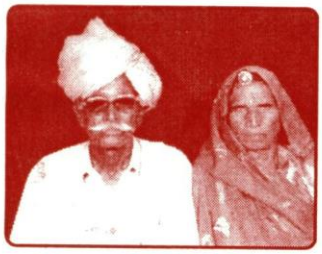

श्री कानदास व मोहनीदेवी देराठूं

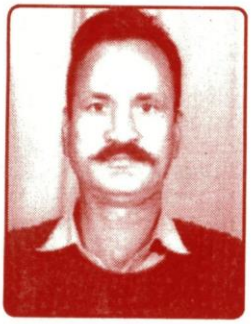

श्री राजूदास सांगवा

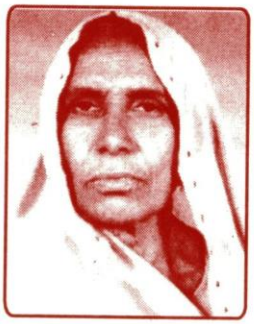

श्रीमती जशोदा आसोप

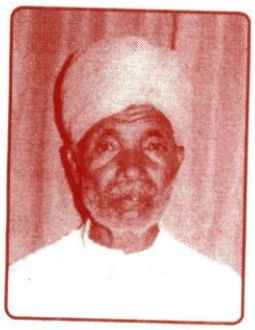

श्री भंवरदास

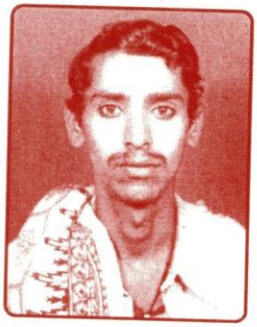

श्री मनोहरदास

श्री मादूदास, नीमच

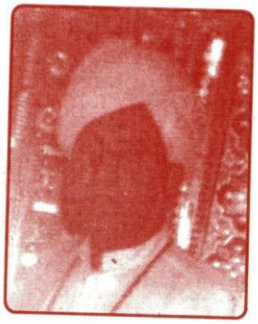

श्री भवानीदास, हिरणीमहादेव

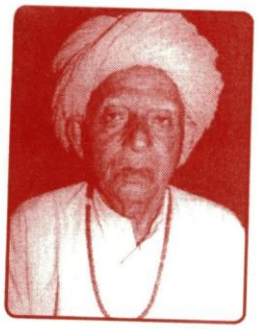

श्री बाबूदास

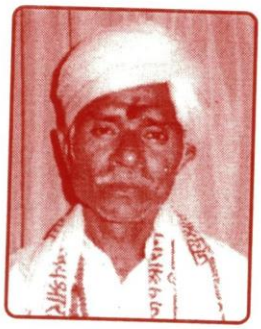

श्री माधुदास

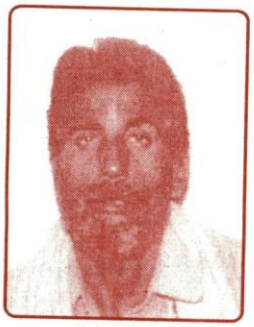

श्री पृथ्वीदास

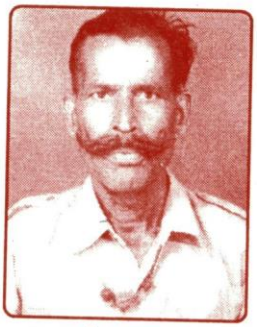

श्री अचलदास

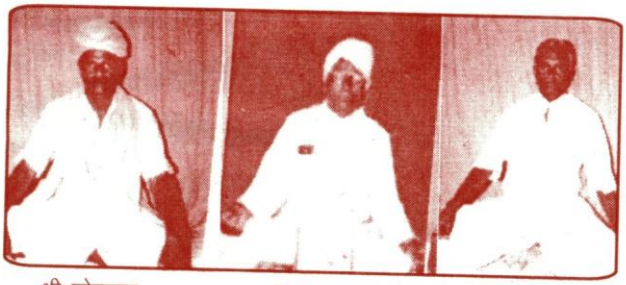

श्री छोटूदास श्री चेनदास श्री गणेशदास

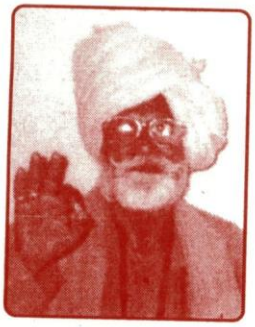

श्री चन्द्रदासजी

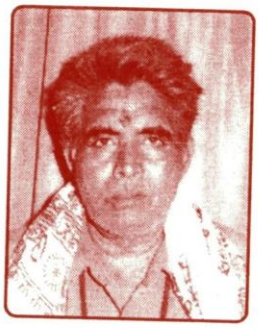

श्री भंवरदास

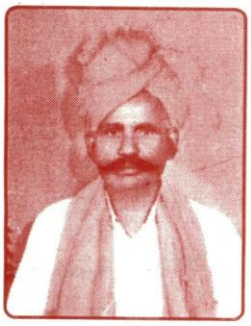

श्री चेतनदास

श्री दौलतदास जी तंवर

श्री दलदासजी तंवर

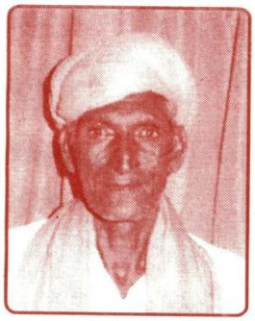

श्री रामदासजी तंवर

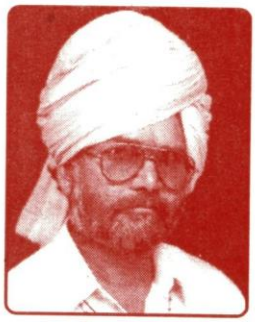

श्री धर्मेन्द्रदासजी राठौड़

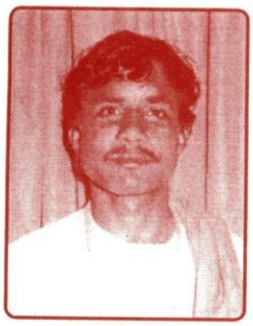

श्री जय विजयदास

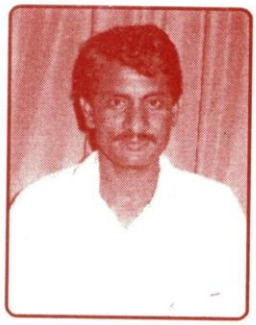

श्री मांगूदास भाटी

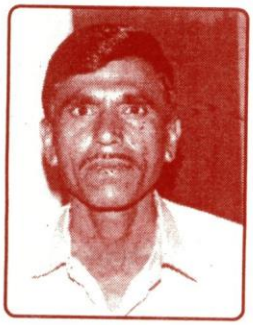

श्री नेमीचन्द

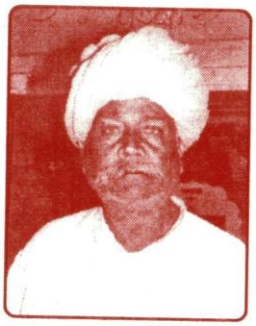

श्री रामदास

श्री गुलाबदास, श्री आदूदास

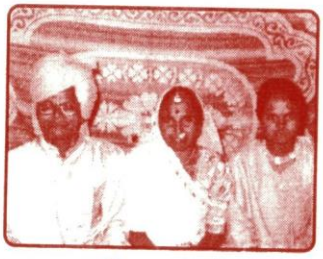

श्री बाबूदास जी

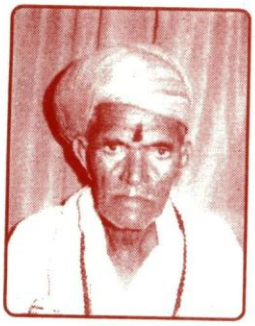

श्री नवलदास

श्री कल्याणदास

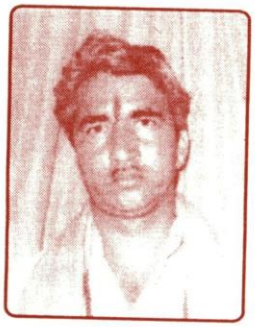

श्री प्रेमदास

श्री ज्ञानदास

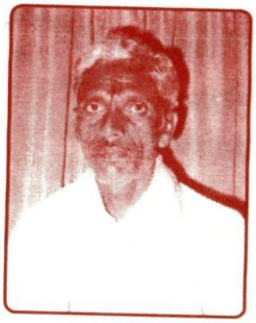

श्री प्रभूदासजी

श्री देवीदासजी

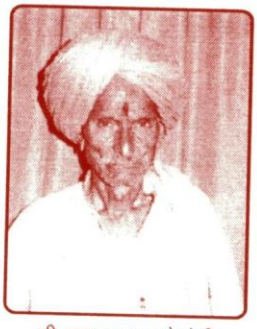

श्री जवाननाथ सोलंकी

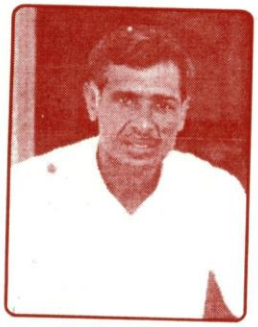

श्री मोहनदास जी

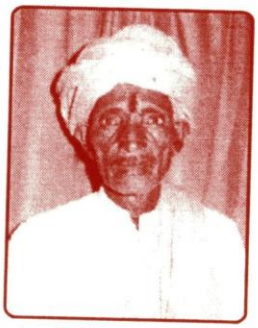

श्री हीरदासजी तंवर

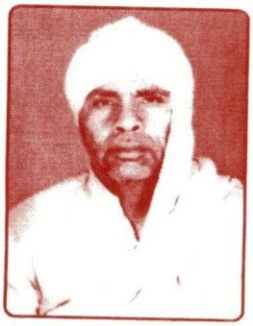

श्री बस्तीरामजी उर्फ नीलकण्ठगिरी

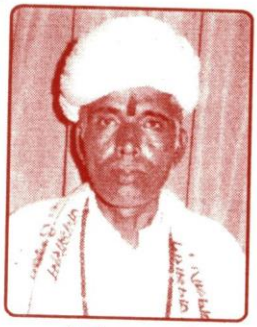

श्री मोहनदास जी

डॉ. मंगलदास

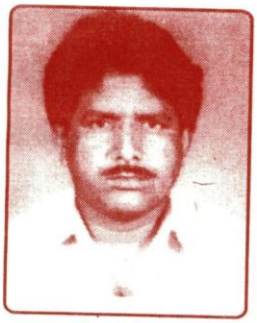

श्री खीयाँदास

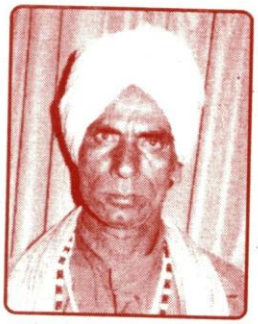

श्री सोहनदास जलवाणियां

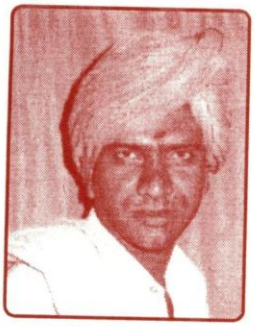

श्री ज्ञानदास जी

श्री मांगूदास चौहान

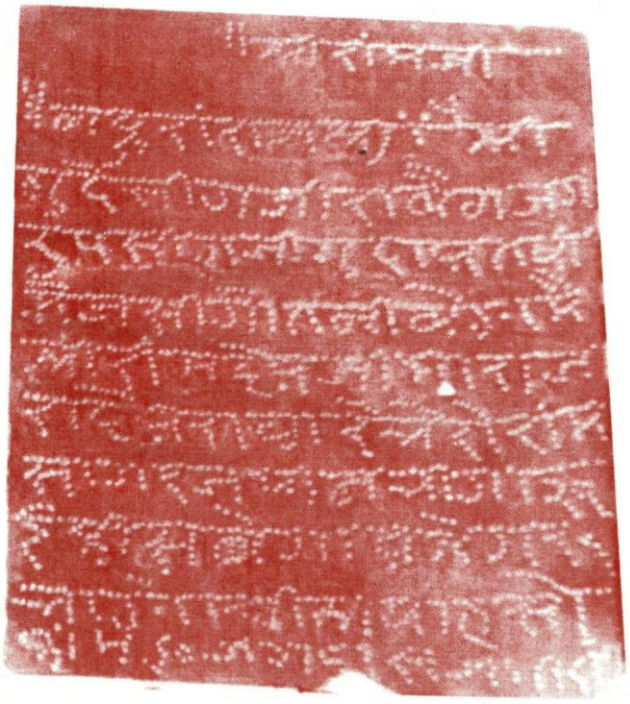

ठाकुर साहब जगरूपसिंह जी द्वारा
संवत् १६०१ में मूलदास जी के परिवार
को दिया गया ताम्र–पत्र।

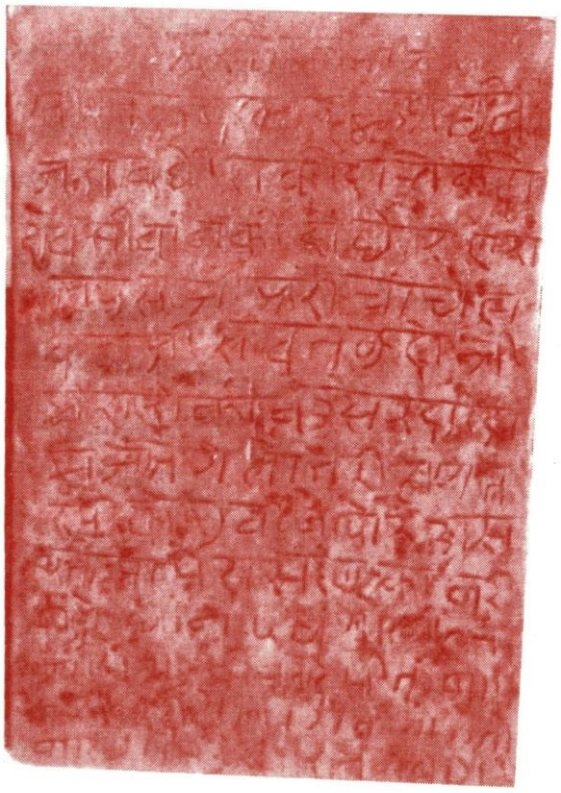

हारण के आपसजी श्री चंचलवन जी
द्वारा संवत् १३१४ मे मारवाड़ मुसालियां के कामड़
सन्तों को दिया गया ताम्र–पत्र।